# अर्पण पत्रिका.

## श्रीयुत शेठ चीमनलाल वाडीलालनी कंपनी

कलकत्ता.

आप श्री प्राचीन पुस्तकोद्धारनी सारी लागणी धरावी वारंवार ते कार्यमां सहाय आपता रहो छो, मुनिश्री माणेक मुनिमहाराजना सदुपदेशथी हयाती पर्यंत यथाशक्ति ते प्रशस्त कार्यमां सहाय आपवानी आपश्रीए स्तुत्य प्रतिज्ञा लीधी छे, अने आ पुस्तक पण आपश्रीनी सहायथीज प्रगट करवा अमो शक्तिवान थया छीये.

आपनी आवी प्रशस्त वृत्ति प्रति हरकोइ आकर्षाय तेमां कांइ आश्चर्य नथी अर्थात् ते सहज छे अने तेमज अमे पण आ पुस्तक आपश्रीनेज अर्पण करीये छीये.

अमो छीये.

**श्री जैन मित्र मंडळ.**

मांडल ( ता. वीरमगाम )

# प्रस्तावना.

बाल जीवोने माटे कथानुयोगनां पुस्तको जेटलां रसिक तेटलां हितावह छे. गळथा प्रवाहोमां छूपायेलां कडु औषधनां टीपां जेवुं का ते पुस्तक सारे छे.

जेनाथी जीवन ओतप्रोत (तन्मय) थवुं जोइए तेवां नीति तेम धर्मनां तत्त्वोनी समज साथे सहज प्रवर्त्तनेच्छाने उद्भवावन कथानुयोग छे.

जुदा जुदा पात्रोनां, जुदा जुदा वर्तननां, जुदां जुदां इणानि परिणामो द्वारा धर्माधर्मनुं स्वरूप प्रत्यक्ष सदृश कथानुयोगथी दर्शा शकाय छे.

× × × × ×

तेवाज हेतुथी आज काल तेवां पुस्तको संख्याबंध प्रसिद्ध थ छे. भिन्न भिन्न रुचिपूर्वक ते वंचाय छे अने किंमत ( कदर ) प तथा प्रकारेज थाय छे. आ पुस्तक पण तेवाज हेतुथी प्रगट थयेल एटलुं जणावी इन्साफ आपवानुं काम विचक्षण वांचकोनेज सोंपीये छी

आ ग्रंथ अचळ गच्छाचार्य श्रीमन् श्री जयशेखर सूरीश्वरजी संस्कृतमां लखेलो छे, तेनुं नवलकथा रूपे भाषांतर करनार, आ मं ळना परम उपकारी मुनि महाराज श्रीमन माणेक मुनि छे जेओनी कलम सरलता साथे सचोट असर करनारी छे एम समाज सिद्ध थयेलुं छे.

× × × × ×

आ मंडळनो आज थोडांक वर्षथी तेवांज ( पुस्तक प्रकट क सस्ती किंमते वांचन फेलाववानो ) उत्साह भर्यो प्रयास छे. श्री माणेक मुनि महाराजश्रीनो आ मंडळ उपर पूर्ण उपकार छे । फरीथी जणावीये छीये. आज सुधीमां आ मंडळे तेओ श्रीनां लखे सात आठ पुस्तको प्रकट कर्यां छे जे समाजने हितकर होइ रुचिकर थयां

आ पुस्तक पण तेओश्रीनीज कृति छे.

× × × × ×

जे कोइ सद्गृहस्थो अमारा आ उत्तम प्रयासने सहाय करवा इच्छानुसार द्रव्य मोकलशे तेमनो आ मंडळ आभार मानशे. याद राखो के आवा कार्योमांज व्यय करवाथी द्रव्यनी सफलता छे.

× × × × ×

आ पुस्तक धारवा करतां घणुं मोडुं बहार पडयुं छे ते माटे अमे वांचकवृंदनी क्षमा चाहीये छीये. यथाशक्ति सुधारवानी काळजी छतां पण रही गयेली भूलो माटे पण क्षमा याचना छे. ग्रंथमांथी वांचकवृंद कांइ पण सार ग्रहण करे एटलुं इच्छि वीरमीये छीये.

अशाढ शुकल पंचमी
संवत १९६९

अमो छीये.
श्री जैन मित्र मंडळ.
मांडल ( तालुका–वीरमगाम ).

ता. क. आ बुकनी कीमत रु. ०–८–० राखवामां आवेली पण वाइन्डींग वीगेरेनुं खर्च वधी जवाथी तेनी कीमत रु. ०–१०–० राखवामां आवी छे.



## अमारी ओफीसमांथी मळतां पुस्तको.

१ सद्बोध चिंतामणी अने गुणमाळा .... .... रु. ०-२-०
२ सकाम निर्जरा अने नारी हितशिक्षा.... .... रु. ०-२-०
स्त्रीओने खास वांचवा लायक उत्तम शैलीथी आ पुस्तक मुनि माणेकनी कसायली कलमथी लखायेल छे बन्ने साथे लेनारने. .... .... .... रु. ०-३-०
३ सती चौपळवती, आवृत्ति २ जी. (रोयल १६ पेजी पृष्ट २००).... .... .... रु. ०-४-०
४ माणेकमाळा.... .... .... .... रु. ०-१-०
५ विश्वानुभव अने दर्पणशतक. .... .... रु. ०-१-०
६ चंपकश्रेष्ठी चरित्र. .... .... रु. ०-२-०
७ चरीत्रमाळा.... .... .... .... रु. ०-१-०
८ सती नर्मदा चरित्र (रोयल १६ पेजी पृष्ट २२५) रु. ०-४-०
९ धम्मिलकुमार चरित्र (डीमी ८ पेजी पृष्ट १७६) रु. १-0-

उपर लखेल पुस्तकोमांथी रु. १-०-० नां पुस्तक लेनारने नंबर ७ नो मुफ्त भेट आपवामां आवशे.

जथाबंध पुस्तको लेनारने कमीशन आपवामां आवशे.

दरेकनुं पोष्टखर्च ग्राहकना शीर छे. विशेष खुलासो पत्रव्यवहारथी करशो, नोटपेड पत्र लेवामां आवशे नहि; ओर्डर आपो, नफो ज्ञानखातामां जाय छे, एक पंथ दो काज.

### श्री जैन मित्र मंडळ सभा.

मांडळ (ता. वीरमगाम).

# धम्मिलकुमार चरित्र.

## प्रकरण १ लुं.

### कुशाग्रपुर.

उत्तम भूमिमां वावेलुं बी वधारे प्रशंसवा योग्य फळने आपनारुं थाय छे तेम आ देशनी भूमि श्रेष्ठ होवाथी सारां अनाज फळ विगेरेने उत्पन्न करनारी थई हती अने तेनो उपयोग करनारा मनुष्यो पण उत्तम प्रजाने जन्म आपनारा थया हता तेथी तीर्थंकर चक्रवर्ती वासुदेव बळदेव प्रतिवासुदेव विगेरे आ देशमांज पूर्वे उत्पन्न थया छे अने भविष्यमां पण थशे. तेथी ते भूमिने आर्यभूमिना नामथी ओळखवा लाग्या हता, ते आर्यभूमिने बे बाजु बे खाइओ माफक बे नदीओ आवी रही छे. जे सिंधु तथा गंगा नामथी ओळखाय छे अने जेनी उत्तर दिशामां उंचा कोट माफक वैताढ्य पर्वत आवी रहेलो छे अने दरियाने पण ते भूमिने भेटी पवित्र थवानी इच्छा होवाथी ते तेने दक्षिण दिशामां अवलंबी रह्यो छे अने ते आर्यभूमिमां वधारे तापथी लोको कंटाळी न जाय तेटला माटे ते दरियो, शीतळ पवननी लहेरोने वारंवार विस्तारी आर्यभूमिना पोताने परमउपासक दर्शावी तेमां घणे छेटे सुधी फेलावतो हतो. तेथीज जाणे खुश थइने आ आर्य देशे पोतानी भूमिमां मेघ गृहद्वारा चोरी लइने एकठो करेलो दरियाना जळनो जथ्थो थापण मुकवा माफक (आ आर्यभूमिमां) वरसावतो, ते जळने अग्राह्य गणी ते दरियाने सिवाय आ जे नदीओ तेनी द्वारा तेनेज पाछुं मोकलवा तेणे रिवाज राखेलो जणातो हतो तेथी मेघ गमे तेटलो जळनो जथ्थो ते दरियामांथी उचकी जतो हतो तोपण नदीओद्वारा पाछो जतो जळथी ते दरियो कदापि पण खाली थयेलो लागतो नहोतो.

आवा आर्यभूमिना न्यायी रीवाजथी तेमां उत्पन्न थएला लोको पण न्यायीज हता. अने ज्यां न्याय छे त्यांज वहेवार विशेष थाय छे, अने ज्यां विशेष वहेवार छे त्यां विशेष लक्ष्मीनो निवास थाय छे अने ज्यां लोको धनवान त्यां लोकपाळ जे राजा तेनो खजानो पण तर होय छे. तेवा समये देशमां दारिद्रता, चोरी, लुंटफाट, अकाळ मृत्यु, अन्यायथी धन लेवुं, बीजाने कटुवचन कहेवुं तथा बीजानी मूकेली थापण खाई जवी ए वगेरे अशक्य हतुं तेम भोगनी वस्तुनी उत्तमताथी भोग लेनारा थोडामां संतोष पामी जता तेथी परदारादिने भोगववानुं दूषण दुनियामांथी नष्ट थएलुं देखातुं हतुं. वेपारीओ वेपारमां निपुणता धरावनारा होवाथी धन मेळववुं तेमने सहेल होवाथी दान देवामां अने उपभोग करवामां द्रव्यने तेओ तृणनी तोले गणनारा हता.

आ आर्यभूमिने भरतक्षेत्रना दक्षिणना मध्य भाग तरीके ओळखता हता कारण के भरतक्षेत्रनां वच्चोवच्च पूर्व पश्चिम वैताढय पर्वत आवी जवाथी बे भाग थया अने गंगा सिंधु उत्तर दिशाए आवेला चुलहिमवंतना पद्मद्रहमांथी नीकळी दक्षिण दिशाना लवणसमुद्रमां ते नदीओ मळनी हती तेथी वैताढ्यनी उत्तरना त्रण भाग तेम दक्षिण दिशाना त्रण भाग मळी छ भाग भरतक्षेत्रना थया छे तेमां बत्रीसहजार देश छे; जेमांना दक्षिणना मध्य भागमां साडीपचीस देश आवी रह्या हता. ते दक्षिणना मध्य भागना पण मध्य भागमां कुशाग्रपुर नामनुं नगर रिद्धिवडे भरपुर छे. आ भरतक्षेत्र जंबुद्वीपना विशाळ ललाट तरीके अष्टमीना चंद्र माफक शोभे छे तेमां उपर कहेलुं नगर ललाटमां करेला तीलकसमान लागतुं हतुं.

घणा काळ पहेलां लोको घणाज सरळ अने मंदबुद्धिवाळा होवाथी "भोळाना भगवान्" तेनी माफक आ देशमां कल्पवृक्ष एटले ईच्छा प्रमाणे वस्तु आपनारां फळवाळां झाड हतां तेमांथी खावानुं, पीवानुं,

पेहेरवानुं, ओढवानुं, रहेवानुं, अंधारुं दूर करवानुं सघळुं साधन तेमांथीज तेमने मळतुं हतुं पण जेम जेम वखतमां किंचित् किंचित् बुद्धि वधवा लागी तेम तेम कल्पवृक्षो न्हाना थवा लाग्यां अने तेवड वधारे रसवाळां झाडो पण कमरस आपवा लाग्यां तेथी लोकने ममत्व वधवा लाग्यो. ममत्व वधवाथी लोकमां कुटीलता पण वधवा लागी ते कुटीलताथी बीजाने अन्याय पण करवा लाग्या, तेथी मांहोमांहे लडाई पण थवा लागी तेथी एक विशेष बुद्धिवानने न्याय करनारा तरीके नीमवानो रिवाज थयो, तेटलेथी पण संतोषकारक लोकने न्याय न मळवाथी प्रथम जे वचनथी शिक्षा थती ते हवे सामदाम दंडभेदनी नीति चालु थई अने तेने माटे राजा पण नीमायो, अने ते सौमां माननीय थाय माटे तेमने अभिषेक जनसमाज तरफथी करवामां आवतो. ते राजाओमां प्रथम राजा तरीके नाभिकुलकरना पुत्र ऋषभदेवने नीमवामां आव्या हता तेज ऋषभदेव पहेला राजा तरीके, पहेला काळना उपदेश करनारा तरीके तथा पहेला धर्मोपदेशक तरीके जाणीता थएला हता, तेमनुं राज्य हालना अयोध्या देशमां हतुं तेमनी राजधानी विनीता नगरी हती; अने तेमां सघळी सामग्री इंद्रना हुकमथी तेना सेवक देवताए पूरी पाडी हती. ते ऋषभदेवे लडवावाळाने क्षत्री एटले तेओए-परथी लडीने पोताना प्रजानुं पालन करवुं एवी संज्ञा आपी हती. विद्वानोने धर्मनुं,(ब्रह्म) आत्मनुं, तथा नीतिनुं स्वरूप समजीने प्रजाने धर्म मार्गे दोरवाथी तेमने ब्राह्मण तरीके ओळखाव्या हता; वेपारमां कुशळता धरावनाराने वैश्य वणिज विगेरे नामथी गणाव्या हता अने ते त्रण वर्गने जोईती वस्तु बनावी आपी तेमनी सेवा करवा माटे शूद्रनी नीमणुक करी हती. ते चार वर्णमांथी पछी अनेक वर्णो उत्पन्न थइ हती. छतां पण ते वखते शूद्रमांथी पण उंच अवस्थावाळो उंच धंधो करी ब्राह्मणत्वादि संपादन करी शकता हता तेथी ते समये मुख्यत्वे गुणनी प्राधान्यता मनाती हती.

लोकोमां हवे मोक्षमार्गनी योग्यता प्राप्त थवानो संभव देखातो हतो. तेथी ऋषभदेवे प्रथमज संसारनो मोह छोडी वैराग्यदशा प्राप्त करी हती अने पहेला साधु तरीके ओळखाया हता अने ते साधुत्व पोताने प्राप्त थया पछी थोडा वरसमां तद्दन निस्पृह रहेवाना कारणथी संपूर्णज्ञानना अभावनो रहेलो थोडो पण पडदो दूर थवाथी कैवल्यज्ञान प्राप्त करी कैवल्यज्ञानी साकार ईश्वर तरीके तेओ ओळखाता हता. तेओए देवोए रचेला समोवसरण ( मंडप ) मां उपदेश देवा मांडतां पूर्व दिशामांज लोकोने सन्मुखता मळती होवाथी तेमना भक्तदेवोए त्रण दिशामां तेमना जेवांज रुप स्थापन करवाथी तेओ चतुर्मुखी ब्रह्मा तरीके ओळखाया हता. तेमनी वाणी अस्खलित चालु रहेली होवाथी तेमनी वाणीमां संतुष्ट पामेली सरस्वती देवी अधिष्ठायिका बनेली होवाथी ते लौकिकमां अर्थात् अन्य मतिओमां बोली गणाती हती. तेमणे निरुपद्रवस्थान जे मोक्ष तेने लेवानो पोतानी मेळे उद्यम करवाथी स्वयंभू तरीके ओळखाया अने ते स्थानमां उपद्रव के अशांति न होवाथी ते शिवपद शिवस्थान गणातुं अने पोते तेवा सांसारिक उपद्रवने हणनारुं पद प्राप्त करवाथी शिव तरीके गणाया हता. तेओए संसारनो मोह छोडवा जे समता धारण करेली हती ते पर्वतनो बोजो उठाववा करतां पण अधिक कठण होवाथी ते पार्वती तरीके गणाती अने तेओए उपदेशेलो धर्म मोक्षप्राप्तिनुं कारण छतां पण ते काळ थकी न पहोंचे त्यां सुधी संसारनुं पुण्य अनासक्त परिणामथी धर्मवडे भोगवातुं. ते पुण्य तरीके हतुं अने ते सर्वव्यापक होवाथी पोते विष्णु तरीके पुण्य आत्माना निमित्त तथा पालन करनारा तरीके गणाता हता अने ते पुण्यमां बे वस्तु मुख्य लक्ष्मी अने ललना ( रुक्मिणी ) होवाथी ते तेमने आश्रित रहेवाथी तेओ तेने वरेला गणाता हता छतां पण तेओ तेमां पोते मुंझाता नहोता तथा पोताना भक्तोने पण तेमां नहीं राखवा माटे सम्यक् उपदेश दीधो हतो, तथा

ते अनुपम वस्तुमां पण विशेष वृद्धिपणे राचवाथी अत्यंत बिगाड यतो जाणीने तेओए ते आपात रम्य सुंदर भोगोने वृद्धि राखी भोगवनाराने विदर्भुक एटले डुक्करनी उपमा आपी हती अने तपश्चर्या पोते करी पुत्रो विगेरेने तेम करवा आप्त उपदेश देवाथी तेओ निर्लेप तरीके गणाता हता.

जो के संसारमां रह्या छतां पोते निर्लेप हता तोपण वहेवारथी ते निर्लेप न गणाय अने वहेवार तथा निश्चय नयजैनमां बेने माननीय होवाथी पोते अंतरमां पण वैराग्य दशा राखी अने बहार पण राज्यादि कुटुंबनो मोह छोडी जुदा जुदा देशमां फरी केवळज्ञान संप्राप्त करी ते ज्ञानवडे जीवोनी अनुकंपा लावी तेमने उपदेश देई संसार सागरना भ्रमणथी बचाव्या हता अने तेओ पोते पण मोक्षमां गया छे. तेओ प्रथम साकार ईश्वर अरिहंत तरीके तथा पाछळथी सर्व अर्थ सिद्ध थवाथी सिद्ध तरीके निराकार देव तरीके सर्व लोकमां माननीय छे. तेओए आपेली दिक्षाने ग्रहण करनारा साधु उपाध्याय अने आचार्य-पद पामता तेथी अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अने साधु ए पंच परमेष्टिनी स्थापना थइ. तेनी साथे दर्शन ज्ञानचारित्र तप मळवाथी ते गुणी गुण साथे मळी नव पद तरीके पण आराधवा योग्य गणाय छे.

आवी रीते अनादिकाळथी थया अने नवा तीर्थंकर थवानो तथा तीर्थ स्थापन करी लोकोने धर्ममां दोरववानो रिवाज चाल्यो आव्यो छे. ते धर्मथी अधिक लाभ थवानो छे एवुं लोकोना दिल्मां दृष्टांतथी सारी रीते समजाय तेना माटे धम्मिल्लनुं जे चरित्र कहेवातुं छे तेनी जन्मभूमि आ कुशाग्रपुर नगर वांचकवर्गे जाणी लेवानुं छे.

धनवानो दान देवामां मुख्य होय तोज तेनुं धन सफळ थाय छे. अने ते दानमां जिनेश्वरनुं मंदिर तथा तेमां स्थापन करवानी वीतरागादि दशानी मूर्ति मुख्य होवाथी ते बनाववामां अनर्गळ द्रव्य

उत्पन्न थएला चंद्रमां जेम कलंकनुं दूषण छे, ( आ लौकीक दृष्टांत छे ) तेम आ जोडाथी उत्पन्न थएला अरिदमन कुमारमां पण रुप विगेरे घणा गुणो छतां पण मंदबुद्धिनुं मोटुं कलंक हतुं. ( तेने ठेकाणे लावनार एटले सुबुद्धि वधारी पंडित बनावनार धम्मिलकुमारनो पिताज कारणरुप थशे.

आ अरिदमन राजकुमारमां मंदबुद्धि क्यां सुधी हती के लोको तेना पिता उपर अतिशे संतुष्ट होवाथी तेनामां आ दूषणथी जेटलो राजाने खेद हतो तेथी पण अधिक खेद राज्यभक्त बनेली प्रजाने हतो. अने तेथी तेओ तेनी मंदबुद्धि दूर थवा माटे पोताना इष्टदेव आगळ निरंतर प्रार्थना करता हता.

## प्रकरण २ जुं.

### सुरेंद्रदत्तनो जन्म.

तेज कुशाग्रपुर नगरमां अनेक श्रेष्ठिओ धनवडे धनेश (कुबेर)नी उपमा पाम्या हता. तेमां समुद्रदत्त शेठ अग्रपदने पामेलो हतो. जेना घरमां समुद्र माफक कोइ जगाए परवाळां, कोई जगाए मुक्ताफळ, कोई जगाए तेवां विविध जातनां रत्न भरेलां देखातां हतां. ते भिक्षुकोना त्रासथी कंटाळेलो नहोतो तेथी तेने योग्य जाणीने लक्ष्मीए ज्यां त्यां फरी कंटाळो खाधेलो होवाथी विश्रांति लेवा तेनुं घरज आश्रय माटे पसंद करेलुं हतुं तेने लक्ष्मीनी स्पर्धा करनारी पतिमां एक सरखो प्रेम धरनारी सति सुभद्रा नामे पत्नी हती. ते धनेनुं जोडुं दंड अने धजा माफक मंदिरना भूषणरुप हतुं. एक वखत ते सौभाग्यवती सुंदरीए स्वप्नमां ऐरावत हाथी उपर बेठेला इंद्रने जोयो अने ते कहेतो हतो के, हे मनमोहने! तने थोडा काळमां श्री अने सुमतियुक्त पुत्रनी प्राप्ति थशे. आवी अपूर्वसमान वाणी सांभळी तुरत जागेली

पत्नीए ते स्वप्नने बरोबर याद करी धीमे धीमे पति पासे जई तेमने मधुर वचने जाग्रत करी स्वप्नतुं वृत्तांत कही तथा शुं फायदो थशे? एवो प्रश्न करतां पतिए पोतानी मतिवडे मनमां तेने सारी रीते विचारी कयुं के हे मुग्धे! आ स्वप्नथी आपणा कुळना भूषणरुप पुत्रनी तने माप्ति थशे! प्रफुल्लित थएली प्रेमदाए पतिना ते वचनने हाथ जोडी माथे चडावी ते प्रमाणे हो! एम वदती पोतानी शय्यामां आवी धर्मजागरणवडे रात्रि पूर्ण करी दिवसो निर्गमन करवा लागी अने ते दिवसथीज जेम शीपमां मेघनुं बिंदु स्वातिनक्षत्रमां पडेलुं मुक्ताफळने जन्म आपनारुं थाय छे तेम दिव्य स्वप्नना प्रभावथी तेणे तेज रात्रे तेजस्वी गर्भने धारण कर्यो अने पूर्ण मासे पूर्णीमाना (पूर्ण) चंद्र सरखा वदनवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. कमळ सरखा कोमळ अंगवाळो अने सूर्यना बिंब माफक तेजस्वी मुखवाळो बाळ जेम वादळनी छायामांथी नीकळेलो सूर्य आनंद आपे तेम ते जनोना नेत्रने आनंद आपनारो थयो हतो. आ बाळनी नाभिनी नाळ छेदीने जमीनमां दाटवा माटे खाडो खोदतां तेमांथी धननो भंडार प्राप्त थयो तेथी हर्षथी रोमराजी विकस्वर थएला दासो खाडो पडतो मूकी जेमतेम ते बाळनी नाळने ठेकाणे पाडी शेठना आगळ ते वात कहेवा दोड्या. शेठे पण दारिद्रयरुपी लाकडांने बाळवा तेजस्वी झगझगाट अग्निसमान भंडार जोई संतुष्ट चित्तवाळो थई बोल्यो के पुण्यना प्रभावथीज आवी रिद्धि प्राप्त थाय छे एम बोली सघळो भंडार खोली जोतां तेमांथी एक मणी मळी आव्यो. आ मणि कई जातिनो छे के तेनो शुं प्रभाव छे, एम विचारतां शेठने तेना संबंधमां लखेलो एक श्लोक पण मळी आव्यो.

"आ मणिथी स्पर्श करेलुं पाणी पीनार माणस पशु सरखो जड बुद्धिवाळो पण विद्या मेळववा वडे पंडितोमां पूजनीक थाय छे."

आवो महिमावाळो मणि तथा अनर्गळ धननो भंडार बंने साथे मळेलो जोई शेठ चिंतववा लाग्यो के अहो! आ बाळकना भाग्यनी

तृष्णा कोनी आगे करी शकाय ! अरेरे ! आ बंने वस्तुओ स्वप्नमां कोइना हृदयना वचनने दृढ करे छे !!

केटलाक पुत्रो गर्भमांज गळी जाय छे त्यारे केटलाक पिता माताने पन्यशोना आशानन्द दुःख देखाडनारा थाय छे, त्यारे केटलाक गुपटा मापटा पोतेज दुःख देनारा थाय छे पण खरेज हुं भाग्यशाळी छुं के मने आवा पुण्यवान पुत्रनी प्राप्ति थई छे तेथी मेनी माता रत्नगर्भा अने पुत्रनो पिता हुं रत्नाकरनी उपमाने पामुं छुं.

धनने असार जाणी तथा पुत्रनी तथा पोतानी भविष्यनी प्राभाविक स्थिति पुण्यवडे कायम रहेवा माटे मीजलेलुं द्रव्य पुत्र जन्मनी खुशालीमां अर्थिओने मों मागुं दान आपवामां छूटे वापरी दीधुं. आ प्रकार द्रव्य जन्ममहोत्सवमां खरचावाथी संतुष्ट थएला अर्थिओए सर्वत्र तेना गुण गावा मांड्यायी त्यांनो राजा पण आश्चर्य पामी माथुं धुणावतो थयो हतो. अनुक्रमे अग्यार दिवस सुधी जन्मसंस्कारनी विधि करी बारमे दिवसे सगांवहालांने जातिमित्रो संबंधीने बोलावी अनेक प्रकारनां मिष्टान्नादिनुं भोजन करावी संतोष पमाडीने स्वप्नमां सूचवेलुं रहस्य कायम रहेवा माटे तेमनी समक्ष ते बाळकनुं नाम सुरेंद्रदत्त पाड्युं. (जे धम्मिल्लकुमारनो पिता तरीके भविष्यमां जणाशे.)



# प्रकरण ३ जुं.

## अरिदमननी मंदबुद्धि तथा सुरेंद्रदत्तनो उपकार.

बाळक पांच धावमाताथी उछेरातो अने सुंदरीओथी हुलरातो बीजना चंद्र माफक वधवा लाग्यो हतो. अनुक्रमे आठ वरसनी उमरनो थतां कळाना सागर एवा विश्वभूति आचार्य पासे विद्याभ्यास माटे तेने मोकलवामां आव्यो कारण के विद्याथीज सर्व गुण शोभाने पामे छे!

आ आर्य देशमां राजाओना पुत्रो पण सामान्य गृहस्थोना पुत्रो माफक एकज अध्यापक पासे भणता हता. जेथी प्रजाना दरेक वहेवारथी बाळपणाथीज राजानो पुत्र जाणीतो थतो तथा लघुताने स्वीकारी ते प्रजाना बंधु तरीके बनी भविष्यमां प्रजाने सुखदायी थतो हतो. पूर्वे कहेलो अरिदमन राजकुमार तथा सुरेंद्रदत्त शेठ–पुत्र तथा एक बालिका साथे अभ्यास करनारां शाळामां मुख्य हतां, तेवा बीजा अनेक शिष्यो पण अनेक जातनी कळा शीखवाने ते अध्यापक पासे भणवा आवेला हता.

आ अध्यापके एक दिवस पोतानो परिश्रम तेमने भणाववामां केटले दरज्जे सफळ थयो छे ते जाणवा माटे विद्यार्थीओने बोलावी तेओनी अभ्यंतर चातुर्यता जोवा माटे प्रश्न कर्यो के हे सुलक्षणा बाळको सांभळो ! जे कोइ राजाना माथामा बे पग वडे स्पर्श करी आघात करे तेने शुं करवुं ? आवा अंदरना गढ रहस्यने न समजनारा सामान्य बुद्धिवाळा बाळको बोली उठया के ते अधम बुद्धिवाळा निर्भागीने जीवथी मारवो के तेना पग छेदी नांखवा ! आ वखते केटलाक जवाब आपवाने अशक्त होवाथी मौन रह्या हता त्यारे केटलाके तेवो खोटो उत्तर आप्या हतो. त्यारे सुरेंद्रदत्त संभाळथी सौना सांभळतां गंभीरताथी धीमे स्वरे बोल्यो के हे बंधुओ ! तमे शुं गुरुजी

दयारत्नना महत्त्वनुं शुद्ध रहस्य समजाया हशे के नहि ? अने समजाया हों तो ते दिवसना मूर्ख के जे ते पत्थरे राजाने पाषाणथी आघात कर- नारे पोतानाने अने जगतने नमस्कार. हुं तेने ते जीवीने मारतो ? आवो कठिन हेतुना पुरुषो उपर राजानो अवे पालकनो आश्रय पामी पुत्रवत् पाळ्या छे हे प्रभो ! मेवी रीते ते पाप शीघ्र ! राजानुं आघात कर- नार पुरुष पोताना शिरोमणि केवी रीते गणाय ? आवो आनंद कोर्ण- हृत जीवोए साथे करी सुवर्णथी सुरेंद्रदत्त पंडितनी तपश्चर्यानुं छे. हे प्रभुओ ! विचारो तो खरा छे. आपना पंडितने छे. जेना मूर्खना बालके के कलजी उत्साहथी घणनवाळानो कर्यो आघात एवा अविचार थाय ! मेपज करे आनो आपना पर्षदा प्रसंशा करी राजाने दुःख देइ शके ! पण ते राजाने बालको मारो बालक. ज्यारे राजा पोते तेने ज्यारथी हृदयमां पेर छाया गणी होवा स्वभावे छे. ते बालकना पर्णी राजाना पाषाणनो स्पर्श करी आघात करे. हवे आवो राजाना प्राण हरनार पण ज्यारे बालको पुत्र पंडितने पूजवा योग्य छे के नहि ? त्यारे तेवा पण हवे केवी रीते शिखवा ? छे. तेने जीवथी मारी नाखवा !

बालको बालकनो आ महोत्सवथी पवित्र थइ पोतानी मंदबुद्धि थाय कष्टमांत करवा लाग्या. तेम पंडित पण आवा मंदबुद्धिना शिष्योनी पोताना मनमां मथाळ निष्फळ थयां जाणी दिलगीर थयो, पण धीरज तेवा जोग तेमां पकाज हतुं के. आवा अति गूढ रहस्यने पण समर्थाने यथायोग्य उत्तर आपनार पण सुरेंद्रदत्त जेवो शिष्य पोताने छे तेवो विचार करी कांइक संतोष अने कांइक खेदवाळो ते नीचुं मार्थु करी बेठेलो हतो. तेने सुरेंद्रदत्त साथे भणनारा कुमारविजय धीरज आपवा तेना (पंडितना) आंखमां किंचित् आवेला आंसुने पोताना वस्त्रना छेडावडे लुंछी तेने स्वस्थ कर्यो. आ आंसुनुं मुख्य कारण ए हतुं के एक बाजु आवा मूर्ख शिष्योनो समुदाय, त्यारे बीजी बाजु नररत्न समान एकज विनयी शिष्य! छे. जे शिष्ये पोताना पिता तरीके

ते पंडितने मानीने सर्वदा तेनुं मन संतोष करेलुं हतुं तथा भणाववामां ते अध्यापकने तेणे जरा पण कंटाळो आप्यो नहोतो. हजारो पत्थरोमांथी एकाद पण रत्न माप्त थाय अने ज्यारे तेनी बहु मूल्यता जणाय छे त्यारे उखेडेला पत्थरोनी मेहनतनो खेद दूर थई रत्ननी माप्तिथी अपूर्व संतोष जेम थाय छे तेम धीमे धीमे पंडितने तेनाथी संतोष थवा मांड्यो तथा तेना उपर अधिक प्रीति पण उत्पन्न थई, अने मनमां अनेक विचार करी तेणे नक्की कर्युं के आवुं शिष्य रत्न माप्त थवुं तेमां मारा ईष्टदेवो पण कारणभूत छे माटे ते शिष्य रत्ननुं भविष्यमां पण कल्याण थाय अने मारी शोभाने वधारे माटे हुं फरीथी ईष्टदेवनी पूजा तेना कल्याण माटे करुं. एम विचारी फरी स्नान करी स्वच्छ वस्त्र पहेरी देवोनी पूजा करवा जती वखते तेणे शिष्योने कह्युं के हे विचक्षण शिष्यो! सुवर्ण पद्ममाळाने लावो.

आ समये अध्यापके सौ शिष्योने स्नेहदृष्टिना भावथी कहेलुं होवाथी तेम पंडितने तेओए पूर्वे अयोग्य उत्तर आपवा छतां पण तेमनी प्रीति पोताना उपर तेटलीज छे तेमां विशेष वधारो थवा माटे दरेक शिष्य उत्कंठाथी ते हुकम बजाववा माटे फुलवाळानी दुकाने दोड्या.

ज्यारे पंडित देवनुं जलादिकवडे पूजन करवा लाग्यो हतो अने बीजा शिष्यो फुलनी माळा लाव्या हता, त्यारे पंडितनुं कहेलुं अत्यंत मंदबुद्धिवाळा अरिदमन राजकुमारने न समजायाथी ते सुवर्ण वर्णवाळी पद्ममाळा दासीने पोताना राजमहेलमांथी लई आव्यो हतो.

ज्यारे आ राजकुमार दासीने लेई पंडितनी पूजा करवाना स्थान पासे आव्यो, त्यारे पंडित पूजाना समय वखते अमंगळसूचक दासीनुं आवागमन राजपुत्र सहित जोइने आश्चर्य पामी ते राजकुमारने (पंडिते) पूछ्युं के, आ समये आ दासीने केम लई आव्यो छे? तेणे खुलासो कर्यो के आपे सुवर्णपद्ममाळा मंगावी ते नामनी आ दासी छे तेने

आपे बोलावेली होवाथी हुं तेडी लाव्यो छुं! ते विचित्र उत्तर तथा तेनी अनिष्टे मंदबुद्धिथी पंडित खेद पामी विचारमां पडी गयो तेथी राजपुत्रे दासीने रवाना करी दीधी पण आ पंडितने पूजन करवुं तो दूर रह्यं पण उलटुं परदेशगमन करवा शुकन जोनारने बिलाडी आडी उतरे तेम आ अमंगळसूचक दासीनुं तेने दर्शन थवाथी ए शेठ पुत्रनुं भविष्यमां बीगाड थवानुं अपशुकन अत्यारथी मने जणाय छे तेनुं पंडित मानवा लाग्यो. तथा राजपुत्र उपर कांईक क्रोध अने कांईक दयानी दृष्टिथी जोई चिंतववा लाग्या के आ कुमार पशुनी हिंसा थती जोई अत्यारे दया आववाथी आ पशुने मनुष्यरूपे राजाने त्यां तेना दुर्भाग्यथी ते प्रमाणे जन्म आपेलो देखाय छे! कारण के आ कम-अक्कलनो कार्य करे तोपण ठपको खाशे अने कार्य नहि करे तोपण ठपको खाशे! आ निर्भागी राजकुमारनी एटली पण अक्कल न पहोंची के देवपूजन वखते दासीने शुं काम बोलावे? आवा बेवकुफ शिष्य उपर कीधेलो मारो सघळो प्रयास ते अंगारा बुझावतां तेनी राखवडे अंग मलीन करवा जेवो थएल छे!

अरेरे! ए दुर्बुद्धिए पूजन वखते दासी लावीने मारुं तो अमंगळ कर्युं छे पण तेनी साथे महारा रत्न समान शिष्यनुं पण अति अमंगळ कार्य कर्युं छे.वळी आथी एम पण जणाय छे के प्रथम देवपूजन सारुं थएलुं होवाथी ते रिद्धिमां कुबेर जेवो सुखदायी थशे पण दासीना छेवटना दर्शनथी ते कोइ नीच जातिनी स्त्रीनी करेली पीडाथी दुःखी थइ वृद्धावस्थामां दुःखी थइने मरशे ?!!

विशेष विचार करे शुं थवानुं छे! बनवा कारण तो बनी चूक्युं छे. एम धीरज आणी दासीना दर्शनथी अपवित्र थएला अंगने अध्यापक स्वच्छ जळथी स्वच्छ करी पोताना स्थाने बेठो.

आ समये सघळा शिष्योए यथायोग्य कार्य करवाथी पंडितने संतोष पमाड्यो हतो त्यारे एकला मूर्ख राजकुमारे पंडितने असंतोष

पमाडयो हतो अने तेनाथी पंडितने अत्यंत खेद थयो हतो तेवुं सवळाओए जाणीने ते राजकुमार तरफ जोइने ते बाळको हसवा लाग्या तथा अनेक प्रकारनी अपमानसूचक चेष्टाओ करवा लाग्या, तेमां पण साथे भणनारा युवान कुमारिका जेनुं नाम सुभद्रा हतुं ते वधारे हसीने राजकुमारने खसीयाणो पाडवा लागी. ते जोइ पोतानी मूर्खताथी पोते प्रयास करवा छतां एक सामान्य ग्रहस्थना पुत्र जेटलुं पण भणी नथी शक्यो. एटलुंज नहि पण एक कन्याथी पण अधिक मूर्ख रह्यो छे अने तेना लीधे तेवाओथी पोतानुं अतिशे अपमान थएलुं जाणी राजकुमार नीची दृष्टिए विचारवा लाग्यो के हे प्रभो! में शुं पाप पूर्वे कीधां छे. हुं आवो एक मंदबुद्धिनी बाळिकाथी पण अधिक मूर्ख रह्यो छुं? हे कर्मनुं फळ देनार विधाता! तुं मारा हृदयना बे फाडचां (टुकडा) करी दे के अंदर रहेलो जडतारुपी कादव सुकाइ जाय! हे सरस्वति! में ब्रह्महत्या, बाळहत्यादि पाप कीधां नथी तेम चंडाळनो स्पर्श कीधो नथी छतां तुं हास्यवडे पण शा माटे मारो जरा पण स्पर्श करती नथी.

हे माता! जो तने स्त्रीजाति उपर प्रेम होय अने तेथी तुं आ सुभद्रा कन्याने प्रसन्न थइ होय तो पछी मारा आ बीजा पुरुष बंधुओने शा माटे प्रसन्न थइ छे! कारणके तें पंक्तिभेद करी मने मूर्ख राखवाथी मारे आ संसारमां मोढुं देखाडवानो वखत हवे रह्यो नथी!!!

हे रत्नगर्भे हे पृथ्वि! जो मारो बीजो कोइ स्नेही मने विद्या मेळवी आपवामां मदद करनार न होय तो हे माता! तुं हवे मने मार्ग आप के वडीलोनी कीर्त्तिने मूर्खतावडे लांछन लगाडी कलंकरुप थाउ नहि!

आंखो विनाना अंधाने दुनियानी सुंदर वस्तुओने देखवाना अभावनुं दुःख छे, कान विनाना बहेराने बीजानुं गायेलुं मधुर स्वरनुं वचन सांभळवा विनानुं दुःख छे. मुंगाने बोली बतावबानुं, जीभ

विनानाने स्वादनुं अने मारी गएली स्पर्श शक्तिवाळाने स्पर्शना सुखना अभावनुं दुःख छे पण जेनुं हृदय शुन्य छे एटले कोइ पण कार्यमां जेनी बुद्धि पहोंचती नथी तेवाने तो सघळा विषयोनुं सुख दूर थवानुं अने सर्वत्र अपमान थवानुं मोटुं दुःख छे; कारणके एक बे त्रण इंद्रिना अभाववाळाने समजाववाना के समजवाना अनेक रस्ता विद्वानोए शोधी काढ्या छे पण मूर्खनी मंदबुद्धिने सुधारवानो एके उपाय शोधी काढ्यो नथी. अरेरेरे ! आ दुनियामां मारा सरखो कमभाग्य कोण छे?

आ प्रमाणे शोकसागरमां डुबेला राजकुमारनी दयाथी के तेणे अत्यंत पश्चाताप खरा भावथी करवाथी के पूर्वे कहेली राज्यभक्त प्रजाए ते राजकुमारनी मंदबुद्धि सुधारवानी पोताना ईष्टदेवो पासे प्रार्थना करवाथी के ते कुमारना प्रबळ पुण्योदयनो उदय थवाथी तेनी पासे उभेला सुरेंद्रदत्तना कोमळ अंतःकरणमां दयारूपी अंकुरो उत्पन्न थया; अने ते राजकुमारना हृदयमां उत्पन्न थएली चिंतानी ज्वाळाना धुमाडाथी मलीन थएला मुखने जोई मधुर स्वरे तेने कहेवा लाग्यो के,-"हे बंधो! हे राजकुमार! हे सरखी वयना स्नेही! तुं एटलो बधो खेद न कर! दुनियामां दरेक रोगनो के उपाधिनो के व्याधिनो जेम उपाय छे तेम तारी मंदबुद्धि दूर थवानो पण उपाय छे अने ते उपाय पण दिव्य प्रभाववाळो होवाथी थोडा काळमां पूरेपूरो फळदायी थाय छे, माटे ले आ, मारा दिव्य प्रभाववाळा मणिवडे पवित्र करेलुं पाणी पी ले." एम कही प्यालामां पवित्र करेलुं पाणी तेने आप्युं. राजपुत्रे पण मरण तुल्य दरदीने बचवा माटे जेम पथ्य औषध जेम वैद्य आपे अने ते स्वीकारी ले तेम पोतानी मंदबुद्धि दूर थवा माटे राजकुमारे ग्रहण करी पी लीधुं. ज्यारे राजपुत्रे पान कर्युं त्यारे स्वयमेव सरस्वती तेने प्रसन्न थई गई अने पोताना हृदयमां थएलो प्रकाश पोताने जणायो तेथी चिंता शांत थवाथी मलीन मुख पण पूर्णिमाना शरदऋतुना चंद्र माफक निर्मळ देखावा लाग्युं. बीजानी किंचित् करेली वात पण सारी

रीते समजीने उत्तर-आपवानी शक्तिने पामेलो पोताने जोई रोमांचि
थई ते राज्यकुमारे हर्षथी ते शेठ पुत्रने भेटीने तेनो अत्यंत उपका
मानवा लाग्यो. अने बोल्यो के,–

हे श्रेष्टि पुत्र! जे पंडितना प्रबळ प्रयासथी पण न भणायों ते
पशुथी पण अविवेकी अने नानी बालिकाओने पण हसवा योग्य ए
मने मूर्खने तें बोधवाळो कर्यो तेनो उपकार केवी रीते वाळी शकुं
गळीया बेलने धोरी बनाववो, अंधाने देखतो करवो, अमावास्या
प्रकाशवाळी पूर्णीमा करवी के पत्थरने मणि बनाववो तेवी रीते तें म
मूर्खने पंडित बनाव्यो छे! आवा तारा परम उपकारनो हुं पूरो बद
वाळीश, ए बोलवुं ते तो अयोग्य छे तोपण एटलुं तो मारी बाळचेष्टा
जीभथी बोलाय छे के ज्यारे हुं राज्यपदनी धुंसरीने धारण करी
त्यारे तारी माफक तने हुं नगरशेठनुं पद अर्पण करीश! आ वा
थया पछी पाछळ पडी गयेलो राजकुमार उत्कंठाथी भणवा मांडया
तथा मणिना प्रभाववाळा पाणीथी खीलेली बुद्धिवडे अध्यापक पा
थोडा काळमां वधारे भणी पोताना मित्र सुरेंद्रदत्तनी तुलनामां आ
गयो तेम प्रथम कहेली युवान कुमारिका पण सुरेंद्रदत्तनी छाया माफ
दरेक अभ्यासमां तेने अनुसरती रही शकी हती. बन्ने मित्रो ते मंत्र
अधिष्ठित मणिनुं पाणी पीवाथी विद्याभ्यास वधारी शक्या हता त्य
विना पाणी पीधेली कुमारिका तेओनी साथे रही सरखो अभ्या
करी शकनारी ते सर्वने आश्चर्यरूप थई हती.

बाळपणाने त्यागी युवावस्थामां आवेला बंने मित्रो विद्याभ्
सवडे अमूल्य कळाओने शीखी पोताना स्थानके गया त्यारे सुभद्रा प
कळामां प्रवीण अने युवावस्थाथी अधिष्ठित थएली युवान पुरुषो
धैर्यने हणनारी पोताना घेर गई.

—

# प्रकरण ४ थुं.

## प्रश्नोत्तर परीक्षणथी सुभद्रानी पति पसंदगी.

एक रमणिक दिवानखानामां एक पाचट उपर श्रेष्ठि पोतानी सुकोमळ गादी उपर वर्षोना आराम लेवाना समये चिंता समुद्रमां डुबेलो हतो अने आंख मींचवा छतां पण निद्रा स्पर्श करती न होवाथी विचार वमळमां गोथां खातो निःश्वासा नाखतो हतो, अने घडीक धीमे धीमे मंद स्वरे बोलतो हतो के आ मारी, मर उमरमां आवेली पुत्रीने योग्य कळावान वर क्यारे अने क्यांथी मळशे ? पिताने पुत्रनुं जेटलुं दुःख छे तेना करतां अधिक दुःख पुत्रीनुं होय छे. कारणके पुत्रीने जो पति खराब मळ्यो तो तेना पिताने रातदिवस तेनी चिंतामांज रहेवानुं होय छे अने घरमां उमरलायक पुत्रीने राखवाथी पण लौकिक अपवादनुं कारण छे. हुं शुं करुं ! गरीब होय तो गमे तेने दइ शके पण पोताना सरखो भाग्यवान कुळवान शोभावाळो श्रीमंतनो पुत्र योग्य उमरवाळो क्यांथी मळी शके ? वखत वृद्धने के बाळकने आपवामां आवे तो पुत्रीना जन्मारा वृद्ध थाय, कजीआ थाय, पुत्रीने रंडापो आवे तो शीयळव्रतनो भंग करवाना कारणरूप थाय, कुमार्गे दोराय इत्यादि अनेक दूषण उपार्जन करनारां थाय छे. माटे हे प्रभो ! मारे शुं करवुं ? आ संसार खरेखर दुःखमयज छे. गरीबो श्रीमंतोने जोइ मनमां तलसे के क्यारे अमे श्रीमंत थइ सुख भोगवीए, पण ज्यारे श्रीमंतोनुं दुःख जो तोळीने साथ सरखावे तो शोभा राखवाना दुःखने कढ्वाना करता पण अधिक बातोने स्वप्ने पण श्रीमंत थवानी इच्छा करे नहि ? आम वलवलाट करतां तेनी चिंताथी तेनुं शरीर दिवसे दिवसे लेवातुं जतुं हतुं तेथी तेना निस्तेज चहेराने निहाळी तेनी उमर लायक पुत्री तेज समये आवती आवी लागेली ते पोताना

रीते समजीने उत्तर आपवानी शक्तिने पामेलो पोताने थई ते राज्यकुमार इर्षाथी ते शेठ पुत्रने भेटीने तेनो अत्यंत मानवा लाग्यो. अने बोल्यो के,—

हे श्रेष्टि पुत्र! जे पंडितना प्रबळ प्रयासथी पण न भणाया पशुथी पण अविवेकी अने नानी बाळिकाओने पण हसवा मने मूर्खने तें बोधवाळो कर्यो तेनो उपकार केवी रीते वाळी गळीया बेलने धोरी बनाववो, अंधाने देखतो करवो, प्रकाशवाळी पूर्णीमा करवी के पत्थरने मणि बनाववो तेवी रीते तें मने मूर्खने पंडित बनाव्यो छे! आवा तारा परम उपकारनो हुं पूरो बदलो वाळीश, ए बोलवुं ते तो अयोग्य छे तोपण एटलुं तो मारी बाळचेष्टानी जीभथी बोलाय छे के ज्यारे हुं राज्यपदनी धुंसरीने धारण करीश त्यारे सारथी माफक तने हुं नगरशेठनुं पद अर्पण करीश! आ वात थया पछी पाछळ पडी गयेलो राजकुमार उत्कंठाथी भणवा मांडयाथी तथा मणिना प्रभाववाळा पाणीथी खीलेली बुद्धिवडे अध्यापक पासे थोडा काळमां वधारे भणी पोताना मित्र सुरेंद्रदत्तनी तुलनामां आवी गयो तेम प्रथम कहेली युवान कुमारिका पण सुरेंद्रदत्तनी छाया माफक दरेक अभ्यासमां तेने अनुसरती रही शकी हती. बन्ने मित्रो ते मंत्रवडे अधिष्ठित मणिनुं पाणी पीवाथी विद्याभ्यास वधारी शक्या हता त्यारे विना पाणी पीधेली कुमारिका तेओनी साथे रही सरखो अभ्यास करी शकनारी ते सर्वेने आश्चर्यरुप थई हती.

बाळपणाने त्यागी युवावस्थामां आवेला बंने मित्रो विद्याभ्या- सवडे अमूल्य कळाओने शीखी पोताना स्थानके गया त्यारे सुभद्रा पण कळामां प्रवीण अने युवावस्थाथी अधिष्ठित थएली युवान, पुरुषोना धैर्यने हणनारी पोताना घेर गई.

---

# प्रकरण ४ थुं.

## प्रश्नोत्तर परीक्षणथी सुभद्रानी पति पसंदगी.

एक रमणिक दिवानखानामां एक पाकट वयनो श्रेष्टि पोतानी सुकोमळ गादी उपर बपोरना आराम लेवाना समये चिंता समुद्रमां डूबेलो हतो अने आंख मींचवा छतां पण निद्रा स्पर्श करती न होवाथी विचार वमळमां गोथां खातो निःश्वासा नांखतो हतो, अने कांइक धीमे धीमे मंद स्वरे बोलतो हतो के आ मारी, घर उमरमां आवेली पुत्रीने योग्य कळावान वर क्यारे अने क्यांथी मळशे ? पिताने पुत्रनुं जेटलुं दुःख छे तेना करतां अधिक दुःख पुत्रीनुं होय छे. कारणके पुत्रीने जो पति खराब मळ्यो तो तेना पिताने रातदिवस तेनी चिंतामांज रहेवानुं होय छे. अने घरमां उमरलायक पुत्रीने राखवाथी पण लौकिक अपवादनुं कारण छे. हुं शुं करुं ! गरीब होय तो गमे तेने दइ शके पण पोताना सरखो आबरदवान कुळवान मोभावाळो श्रीमंतनो पुत्र योग्य उमरवाळो क्यांथी मळी शकशे ? कदाच वृद्धने के बाळकने आपवामां आवे तो पुत्रीनो जन्मारो रद थाय, कजोडुं थाय, पुत्रीने रंडापो आवे तो शीळव्रतनो भंग करवाना कारणरुप थाय, कुमार्गे दोराय इत्यादि अनेक दूषण उपार्जन करनारी थाय छे. माटे हे प्रभो ! मारे शुं करवुं ? आ संसार खरेखर दुःखमयज छे. गरीबो श्रीमंतोने जोइ मनमां तलशे के क्यारे अमे श्रीमंत थइ सुख भोगवीए, पण ज्यारे श्रीमंतोनुं दुःख जो डोळीने साथे सरखावे तो मोभो राखवाना दुःखने केदखाना करतां पण अधिक मानीने स्वप्ने पण श्रीमंत थवानी इच्छा करे नहि ? आम केटलोक काळ चिंता कर्याथी तेनुं शरीर दिवसे दिवसे लेवातुं जतुं हतुं. तेथी तेना निस्तेज चहेराने निहाळी तेनी उपर लायक पुत्री तेज समये ओचिंती आवी लागेली ते पोताना

लागतां छे. मोर ग्याइने प्रकृति चित्रवाळी कोयलो आंबानी डाळोमां टौका करी रही छे अने फूलोना मकरंदनी सुगंधीथी भमरा भमरीओ खेंचाइ आवी मधु पीने मधुर स्वरे गुंजारव करी रह्या छे, वृक्षना पत्र-डांमां वरफ पीगळीने झरणरूपे नीचे पडी नानी नहेरोना रूपमां वनमां विस्तरायाथी पथोरना कांइक थाकण मारगथी कंटाळेला तथा थाकेला मुसाफरो तेना शीतळ तथा निर्मळ जळने पीवा पोताना वासणो भरी गमगळावा मांडया छे. मलयागिरिनो सुगंधी पवन फूलोना सुगंधने चोतरफ प्रसरावी तमनो थाक तथा प्रस्वेद दूर करे छे.

शहेरमां पोताना नाना बगीचामां अनेक प्रकारनी सुंदर वेलो उगी नीच वस्तीना पोषाकथी कंटाळी तथा महेनतथी थाकी विश्रांति लेवा श्रीमंत तथा सामान्य प्रकारनां पण कुटुंब सहित ते वनमां फिरवा अर्थे आवता हता. तेथी एक दिवस सुभद्रा पण पोतानी सखीओ साथे ते वनमां सुंदरता देखवा तथा दाबी राखेला हृदयमां पळता कामना ज्वरने शांत करवा ते शीतळ वनमां आवी हती. तेवा समये सुरेंद्रदत्त पण अचानक तेज वनना बीजा भागमां पोताना मित्रो साथे मोज करवा आवी पडयो हतो. वनमां केटलाक छोकरीओ वननी सुंद-रताने निहाळी सुगंधी पवनथी आनंद पामी ते वननी तथा पोताना पुण्यनी स्तुति करवारूप मधुर स्वरथी गायनो गाता हता ते सांभळ-नाराने अतिशे आनंद आपतां हतां. ते सांभळवामां आपणो सुरेंद्रदत्त पण लीन थइ गयो हतो. बीजा मित्रो बीजी जगाए खेलता हता अने समीपमां रहेलो मित्र पण पासे आवी कानमां कहेवा लाग्यो के मारे तमारुं मन संतोष करवा माटे वनना भूषणरूप कांइक अलंकार तमने अर्पण करवो जोइए माटे हुं जाउं छुं, एम सर्वेथी एकलो पडेलो सुरें-द्रदत्त कांइक विचार करतो हतो तेवामां तेनाथी थोडे दूर पण नजरे सुरेंद्रदत्त न देखाय तेवी रीते दूर रहेली सुभद्रा फुलोने चुंटती हती. किंचित हसवारूप खुल्ला वदनथी तेना दांत खीलेली कळी जेवा लागता –

त्यारे वनस्पति तथा वीजळी पण पतिने आश्रय करवाथी उच स्थिति पामे छे तो मारे मारा भला माटे आ माटे, पुरुषने परणवानो थोथो नांखवो जोइए ? अने विषयोने विष समान अत्यंत दुःखदायी जाणती होय तो व्रतोने शा माटे ग्रहण करती नथी ? पण संसारमां रहेवुं अने कुंवारापणामां काळ गुमारवो ए कुळवान बाळिकाओने कोइ पण रीते योग्य नथी ते समये साक्षात सरस्वती रुप सुभद्राए कह्युं के हे बहेनो ! तमारुं कहेवुं युक्त छे. पण हुं एवा पतिने चाहुं छुं के जे जेमना विश्रामनुं धाम होय अने गुणोनी कदरने जाणनारो होय, पण हालतो मंद बुद्धिना माणसोथी विश्व सर्वत्र खीचोखीच भरायेलुं छे. तेवा एकाद अज्ञानीने पसंद करी तेने परणवा जतां संसारमां काळ केवी रीते गुजाराय तथा सुखनो लेश स्वप्नमां पण क्यांथी पामी शकाय तेवा सदाना दुःखना केदखानामां पडवा करतां पति विनानी पण शीळथी शोभिती सुंदरीने पिताना घरमां रहेवा छतां पण सूर्य सामी धूळ फेंकवा माफक लोकनी निंदा मने शुं दुःख देनारी छे, तेम भयथी भागता चितवाळाने राज्य प्राप्ति माफक उत्तम व्रतोनी अभिलाषा पण मने क्यांथी थाय ? जो के माता पिताना हृदयमां हुं हाल चिंता रुप छुं. छतां पण योग्य पतिना अभावे हुं शुं करुं ? त्यारे फरीने सखीओए पूछयुं के तुं केवा वरने पसंद करे छे ! त्यारे कामरुपी हाथीने अंकुशमां राखवा समान वचन खुल्ला दिले कही बताव्युं के मारा नीचला प्रश्नोनो उत्तर जे कोइ आपशे अने ते उत्तरथी मारा मननुं समाधान थशे तेनेज हुं वरीश पण बीजाने कदापी परणवानी नथी. ते प्रश्नोः—

सुकृत्यनो सार शुं छे ? अने मनुष्य जन्म, विद्या अने मळेला सुखोनो सार शुं छे"

आ वातने प्रगटपणे सुरेंद्रदत्त सांभळी तेनुं रहस्य समजी तेनो उत्तर आपवा तैयार थयो हतो पण एम खुल्ला प्रगट थइ खुल्ला शब्दोमां बोली तेमनी वार्तामां भंग करवानुं तेने योग्य न लागवाथी

त्यारे वनस्पति तथा वीजळी पण पतिने आश्रय करवाथी उच्च स्थिति पामे छे तो मारे मारा भला माटे शा माटे पुरुषने परणवामां वांधो नांखवो जोइए ? अने विषयोने विष समान अत्यंत दुःखदायी जाणती होय तो व्रतोने शा माटे ग्रहण करती नथी ? पण संसारमां रहेवुं अने कुंवारापणामां काळ गुमाववो ए कुळवान बाळिकाओने कोइ पण वाते योग्य नथी ते समये साक्षात सरस्वती रूप सुभद्राए कह्युं के हे बहेनो ! तमारुं कहेवुं युक्त छे. पण हुं एवा पतिने चाहुं छुं के जे प्रेमना विश्रामनुं धाम होय अने गुणोनी कदरने जाणनारो होय, पण हालनो मंद बुद्धिना माणसोथी विश्व सर्वत्र खीचोखीच भरायेलुं छे. तेवा एकाद अज्ञानीने पसंद करी तेने परणवा जतां संसारमां काळ केवी रीते गुजराय तथा सुखनो लेश स्वप्नमां पण क्यांथी पामी शकाय तेवा सदाना दुःखना केदखानामां पडवा करतां पति विनानी पण शीळथी शोभिती सुंदरीने पिताना घरमां रहेवा छतां पण सूर्य सामी धूळ फेंकवा माफक लोकनी निंदा मने शुं दुःख देनारी छे, तेम भयथी भागता चित्तवाळाने राज्य प्राप्ति माफक उत्तम व्रतोनी अभिलाषा पण मने क्यांथी थाय ? जो के माता पिताना हृदयमां हुं हाल चिंता रूप छुं. छतां पण योग्य पतिना अभावे हुं शुं करुं ? त्यारे फरीने सखीओए पूछयुं के तुं केवा वरने पसंद करे छे ! त्यारे कामरूपी हाथीने अंकुशमां राखवा समान वचन खुल्ला दिले कही बताव्युं के मारा नीचला प्रश्नोनो उत्तर जे कोइ आपशे अने ते उत्तरथी मारा मननुं समाधान थशे तेनेज हुं वरीश पण बीजाने कदापी परणवानी नथी. ते प्रश्नोः—

सुकृत्यनो सार शुं छे ? अने मनुष्य जन्म, विद्या अने मळेला सुखोनो सार शुं छे"

आ वातने प्रगटपणे सुरेंद्रदत्त सांभळी तेनुं रहस्य समजी तेनो उत्तर आपवा तैयार थयो हतो पण एम खुल्ला प्रगट थइ खुल्ला शब्दोमां बोली तेमनी वार्तामां भंग करवानुं तेने योग्य न लागवाथी

तथा इवे सांमनो वखत थवा आव्याथी त्यां रहेवुं योग्य न,
एक कागळमां तेना उत्तर लखी ते सुभद्राने आववाना
नजरे पडे तेवी रीते लटकावी दीधो. जे झाडना उंचा भागमां
उडवा वडे नानी पताका (ध्वजा) माफक उडतो देखातो हतो
धीमे धीमे नीकळी पोताना घेरे चाली गयो.

अहीं सुभद्रा पण सखीओना मननुं समाधान करी तेओनी साथे
थोडीवार छुपी थाकी रहेली सुंदर वेलो तथा कुमळा झाडोने
ळती तथा पक्षीओना सुंदर अवाजने सांभळती तथा नानी
जळनां आस्वाद लेती चारे बाजु फरी थाकीने रस्ता उपरना तेज
झाड आगळ आवी पहोंची के ज्यां पोताना प्रश्नना उत्तरनो कागळ
ध्वजा माफक उडतो जणातो हतो.

नेत्रने आनंद आपनार पत्रने जोइ तेने लेवा आतुरता
सखीओ तेने लावी तेना हाथमां मूकतां ते
माफक उल्लासथी तेने निहाळवा लागी जेमां लख्युं हतुं के,

सुकृतनो सार बीजानुं भलुं करवुं, मनुष्य जन्मनो सार सुकृत्य करवां,
विद्यानो सार तत्वज्ञान मेळववुं अने सुखनो सार संतोष राखवो.

आवा अभिलाषित उत्तरोने जोई आश्चर्य पामेली तथा आनंदमां
गरकाव थएली प्रथम बोली शकी पण नहि पण नेत्रोनुं विकस्वर थवुं,
गालो उपर तेजी आववी, हृदयस्थळ वडे उच्छवास लेवो इत्यादि
आनंदनां तेनां चिह्नोथी प्रथम हर्षना उभरारूप वीणावेणु विगेरे वाजींत्र
वागवा विना पण ते नाचवा लागी अने खुल्ला दिले वाचाळ थई
सखीओने केहेवा लागी के हे बेनो! मारे माटे पण विधिए योग्य
पुरुष पण पुण्यवान् सरजी राख्यो छे!!!

आजे पण पंडित विनानुं जगत् नथी तेम सतिओना सत्वनी
सिद्धिओ पण विद्यमान छे, पण एक आश्चर्य लागे छे के आ उत्तर
आपनार मारा हृदयना गूढ अभिप्रायने घरना भोंयराना भंडार माफक
केवी रीते जाणी शक्यो! वळी मारा हृदयना आनंदरूप समुद्रने उछ

सित करवामां चंद्र समान ते प्रकाशित छतां पण नामठाम विनानाने तेने मारे केवी रीते शोधी काढवो ए हलाहल विष समान दुःखदायी छे! एम बोलती ने हृदयमां वारंवार मुंझाती ते चीठीना वारंवार अक्षर निहाळीने वांचतां ते अक्षरनो लखनार पण तेना ध्यानमां आवी जवाथी बोली के–हे भगिनीओ! मारी ते पण चिंता दूर थई छे, ते अक्षरना मरोड उपरथी तेना लखनारने पण में शोधी काढ्यो छे अने ते बीजो कोईज नहि पण समुद्रदत्तशेठना वंशमां भूषणरुप तेमनो पुत्र सुरेंद्रदत्त छे अने ज्यारे हुं बाळपणामां विश्वभूति अध्यापक पासे कळाभ्यास शीखती हती त्यारे ते पण त्यां भणता हता तेथी में शोधी काढ्या छे; तेनी बुद्धि केटली तीक्ष्ण छे के देवोनो गुरु बृहस्पति तेनी बुद्धिथी लज्जायमान थई दाहाडे मोढुं देखाडवा अशक्त होवाथी रात्रेज उगेलो आकाशमां देखाय छे. गंभीरतामां समुद्रथी अधिक अने रुपमां कामदेवथी अधिक छे अने तेनी वाणीनी मधुरताथी विद्वानो सुधाने पण मुधा (व्यर्थ) जाणवा लाग्या छे! पण अरेरे में तेने ओळख्या छतां पण हजु एक शंका मारा दिलमां दावानळनो दाह उत्पन्न करे छे, अने ते एज छे के ते मने पसंद करशे के नहि? कारण के जेम परीक्षा करीने पतिने परणवा हुं उत्कंठित हती तेम ए पण परीक्षा करीने पत्नीने ग्रहण करवा आग्रह धरावताज होवा जोइए अने मारी मंद बुद्धिना प्रश्नोनो उत्तर तो तेओ विचक्षण होवाथी कोई पण रीते समजीने आपी शक्या.

पण ते बुद्धिना निधान एवा श्रेष्ठ पुरुषना पूछेला प्रश्नोना उत्तर हुं मंदबुद्धिवाळी मूर्ख स्त्री केवी रीते आपी शकीश? हे सखीओ! खरे हुं निर्भागीज छुं के पति थवाने योग्य पुरुष मळवा छतां हुं ते पतिने योग्य पत्नी थवाने सरजाई शकी नथी!!! तोपण चिंता करवाथी सर्यु! दरेक प्राणीनुं भाग्य पण साथेज लागेलुं होय छे अने तेथी ते भाग्यज तेवो संजोग लावी मूकशे. एम कही बाह्य धैर्य आणेली पण अंदरथी शंकाशील कन्या पोतानी सखीओ साथे बनमांथी शहेरमां आववा लागी.

तथा हवे सांजनो वखत थवा आव्याथी त्यां रहेवुं योग्य न लागवाथी एक कागळमां तेना उत्तर लखी ते सुभद्राने आववाना मार्गमां तेने नजरे पडे तेवी रीते लटकावी दीधो. जे झाडना उंचा भागमां पवनथी उडवा वडे नानी पताका ( ध्वजा ) माफक उडतो देखातो हतो अने धीमे धीमे नीकळी पोताना घेरे चाली गयो.

अहीं सुभद्रा पण सखीओना मनतुं समाधान करी तेओनी साथे थोडीवार सुधी बाकी रहेली सुंदर वेलो तथा कुमळा झाडोने निहाळती तथा पक्षीओना सुंदर अवाजने सांभळती तथा नानी वावडीओना जळनो आस्वाद लेती चारे बाजु फरी थाकीने रस्ता उपरना तेज झाड आगळ आवी पहोंची के ज्यां पोताना प्रश्नना उत्तरनो कागळ ध्वजा माफक उडतो जणातो हतो.

नेत्रने आनंद आपनार पत्रने जोइ तेने लेवा आतुरता धराव्याथी सखीओ तेने लावी तेना हाथमां मूकतां ते पण भूख्याने भोजन मळवा माफक उल्लासथी तेने निहाळवा लागी जेमां लख्युं हतुं के,

सुकृतनो सार बीजानुं भलुं करवुं, मनुष्य जन्मनो सार सुकृत्य करवां, विद्यानो सार तत्वज्ञान मेळववुं अने सुखनो सार संतोष राखवो.

आवा अभिलाषित उत्तरोने जोई आश्चर्य पामेली तथा आनंदमां गरकाव थएली प्रथम बोली शकी पण नहि पण नेत्रोनुं विकस्वर थवुं, गालो उपर तेजी आववी, वृक्षस्थळ वडे उच्छवास लेवो इत्यादि आनंदनां तेनां चिह्नोथी प्रथम हर्षना उभरारुप वीणावेणु विगेरे वाजींत्र वागवा विना पण ते नाचवा लागी अने खुल्ला दिल वाचाळ थई सखीओने कहेवा लागी के हे बेनो ! मारे माटे पण विधिए योग्य पुरुष पण पुण्यवान् सरजी राख्यो छे!!!

आजे पण पंडित विनानुं जगत् नथी तेम सतिओना सत्वनी सिद्धिओ पण विद्यमान छे, पण एक आश्चर्य लागे छे के आ उत्तर आपनार मारा हृदयना गूढ अभिप्रायने घरना भोंयराना भंडार माफक केवी रीते जाणी शक्यो! वळी मारा हृदयना आनंदरुप समुद्रने उछ-

अधिक छो के वस्त्रने पशु विगेरे आपत्तिना समये उभा रहेशे के नहि, पण तमे तो सर्वत्र सर्वदा सहाय करनाराज छो ! जन्म मरण व्याधिना मोटा भयोथी जे मुक्त करनार छे तेनी विशेष स्तुति कया वर्णोथी करवी ! कारणके जगत्मां जेटला उपकारी छे ते सघाने माटे अकेक शब्द निर्माण थइ गयो छे त्यारे सर्व उपकारोने करनारा आपने कया नामथी बोलाववा ! हे प्रभो तमारा गुणो गावाने इंद्रो पण समर्थ नथी तेम मुनियो पण अशक्त छे अने केवळीओ पण जाणता छतां संपूर्ण वर्णवी शकता नथी तेम बीजाने समजावी शकवा अशक्त छे तो हुं मंदबुद्धिनी बालिका केवी रीते यथोक्त गुणोने वर्णवी शकुं पण बाळक जेम मातापिताने पोताना काला घेला बोलोथी अडधुंपडधुं समजावतां विचक्षण मावापो तेनुं समजीने यथायोग्य पूर्ण पाडे छे तेम आ मुग्ध बालिकाना बाळचेष्टाना कोमळ वचनोथी समजीने प्रार्थना स्वीकारी लेशो. वळी जो हुं तमने हमेशां ध्यावुं तेवी मारी बुद्धि कायम रहेतो आपदावाळी स्थितिने पण हर्षवाळी मानुं अने तमने भूली जाउं तो संपदावाळी स्थिति पण भवभ्रमणना कारणरूप होवाथी दुःखदायी मानुं छुं कारणके तमारी प्रसन्नतारूप परेलनी टोचे उभेलीने व्याधी रूप आपद केवी रीते व्याघात ( दुःख देवाने ) करवाने शक्तिवान थाय ! वळी मारा पिताने, बंधुने, मित्रने के अंतरंग स्नेहीना स्थाने तुंज छे, तो हे कृपानाम्घान! मारा मननी आपदाओ टाळीने मारुं पालन करो ! हे देव ! सर्वदा हुं तमनेज नमीश, तमारुंज स्तवन करीश ! अने तमनेज अंतरमां धारण करी राखीश के मारुं हृदय निर्मळ थवाथी कदाच मारो भविष्यनो पति प्रश्न करशे तोपण आपनी सहायथी तीक्ष्ण बुद्धिवाळी बनेली तेना उत्तरो संदल्पीं आपी शकीश.

जो के हुं गुरु सन्मुखे जाणी शकी छुं के संसार छकायमां धर्मज साररूप छे अने ते छ जीव निकायनी रक्षारूप विरति धन छे पण जेम निर्भागीने चिंतामणी रत्ननी अयोग्यता छे पण तेने किंचित आपेलुं भोजन महा आनंदने देनारुं छे तेम आ मुग्ध बालिकाने तेवी विरति

अधिक छो के वरुने यंत्रु विगेरे आपविना समर्थ उभा रहेशे के नहि, पण सर्वे सो सर्वत्र सर्वदा सहाय करनाराज छो ! जन्म मरण व्याधिना मोटा भयोथी जे मुक्त करनार छो तेनी विशेष स्तुति कया वर्णोथी करवी ! कारणके जगतमां जेटला उपकारी छे ते बधाने माटे अकेक शब्द निर्माण थइ गयो छे त्यारे सर्वे उपकारोने करनारा आपने कया नामथी बोलाववा ! हे प्रभो तमारा गुणो गावाने इंद्रो पण समर्थ नथी तेम मुनियो पण अशक्त छे अने केवळीओ पण जाणवा छतां संपूर्ण वर्णवी शकता नथी तेम बीजाने समजावी शकवा अशक्त छे तो हुं मंदबुद्धिनी बालिका केवी रीते यथोक्त गुणोने वर्णवी शकुं पण बाळक जेम मातापिताने पोताना काला घेला बोलोथी अडधुंपडधुं समजावतां विचीक्षण मावापो तेनुं समजीने यथायोग्य पूर्ण पाडे छे तेम आ मुग्ध बालिकाना बाळचेष्टाना कोमळ वचनोथी समजीने प्रार्थना स्वीकारी लेजो. वळी जो हुं तमने हमेशां ध्यावुं तेवी मारी बुद्धि कायम रहेतो आपदावाळी स्थितिने पण हर्षवाळी मानुं अने तमने भूली जाउं तो संपदावाळी स्थिति पण भवभ्रमणना कारणरूप होवाथी दुःखदायी मानुं छुं कारणके तमारी प्रसन्नतारूप महेलनी टोचे उभेलीने व्याधी रूप आपद केवी रीते व्याघात ( दुःख देवाने ) करवाने शक्तिवान थाय ! वळी मारा पिताने, बंधुने, मित्रने के अंतरंग स्नेहीना स्थाने तुंज छे, तो हे कृपानाथ्थान! मारा मननी आपदाओ टाळीने मारुं पालन करो ! हे देव ! सर्वदा हुं तमनेज नमीश, तमारूंज स्तवन करीश ! अने तमनेज अंतरमां धारण करी राखीश के मारुं हृदय निर्मळ थवाथी कदाच मारो भविष्यनो पति प्रश्न करशे तोपण आपनी सहायथी तीक्ष्ण बुद्धिवाळी बनेली तेना उत्तरो सहेलथी आपी शकीश.

जो के हुं गुरु सन्मुखे जाणी शकी छुं के संसार छकायमां धर्मज साररूप छे अने ते छ जीव निकायनी रक्षारूप विरति धन छे पण जेम निर्भागीने चिंतामणी रत्ननी अयोग्यता छे पण तेनुं किंचित आपेलुं भोजन महा आनंदने देनारुं छे तेम आ मुग्ध बालिकाने तेवी विरति

रुप महा संपदा लेवानी योग्यतां नथी अने कदाच लेवा इच्छा करशे तो पण महान मेरुपर्वत समान ब्रह्मचर्यव्रत पाळवाने अशक्त छे. तृष्णा अने आशामां व्यग्र थइ समुद्रमां जे डुबता माफक गोथां खाय छे तो तेने देश विरति रुप द्वीपमां आशरो आपवा योग्य गणशो तो वधारे सारुं छे. एम कही वारंवार वीतरागप्रभुना चरणमां नमस्कार करती एक दृष्टिथी जिनेश्वरने ध्याववा लागी. आ वखते तेनुं मन तद्दन प्रभुमय थई रह्युं हतुं कारण के अनाथनो आधार विश्वमां देव अने गुरुज छे!!!

आ प्रमाणे तन्मय थएली सुभद्रानी भक्तिथी संतोष पामेला चैत्यना अधिष्ठायक देवो जेओ वीतरागप्रभुनी सेवामां तत्पर हता तेओए अद्रश्यरुपे तेने सहाय करवावाळा थया तेथी पोताना मनमां नवी जाग्रतदशा थएली जोई पोताने पति जे प्रश्न करशे तेनो उत्तर आपवा समर्थ थएली प्रसन्न थइने देव तरीके वीतरागने अने पति तरीके सुरेंद्रदत्तने हृदयमां धारण करीने सखीओ साथे घेर आवी. जे सुभद्राए पोताना पिताने पोताना पति माटे वारंवार वांधो काढेलो, अने जेना माटे रात्र दिवस तेने खेद थतो लोकोना छूपा अपवाद सांभळवा पडता अने शुं करवुं? पुत्रीने केम समजाववी, घरनी आबरु केम राखवी, एवा विचार वमळमां गोतां खाता सागरशेठने ज्यारे सखीओए वधामणी आपी के तमारी सुभद्रा कन्या अत्यारे परणवा तैयार थई छे अने पोताना पति माटे समुद्रदत्तशेठना पुत्र सुरेंद्रदत्तने पसंद कर्यो छे त्यारे तेने अपूर्व आनंद थयो; जेम वेपारीनुं डुबी जवानी तैयारीमां आवेलुं वहाण सहिसलामत किनारे आववाथी जेटलो हर्ष तेने थाय तेवुं प्रफुल्लित हृदय सागरशेठनुं थई गयुं. सखीओने अने कुमारी कन्याने आशीर्वाद आपतो पिता योग्य जग्याए पोतानी पुत्रीनो संबंध जोडातो जोइ तेमां काळविलंब करतां कोई पण जातनुं विघ्न न आवे माटे पोताना चार प्रौढ स्नेहीओने बोलावी सर्व वातथी वाकेफ करी समुद्रदत्तने तेमने त्यां मोकल्या.



# प्रकरण ६ ठुं.

## भार्याना भरोंसे भूलनार धर्मदत्तनुं दृष्टांत.

एक युवान पुरुष पोताना पिता साथे कांइ वातचित करतो हतो तेमां पिता आग्रह करतो हतो के "हे पुत्र हवे तुं उमर लायक भणीगणीने घर चलाववा योग्य थयो छे, माटे तारे हवे लग्न करवुं जोइए कारण के पुरुषनी शोभा अने वंशनो वधारो स्त्री साथे लग्न करवाथीज थाय छे, पण जो उम्मर लायक थतां पण परणवानी ना पाडे तो गृहस्थावासमां रहेला पुरुष उपर कुचाळनो डर होवानो संभव थाय छे, एटलुंज नहि पण तेनी अने तेना बापनी आबरुने धोको पहोंचे के ते पुत्रमां के तेना पितामां के तेना वंशमां कांइक पण लांछन छे जेथी ते उम्मर लायक पुत्रने कन्या मळती नथी."

आवा छूपा अपवादो पिताने संभळाता त्यारे केटलाक अंतरंग स्नेहीओ आवीने प्रगटपणे लोकापवादने जाहेर करता तथा पुत्रने परणाववानी तावीद करवा सूचवता हता तथा केटलाक गृहस्थो तेनी कुशळतायी तथा उत्तम गुणोथी वाकेफ हता ते पोतानी उम्मर लायक कुमारिकानो संबंध तेना पुत्र साथे जोडवा वारंवार कहेवडाववा छतां पिताए पुत्रनी सलाह पूछतां तेणे अनेक बहानां काढी पोतानुं सगपण थतुं अटकाव्युं हतुं. बापे घणाकाळ सुधी धीरज स्वमी पण समुद्र गंभीर छतां पण चंद्रने ज्यारे जुए त्यारे तेनो प्रेम उछळी आवतां मळवा उत्सुक थई पाणीने केटलेक दूर सुधी जमीन उपर मोकले छे तेवी रीते पितानी धीरज पण पुत्रना प्रेमथी हमणा खसी गई हती तेथी ज्यारे चार प्रहरथी पिता पासे आवी प्रार्थना करवा लाग्या के तमारा कुटुंबनो संबंध अमारा मित्रना कुटुंब साथे जोडाय ते सर्वोत्तम छे ते दृष्टमां सावार जेवुं छे माटे तमे दरेक बातनो विचार करी अमने जवाब आपो.

आ चार आवेला गृहस्थोने सागरदत्ते पोतानी पुत्री सुभद्रानुं सगपण समुद्रदत्तना पुत्र सुरेंद्रदत्त साथे करवा मोकल्या तेज अहीं आवी समुद्रदत्तने प्रार्थना करता हता. पूर्वे आवेली कन्याओ तथा तेमना पिताओनी प्रशंसा जेटली हती तेना करतां आ कन्या तथा तेना पितानी बेल सर्व प्रकारे चडतो हतो अने आवी कन्यानुं लग्न पोताना पुत्र साथे थवानो पुत्रनुं तथा पोतानुं पूर्ण भाग्य लेखीने जाणीने आवेल शेठे त्याम बोलावीने ते सगपणमां हा पाडवा ते आवेला गृहस्थोनी समक्ष सुरेंद्रदत्त पुत्रने कहेण पाडवा जेवो देखाव कर्यो हतो.

सुरेंद्रदत्त अत्यार सुधी पितानी आज्ञाने परमेश्वरनी आज्ञा समान मानतो हतो तेमना वचनने उलंघवुं ए मोटुं पाप समजतो हतो तेथ तेणे कदापि पण बोल्यो नहोतो तेमनुं वचन हाथ जोडी माथे चडावी कबूल करतो हतो अने तेथीज पूर्वे पिताने पोताना लग्न माटे ना पाडवा जुदा जुदा बानां काढया हतां पण ज्यारे आजे पिताए त्याम [illegible] [illegible] पाडी [illegible] आ लग्न [illegible] ओशए. त्यारे तेण विचार कर्यो के जो ना पाडुं तो पितानुं वचन उलंघन थाय छे. हा पाडुं ना मारी [illegible] अथवा तेवी रीते परीक्षा कर्या [illegible] [illegible] ! हे शुं करुं तेथी [illegible] [illegible] हा पाडवा के नहीं ना पाडवो त्यारे पिताए [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र [illegible] [illegible] के हे वत्स पुत्र ! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुत्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (पुत्रने)
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

करतां शूळीए चडवुं वधारे सारुं छे ? जो के मोहने वश थएला युवानो विषयरसमां लुब्ध थइ परणवानुं नाम सांभळीने अति आनंद पामे छे छतां पण हुं ना पाडुं छुं तेनुं कारण एटलुंज छे के स्त्री जो उद्धत स्वेच्छाचारी अने दुर्वचनने प्रगट करनारी मळी होय तो महान पुरुषोनी सभामां पूजातो पंडित पण घरमां कुंभारजाना हेलशथी कंटाळी बिलाडीथी उंदर माफक डरतो रही बुद्धिहीन तथा शक्तिहीन थाय छे. तेटला माटे हे पिताजी मारुं बाळकनुं कहेलुं एक दृष्टांत आप कदाच जाणता हो तोपण ध्यानमां लेवा फरी संभळावुं छुं.

ज्यां अमूल्य कींमतनां अचेतन रत्नो थाय छे तेना करतां पण अधिक कींमतवाळां सचेतन हाथी घोडा स्त्री विगेरे रत्नो पाके छे तेवा सचेतन अचेतन रत्नोथी वींटायला पुरुषना समूहथी विशाळ नगरी पण संकुचित थएली लागे छे तेवी बनारस नामनी नगरीमां महाबल नामनो राजा राज्य करे छे, जेना शत्रुओ तेनो ताप खमीने पोताना राज्यमहेलो तथा सेवा करनारी प्रजाने त्यागीने जंगलना झाडोनी शीतळ छायामां रहेवुं वधारे पसंद करता हता. ते महाबळ राजाने अति माननीय अने धनवडे धनेशनी तुलना करतो यशोधर नामे शेठ हतो ते शेठने मनोरमा नामनी मनने रमणीयता पमाडनारी अर्धांगना हती तेना शीलादि अभ्यंतर गुणोथी तथा रतिने तीरस्कार करवा सरखा रुपथी ते शेठ तेनामांज रक्त थई गृहस्थने योग्य ब्रह्मचर्य व्रत पाळवा तैयार थयो हतो, तेमना सुबुद्धि गुणना जोडाथी जेम विवेक पुत्र उत्पन्न थाय तेम तेमने घणो काळ संसारमां निर्वाह करतां पुत्रनी उत्पत्ति थई अने धर्मनुं आराधन करवाथी ते उत्पन्न थएलो हतो तेटला माटे तेनुं नाम धर्मदत्त पाड्युं हतुं अने धर्मदत्तने जेवुं रुप तेवा गुण प्राप्त थवा माटे कलाचार्य पासे घणोकाळ राखी सर्व प्रकारनी कळाओ भणावी प्रवीण कर्यो हतो अने युवावस्थामां सुरूपा नामनी सुंदर रुपवाळी कन्या साथे लग्न करी आप्युं हतुं. जेनी साथे धर्मदत्त विलास

करतां भूमिना देव माफक पोताने घरनी चिंता सोंपीने निश्चिंतपणे संसारमां काळ सुखथी निर्वाह करतो हतो.

एक समय घोडाना फेण सरखां उज्वल वस्त्र पहेरी सोनुं मणि माणेक विगेरेथी बनावेलां अमूल्य अलंकारोने पहेरी उत्तमजातिना अश्वने रेवालमां चलावी राजमार्गे धीमेधी घोडा उपर बेसीने जतो हतो. तेना अंगनी सुगंधीथी आश्चर्य पामेला अने उत्तम वस्त्राभूषणथी अलंकृत थयेला देवांगीकुमारने जोइ तेओनी दृष्टि तेना उपर गोखानी मांहोमांहे टोळे मळी तेओ वात करवा लाग्या. धीमेधी चालनारा कुमारे पण तेओनी वात उपर लक्ष देवा मांड्युं. आ वखत केटलाको जेओ गुणग्राही हता अने धर्मवडे जेओनुं अंतःकरण कोमळ हतुं तेओ बोलता हता के आ पुण्यवान् कुमारे पूर्वे एवुं मरळ पुण्य बांध्युं छे के संसारमां जे उत्तम सुख कहेवाय ते सघळुं यौवनवय शक्ति अने सुंदर स्त्री विगेरे प्राप्त थयां छे. अने वळी इंद्र समान वय बेठेलो होवाथी निश्चिंतपणे मनगमता विलासो यथारुचि निरंतर देवकुमार माफक भोगवे छे ते वखते केटलाक जेओ धर्मना रहस्यथी निपुण हता तेओ बोलवा लाग्या के अरे ! भाइओ ! तेनी स्तुति न करो ! ते तो महापापी छे के उपा- र्जन करी पैसा कमावी लक्ष्मी जे माता समान तेने ते भोगवे छे !!! अने कदाच तमने वखाण करवां होय तो तेना बापनां करो के जेणे कमाता एवा पुत्र थया छतां तेनुं ते पोषण करे छे अने हमेशां ढोर माफक निश्चिंत करता रहे छे कारण के चंद्रने पण बुध नामनो बालक पुत्र छे तेने गृह नथी ले छे !! ( आ मौखिक दृष्टांत कहेला छे ) आ वचनो तेना कटाक्ष जेवा हता त्यारे केटलाक तेना गुणनी स्तुति करता हता पण मात्र मनने मोहनी स्तुतिथी जेटली तीव्र वेदना तेना करतां एक पण निंदानुं वचन वधारे दुःखदायी कहेवाने रिति नाममात्र थाय छे. तेथी ते पण चाहिये याने घरे मिजाजनुं मूकी तरत ते वचनो कहेता वखत उपर जे विचार करतो

दिवसो गुजारतां केटलाक दिवस वीत्या पछी मार्गमां वररुचि नामनो ब्राह्मण मळ्यो. शेठपुत्र वार्त्तानो अने विद्याकळानो शोखीन होवाथी वररुचि ब्राह्मण साथे वार्ता करतां बन्नेनुं दील मळी जवाथी मार्ग सहेलाइथी कपावा माटे कांइ पण रसिक कथा कहेवा वररुचिने विनति करवाथी तेणे उत्तर आप्यो के विलासो अने वातोनो रस लेवामां वित्त वापर्या विना इष्टसिद्धि थती नथी माटे कंजुसाई मूकीने ५०० पांचसो सोनामोहरो प्रथम भेट कर एटले रसिक वात संभळावुं!

कमावानी शक्तिथी द्रव्यने तृणसमान गणता शेठपुत्रे तुर्त पांचसो मोहोर आपवाथी ब्राह्मणे कथा संभळावी के "पोतानुं हित इच्छता माणसे नीच माणसनी सोबत न करवी" आटलुं कही चूप रहेवाथी शेठपुत्रे कह्युं के पछी शुं? त्यारे ब्राह्मणे कह्युं के वात पूरी थई गई, त्यारे ते बोल्यो के बाळकोने पण हसवुं आवे तेवुं नानकडुं वाक्य कही वात संभळाव्या विना पांचसो मोहोर मारी पासेथी छिनवी लीधी छे माटे कंइ पण रसिक बीजी वात कही मारुं मन संतोष कर! ब्राह्मणे कह्युं के मित्र अने हित वचनथी अमूल्य लाभ तने थशे तोपण तने जो बीजीज वात रस गळेने कडकडा पडे तेवी सांभळवी होय तो हजार मोहोर तुर्त मने आप! कथाना रसिक अने कमावामां समर्थ श्रेष्ठिपुत्रे तुर्त अर्पण करी. पछी हजार मोहोर स्वाधिनमां लेइ ठावके मोढे ब्राह्मण बोल्यो के "बुद्धिवान् पुरुषे नारीनो विश्वास न करवो."

तेथी साथे समजाव्युं के आ पंदरसो सोना मोहोरोथी मेळवेली बे नानकडी शीखामणोथी "तुं खेद पामतो नहि" पण "हीराना हार माफक" तेने "कंठमां मूकी राखजे" तो भविष्यमां बहु काम लागशे. आ अमूल्य शीखामणो अनुभव विना समजाय तेवी न होवाथी बाळबुद्धिनो धर्मदत्त मनमां आक्षेप करवा लाग्यो के आ ब्राह्मणना वेशमां कोइ पक्को धुतारो छे के जेणे वात करवाने बहाने मारी पंदरसो सोनामोहोर ठगी लीधी छे! अथवा तो ब्राह्मणोज जन्मथीज लोभीया

अने दरिद्री होय छे तथी तेओ धनने माटे तथा भोजनने माटे सदा आतुर होवाथी तेओ समय शोधी मारा जेवा भोळाने भरमावी फंसा-वाने पोतानुं कार्य सिद्ध करी ले छे!!!

हवे आपेलुं धन पाछुं मागवा माटे पण मने शरम लागे छे! खेर बन्युं ते खरुं! तेनुं परभवनुं देवुं हशे ते चूकवी आप्युं! तेटले-थीज मारो छूटकारो थयो. एम विचार करी तेनी साथे बधारे वात न करतां अनेक प्रकारना विनोद करतां आखरे श्रीपुर नगरनी सर-हदमां तेओ आवी पहोंच्या. त्यारे साथेना माणसोने तथा पोताने शहेर बहार रहेवुं तेणे अनुकुळ जोयाथी मजबुत तंबु नंखावी तेमां पोतानो मुकाम राख्यो. त्यारे सोबती वररुचि ब्राह्मण मधुर स्वरे बोलीने कहेवा लाग्यो के हे मित्र! हुं तारो अंतःकरणनो हितचिंतक छुं. आज मारुं गाम छे वररुचि मारुं नाम छे विदेश धन कमाइ धाकीना वखत-तमां अहीं सुखथी रही दिवस गुजारुं छुं अने मारी शीखामण हर घडी याद राखजे छतां जो तने प्राण संकटनुं पण कष्ट आवे तो मने यांद करजे माराथी बनता प्रयत्ने तने मदद करीश! वळी आपणा स्नेहनी यादगीरी माटे आ मंत्रथी पवित्र करेला यवोने ग्रहण कर, ते उत्कृष्टा पुण्यना फळनी माफक भीनी माटीमां वावतां तुर्त उगी नीकळे छे अने तेने अंकुरा पण आवे छे एम कही तेने यव आपी ब्राह्मण गयो. शेठपुत्रे ते यव (जव) स्त्रीने सोंपी दीधा.

एक दिवस शुभ मुहुर्ते भेटणुं लेइ राजाने मळवा गयो. पहेरीगरे राजानी परवानगी मागतां राजाए शीघ्र लाववा आज्ञा करवाथी राज-सभामां धर्मदत्त गयो. राजाए तेनो नमस्कार तथा भेटणुं स्वीकारी तेने योग्य आसन बतावतां त्यां कमळमां जेम हंस बेसे तेम बेठो. राजा तथा श्रेष्ठिपुत्रने मळवा स्वभावथी वातचीत करतां अतिशे आनंद थयो. राजाए तेनी वातोथी तथा भेटणाथी संतोष पामी तेना मालनुं दाण (जकात) माफ कर्युं तथा मधुर वचने तेने हमेशां आववा आग्रह

कर्यो. तथा तेना जेवो भाग्यवान् बहार रहे ते सारुं नहि माटे त्रण माळनो सुंदर महेल शहेरना राजमार्गमां आवेलो रहेवा माटे आप्यो. त्यां रही वेपार करतां धर्मदत्तने करीयाणुं लेवा वेचवा कारणे जतां गंगदत्त नामना लफंगा माणसनी सोवत थइ. आ बंनेनी सोवत केळ अने बावळ, राहु अने चंद्रमा, अग्नि अने वृक्ष जेवी विपरीत अने दुःखदायी हती. तेना दुर्गुणो केटलाके तेने कही बताव्या छतां पण जेम समुद्रमांथी नीकळेला विषने महादेव छोडता नथी तेम तेणे तेनी सोबत छोडी नहि. तेम घरमां आवतो अटकाव्यो नहि.

राजाओनी सभामां केटलीक बाबतो बोलतां खास विचार करवो जोइए, स्त्रीनो भरोंसो न करवो जोइए. कुटील माणसनी सोवत नहीं करवी जोइए, कोइ पण जातनी हारजीत न करवी जोइए विगेरे नीतिनी शीखामणो जो दरेक लक्षमां राखी संसारमां वर्त्ते तो दुःखनो प्रसंग न आवे; पण प्रमादथी, भोळापणाथी पोतानी बहादुरी के उदारता बतावबाथी घणी वखत हद बहार वर्त्तन थतां माणस माठा कष्टमां आवी पडे छे. त्यार पछी दुःखी अवस्थामां कायर थएलो पोताना आत्माने निंदे छे के में वडीलोनुं, नीतिकारनुं अने हितस्वीओनुं वचन न सांभळ्युं तो आ दुःखमां पडवानो वखत आव्यो छे आवुं घणाने थाय छे तेम अहीं धर्मदत्तने थवा प्रसंग आव्यो. दुष्ट मित्रने घरमां न पेसवा देवा माटे ब्राह्मणे अमूल्य शीखामण आप्या छतां हितस्वीओए तेनी कुचाल समजाव्या छतां भोळा धर्मदत्ते तेने घरमां आववा दीधाथी प्रथम धन ठगीने लेतो हतो अने छेवटे एकांत प्रसंग मळतां तेनी रुपवती भार्याना रुपमां लीन थइ कुकर्म पण करवा लाग्यो अने छेवटे धन तथा ललनानो समूळो मालिक थवा स्त्रीने समजावी पोताना पक्षमां लइ तेने मारवा संकेत करी राख्यो. लोभ ए सघळां पापोनुं मूळ छे, तेमां ललनानो प्रेम संपादन थयो त्यां शुं बाकी रहे? तेम आ अधम मित्र तथा तेनी कुरुपा सुंदरी तेने कोइ पण रीते मारवा के ठगवा

तैयार हतो पण प्रसंग विना शुं करे ! तेथी तेवा अवसरनी राह जोतो हतो ! एक दिवस राजसभामां आश्चर्य दुनियामां जे जोयां होय ते कहो एम वात चालतां ज्यारे श्रेष्ठिपुत्रने पूछयुं त्यारे ते बोल्यो के नजर बांधीने मदारी खेल करे के इंद्रजाळनो चमत्कार बतावे ते हुं तो पसंद करतो नथी, पण मारी पासे चित्रवेलो जेवा प्रभाविक जव छे के वावतां तुर्त फळदायी थाय छे. राजा तथा सभाए तेथी आ आश्चर्य पामी माथुं धुणाव्युं ते वखते लफंगो मित्र जे राजसभामां धर्मदत्त साथे आवेलो ते प्रसंग मळेलो जोइ बोली उठया के महाराज ! आप शाणा थइने तथा आवा विद्वान सभ्यो आपनी पासे हाजर छतां आवा बाळ-चेष्टा जेवां गपवाळा वचनने सत्य मानी स्वीकारी लो छो तेने माटे मने घणो अफसोस थाय छे ! तेटलुं बोली बंध रहेतां राजाए श्रेष्ठीपुत्र सामुं जोइ तेनो उत्तर मागतां ते बोल्यो के ते वात सत्य छे त्यारे गंगदत्त बोल्यो के असत्य छे.

आम परस्पर वाद थतां बन्नेए हठ न मूकवाथी गंगदत्त बोली उठयो के हे राजन ! हवे बीजुं कंइ वधारे कहेवामां सार नथी जो ए कहेला जव लावी आपी सभानी खातरी करे तो मारुं धन सर्वस्व हुं तेने आपी देवा तैयार छुं पण जो ते न बतावे तो तेना घरमांथी मारा बे हाथमां माय तेवी वस्तु हुं ग्रहण करी लउं. बंने जणा वादपर आवी लाग्याथी धर्मदत्ते पण ते वात स्वीकारी अने सभा बरखास्त थइ पण काले शुं थाय छे ते जोवा सर्वे सभासदो आतुर थइ रह्या हता. भोळा दिलनो धर्मदत्त स्त्रीना भरोसे रही सीधो वेपार माटे बहार गयो त्यारे अधम गंगदत्त तेना घेरे जइ स्त्रीने फोसलावी सर्वे वात कहीने जव लेइ गयो तेना बदले सादा जव स्त्रीए गोठवी दीधा. सांजना घेरे आवीने धर्मदत्ते स्त्रीने राजसभामां बनेली वात कही बतावतां ते कुल-टाए कृत्रिम ढोंग करवा मांड्या के हे स्वामिनाथ ! तमे शाणा छतां आवी विना विचारनी प्रतिज्ञा शा माटे करी ! ढोंगी धुतारा ब्राह्मणना

जोइ अत्यंत अफशोष करवा लाग्यो. सर्वे लोको तेना माटे बोलता हता के अधम मित्रनी सोबतनुं फळ हवे साक्षात भोगवी ले! तेथी कोइने वात करवानो विश्राम पण न होवाथी शोकसमुद्रमां गरकाव थई गयो तेवामां तेना पुण्योदयथी वररुचि ब्राम्हण मित्र तेने सांभळी आव्यो; तेनुं घर शोधी तेने सघळी वात करी. ब्राम्हण तो मथमथीज तेना भोळापणाथी ते फांसामां फस्या विना हितनी शीखामण अंगीकार करवानो नथी माटे ते प्रसंग आवेलो जाणी तेनी खावेली मोहोरोनो तथा मित्रताना प्रेमथी उमंग लावी तेने उपकारने वदले धीरज आपी तेनो उपाय बताव्यो त्यारे धर्मदत्त तेनो मोटो उपकार मानी रजा लेई नीकळ्यो.

बीजे दीवसे गंगदत्त राजाने विज्ञप्ति करवा लाग्यो के, हे प्रभो! पधारो अने मारी अभिवांछित वस्तु अपावो! जो के ते मारो मित्र छे तो पण वेपारना वहेवारमां मळेलो नफो मूकी देवो ए कोइ; वाते बने तेवुं नथी तेवामां धर्मदत्त पण तेडवा आवी राजाने कहेवा लाग्यो के पधारो महाराज! हुं तेना देवामांथी मुक्त थाउं! एम बन्ने जणानी विज्ञप्तिथी राजा तथा सभासदो तेमना घर तरफ आवे छे त्यारे धर्मदत्ते ब्राह्मणे आपेली शिखामण प्रमाणे दोडतो दोडतो घेर जइ स्त्रीने सूचव्युं के उठ उठ राजा विगेरे आपणा घेरे आवे छे तेमनुं योग्य सन्मान कर! स्त्री पण बेवडा हर्षमां आवी हती तेणे गंगदत्तने छूपी मार्थना करी हती के रखे तुं धननो लोभी थइ आ शेठना हीरामाणेकना भंडारने हाथ लगाडे! नहितो मारी पूरी कमबख्ती थशे.

गंगदत्ते कबुल करेलुं होवाथी हवे थोडा काळमां इच्छित पुरुषनो समागम राजानी समक्ष थशे ते माटे उल्टथी मागेली वस्तु शेठना मोढा आगळ स्त्री मुकवा लागी तेवामां शेठे उपरथी गालीचा विगेरे मंगाववा स्त्रीने उपर मोकली अने ते उपरथी पाछी नीचे आवे ते पहेलां शेठे नीसरणीने बाजुए मूकी दीधी. ते स्त्री ज्यारे नीचे उतरवा उल-

पोते प्रिय मानेली अर्धांगनानी कुचाल तथा तेने आवी अत्यंत क्रूर शिक्षाथी खेद पामी वररुचि पासे पाछो जतां वररुचि धर्मदत्तने बोध देवा लाग्यो के, निर्मळ बुद्धिवाळो पण कुलटाथी क्लेश पामे छे, अने चंद्र अमावास्यामां जतां कळारहित थाय छे तेम अधम मित्रनी सोबते गुणथी भ्रष्ट थाय छे अने ते निर्मळ जळ क्षारनी भूमिमां जवाथी खारुं थाय छे, वळी विषनी वेल तो पासे वेटेलांनेज मारे छे पण कुलटा स्त्रीनुं दूर बेठे पण ध्यान करवाथी आ लोकमां अपमान अने कलंक देवडावे छे त्यारे परभवमां दुर्गति अपावे छे माटे तेनाथी जेओ विरक्त थई तेना मोहमां न फसातां तेना नचाव्या नाच्या नथी तेओज खरेखर धन्यवादने योग्य छे! आ प्रमाणे दीधेली शिक्षाने हृदयमां रचावी सद्मति माटे सप्तक्षेत्रमां द्रव्य वापरी सुमति गुरु पासे दिक्षा अंगीकार करी अग्यारे अंगोने भणीने तपस्यावडे काया गाळीने तेजस्वी मुखवडे दीपता लोकोने प्रतिबोध देता गुरुवर्यनी आज्ञाथी काशीदेशमां आव्या. त्यां आवेलाने उपदेश दई अरिहंत प्रभुए प्रकाशेला धर्ममां अनेक भव्य प्राणीने स्थिर करतां विदेश गयेला पुत्रनी कांइ पण खबर न मळेली होवाथी वृद्ध मातापिता विना तपस्याए काया गाळी नांखी निरंतर अफशोष करतां हतां. तेओ ज्ञानी गुरुने पूछवा लाग्या के, हे भगवन्! अमारा पुत्रनी तमने कांइ खबर होय तो कहो! पुत्रे वैराग्यमय देशनावडे धर्ममां स्थिर करी पोताने तेमना पुत्र तरीके जणाव्यो. मुनिराजनुं रुप छतां अंगनां चिह्नोथी ओळखी मावापे आम करवानुं शुं कारण छे ते पूछतां सर्वे हकीकत समजावी तेओने संसारनी असारता समजावी व्रत आपीने ते त्रणे जणां तपस्यावडे कर्म इंधन बाळीने मोक्षमां गयां.

# प्रकरण ७ मुं.

## सुरेंद्र तथा सुभद्रानुं पाणिग्रहण.

आ वात कही सुरेंद्रदत्ते पिताने कह्युं के मारी परीक्षा कोइ स्त्रीनेज परणवा हुं खुशी छुं माटे आग्रह न करो! त्यारे तेना पिताए कह्युं के हे पुत्र! आवा सागरदत्त शेठनो संबंध तथा सुभद्रा जेवी पुत्रवधुने हुं फरी केवी रीते मेळवीश माटे तुं अमारुं कीधुं मानीने हा पाड! आम परस्पर पुत्र पिताने वाद थयलो पाछो लग्न करवामां कंइ विशेष फायदो नहि जाणीने उठी गया. अने सागरशेठने सघळी वात संभळावी विवाह थवामां वांधो बताव्यो.

पण सुभद्राए तेओने शुं वांधो छे! ते पूछवाथी तेना कहेवा चार प्रश्नो संभळाव्या.

निश्चय स्नेहवाळो कोण छे! निरंतर प्रकाश कयो छे! सर्वोत्तम शुं छे! कयुं रुप कायम रही शके छे!

गंभीर रहस्यवाळा परमार्थना विषयना प्रश्नोने सांभळी तेना उत्तरो यथायोग्य आपवाने पोताने अशक्त जाणीने ते रडती रडती बोलवा लागी हे सखीओ मारी जे शंका हती ते साची पडी छे हवे हुं शुं करीश! हुं तेना उत्तरो केवी रीते आपीश! अने उत्तर आप्या विनानी मुग्ध स्त्रीने ते केवी रीते अंगीकार करशे. आम शोकमां डुबेली स्त्रीने पूर्वे वरदान आपेला जिनराजना अधिष्ठायक देवोए तेने आशीर्वादथी संतोष करी कह्युं के अमे तारा सहायक छीए, रड ना; पछी देवोनी सहायथी तेना उत्तरो तेने स्फुरी आव्या के निश्चय स्नेहवाळो धर्म छे! निरंतर प्रकाश ज्ञाननो छे! विद्या सर्वोत्तम रत्न छे! अने कायमनुं रुप शील छे एवा उत्तर सखीना हाथमां आपी पोताना पिता मारफते सागरदत्तने ते पत्र पहोंचाडयो. सागरदत्ते पण मानना मोजन मालक पुत्रना परणवानो वांधो दूर थयलो जोवाथी हर्षमां आवी ते पत्र सुरेंद्रने आप्यो. अने पत्र साथे मतिस्मर्नी पुत्रवधुनी आवी विच-

सण बुद्धि जोइ आनंद दर्शावी पुत्रनी इच्छा जाणवा मागी. मळेला यथार्थ उत्तरोने वांची शेठपुत्र पण विचार करवा लाग्यो के आवी बुद्धिवान् कन्याने पण परणवा ना पाडीश तो मारा जेवो बीजो नर पशु कोण छे ?

अंगितचेष्टाथी तेनी इच्छा जाणी पुत्रवधु तरीके सुभद्राने स्वीकारवानुं सागरदत्त शेठने जणाववाथी लग्न निरधार्युं. बचला दिवसो आंगळीना वेढे गणीने परणवा आतुर थएलां सुरेंद्रदत्त अने सुभद्रा दिवस गुजारवा लाग्यां. बन्नेना घेर लग्ननी तैयारी थवा लागी, लग्नना दिवसे उत्तम रीतिए विधिपूर्वक स्नान करी वस्त्रालंकारवडे कायाने शणगारी सगांवहालांने साथे लई समुद्रदत्तनो पुत्र सागरशेठने त्यां परणवा आव्यो. शेहेरना मध्य भागमां आडंबरथी वाजतेगाजते फरी ज्यां सासराना घर आगळ आव्यो के सखीओथी घेरायली पतिने प्रश्न करवा लागी के हे अलबेला स्वामी! अलंकारथी शोभता पुरुषने प्रेमदा पाहे छे माटे उत्तर आपो के क्रूर कोण ? पृथ्वी तथा पाणीमां चालनारुं कोण ? सुतेलां कमळने जगाडनारुं कोण ? सुरेंद्रे जवाब आप्यो के, अहिमकर. साप क्रूर छे! मगर पृथ्वी तथा पाणी बंने जग्याए चाले छे! कमळने जगाडनार सूर्य छे! पण साथे मारा प्रश्ननो उत्तर आपो के केवो गुरु संदेहना समूहने दूर करे ? गरम लुथी थाकी गयेला माणसोने सजीवन करनारुं औषध कयुं छे? सुभद्राए उत्तर आप्यो के घनागम पाछुं सुभद्राए पूछयुं के दीवस छतां पण कमळ शा कारणे संकोचाय छे! पतिए कह्युं के सरोवरमां स्नान करती सुंदरीना सुंदर मुखनी प्रभाथी तेने चंद्रोदय मानी कमळ बीडाइ जाय छे. आम प्रथम बंनेए परोक्ष परीक्षा करी श्रीपेली ते हवे साक्षात् परीक्षा करी अरस्परस निपुण जाणीने बंनेनुं मन संतोष थवाथी अति उल्लासथी बंनेए सगां समक्ष विधिपूर्वक लग्न थतां एकबीजानो हस्त स्वीकार्यो अने ससराए कोटी सुवर्ण धन आप्युं के राजाने प्रजा पासे कर ग्रहण करवाथी पण तेटलुं धन प्राप्त थतुं नहोतुं!

बालकोने ज्यां सुधी कोइ पण प्रकारनी ग्लानी मालुम न पडे त्यां सुधी वर्तमान सुखमां मूढ थइ अहंकारमां आवी धर्मक्रियाने वेगळी मूके छे. पोताने सुखरूप गणे छे मारुं सुख निश्चल छे एवुं हृदयमां मानी ले छे. अने ज्यारे पापनो उदय पूर्ण थाय त्यारे एकदम दुःख आवी पडे छे त्यारे बंगाळ मारक पोताने मरणथी पण इच्छो मानी धिक्कार करवा मंडे छे. पण त्यां नथी हाथ अफसोसमां घरनां धंधा विसारी मूके छे. उत्तम स्वादिष्ट भोजनने पण कडवा विष समान माने छे आवा संकटो दुर्भाग्य जोइए छीए पण अनुभवता छतां पण मोहदशानी प्रबळताथी भूली जवाय छे. तेम अहीं शुभदत्तने पण पापनां उदय थवा मांड्यो छे तेथी घरमां शान्ती नथी घरनुं काम छोडी दीधुं छे सर्वाओने उत्तर आपती नथी घरनां काम करनाराने पण काम बतावती नथी खावुंपीवुं विसारी दीन थइ जाणे कोइ वहालानुं अकाळमृत्यु थयुं होय तेवो शोक धारण करीने मुंगी थइ सांजना वखते बेठी छे त्यारे सघळां दीनस्वरथी तेने बोलाववा करे छे पण कोइनुं मानती नथी तेम उत्तर पण न आपवाथी सघळां रहे छे तेवा समये भोजन समये दुकानेथी शेठ घेर आवी जुए छे तो शून्य अरण्य जेवुं पोतानुं घर जोतां तेने धास्तो पड्यो.

धीमे धीमे उपर जइ जोतां करुणाजनक देखाव देखी तेनी आंखमां पण आंसु आवी गयां. कोइ पण जवाब आपतुं न होवाथी पोतानी प्रेमदा पासे जइ आ शुं छे आ शुं छे एम अनेकवार प्रश्न करतां पण ते स्त्रीए जवाब न आपवाथी कोमळ वचने शेठ कहेवा लाग्या के हे प्रिये ! कदी पण तें मारायी जुदाइ राखी नथी तो आजे तारा भयंकर दुःखने पण कहीने मने शा माटे तेमां भागीओ करती नथी ? शुं मारुं कोइए अपमान कर्युं छे ! कोइए काइं सामो जवाब आप्यो छे के अनिष्ट चीजुं कार्य थयुं छे! जे थयुं होय ते शीघ्र बोल! मारा प्राण पण तारा दुःखने दूर करवा माटे देवा तैयार छुं ! माटे विलंब न कर!

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

# प्रकरण ९ मुं.

## धम्मिलकुमारनो जन्मोत्सव.

उत्तम जीवोनो क्रोध अति अल्प होय छे अने तेओनी वृत्ति सर्वे माणसोनुं भलुं करवानी होय छे कदाच कोइ जीवतुं भलुं करतां तेनाथी सुखमां लीन थवाय अने ते संसारीसुखमां लीन थइ पोताना सुखना बीज समान धर्मने तेनाथी भूली जवानो होयतो तेने किंचित शिक्षा करी पाछां ठेकाणे लावी तेने धर्ममां जोडे छे अने आपणे पण जाणीए छीए के बाल्यपणामां आपणां मातापिता आपणने अनेक प्रकारे खावापीवानुं तथा पहेरवाओढवानुं तथा सूवावेसवानुं आप्या छतां पण आपणे जो रमतमां ओटाइ भणवा न जइए के कोइने मारीए के कोइने दुःख दइए तो आपणां मावाप आपणने धमकावीने के थोडी शिक्षा करीने आपणने ठेकाणे लावी पाछां प्यार करतां जोइए छीए. वळी निशाळमां भणावनारा शिक्षको पण पोताना विद्यार्थीओने ठेकाणे लावता मालम पडे छे तेम सर्वे माणसोनो रक्षक राजा पण आपणने किंचित् शिक्षा के धाक बतावीने न्यायमां चलावे छे पण मातापिता के शिक्षक राजाओने पोतानी प्रजा उपर अंतरंग द्वेष होतो नथी तेवी रीते वीतरागप्रभुनी भक्ति करनारा अधिष्ठायक देवो पण अत्यंत दयाळु होय छे तेओए सुभद्राने शिखामण देवा माटेज तेनो गर्भ रोक्यो हतो तेओए तेने ठेकाणे आवेली जोइ तेना उपर अत्यंत करुणा लावी तेनो गुन्हो माफ करी तेनो गर्भ प्रकट कर्यो, अने गर्भनी मुदत पण लगभग पूरी थतां तेनो चेहेरो प्रभातनी माफक देदीप्यमान देखावा लाग्यो. ज्यारे सुभद्राए गुरुवर्य पासेथी उठीने जिनमंदिरमां जइ वीतरागप्रभुनी स्तुति करी देवोने खमावी पोतानो गर्भाशय दूर कर्यो ते गुरुवर्य पासे सुरेंद्रदत्ते धर्मोपदेश सांभळी गुरुवर्यने प्रणाम करी घेर आवी

विशेष प्रकारे दान देवा मांडयुं तथा अनाथोने आश्रय, गरीबोने अन्नादिनु पोषण, रोगीओने दवा अवाचक अंग पशुपक्षीनुं आश्रय स्थान (पांजरापोळ) जिनमंदिरमां अनेक प्रकारे महोत्सवो करवा मांड्या ते वखते शुभदाननो चेहेरो विकस्वर तथा तेना गर्भनां प्रकटपणानां चिह्न देखी पोताना वंशनुं भूषणरूप रत्न पोतानी स्त्रीने प्राप्त थशे तेथी पोताना हृदयमां पण तेने हर्ष मातो नहोतो. गुरुवर्ये कहेला धर्मनो आवो तात्कालिक फायदो जोइ तेमना दृष्टांतथी घणा जीवो धर्ममां आस्था राखवावाळा थवा लाग्या.

पुत्र जन्म ए दुनियामां गृहस्थोने अति आनंदनुं कारण छे. भूख्याने भोजन, तरस्याने पाणी, थाकेलाने आरामनुं स्थळ तापे तपताने सुंदर बगीचानो विश्राम सूर्य तपेलाने शरद्ऋतुना चंद्रनी कौमुदिनी रात्रि मळतां जेम रोमराजी विकस्वर थाय छे, आत्मा शांत थाय छे अने आनंदमां आवी तेमां सहायक थनाराने पोतानी पासे जे होय ते आपी दे छे, तेम पुत्रनो जन्म थतां मातापिता हर्षमां आवी अनेक प्रकारे पोताना धननो सदुपयोग करे छे पण श्रीमंतोना के राजाओना पुत्रना जन्मनी खुशाली तो जुदी तरेहनी होय छे.

हजारो तेमना स्नेहीओ यथाशक्ति भेटणुं लावी पुत्रना मातापिताने आपी पोतानो मित्रभाव दर्शावे छे त्यारे हर्षमां आवेलां मातापिता ते आवेल द्रव्य करतां असंख्यगणुं द्रव्य पोताना घरमांथी काढी तृण माफक गणी मों माग्युं दान गरीबोने आपे छे ते वखते मागतां भूल्यो, अने अवसर चूकया ते निर्भागीज गणाय छे. जे रंको दमडी पासे न होवाथी हायपीट करी पोताना बच्चांनुं पोषण आखो दिवस घणी महेनत करीने पण पूरुं न करी शक्यांथी बच्चांना क्लेशथी दिवस माफक रात्रि पण दुःखमांज उजागरे काढवी पडती तेवा रंको पण राजाओ के श्रीमंतोना पुत्र जन्मनी खुशालीमां मळेला दानथी श्रीमंत

द शास्त्रमां धावक कईक दानाई श्रावकपणानुं कारणमां दानादि चतुष्क श्रीमानना दादाओमां हतां आगळ पाछळ हांकी वारी "दुई दान संरक्षण" धारक. आगळ चोथ्रुं धारे जेवी योजनाबना पहार श्रावकना के ईश्वरे मेळवी कुळनां धनना आवेल त्यां पण तेवी जोगवणा विना भाववी धारे. धारेने एवी पटी मेटाळी कांई पहा शोभे मेनेवु मळेल. आवी धर्मीन धनाने पर्णन केवळ पावन श्रावकी नी पेठे जेवा थयेला दानाईने महीनी पाते तांझनी ईक पात्रीनी. ते पात्रने हती वारना हता अथवा केटलाक. प्रथा भारी नेवो धवन आपवा पाभ्रुमानी रीत मांगेना कारण हता. तेमांनी मार्गना कार्ज छे. धर्मीष्टोज एवीबाजी होय छे. तेमना पुरवनो महत मदर्द ते मानदे पदम धनो होय छे. दुनियामांथी दुःख देनारा दारिद्रना समुदने समूळगु कादी नांखवानो सुन्दर विचार धर्यो होय तेम आमे मुकाममुकाम सर्वत्र महोत्सव व्यापी रह्यो हतो !!! सुरिश्वर मीं पाणुं दान पुन कन्यनी खुशालीमां जे दान ते वेने आवे छे, ते आपवा चोवेरा धावन पाती हेवाथी केटलाको पोतानोज स्वार्थ साधवा मुनिवृन्दसंघना पा सरफ दोडता हता त्यारे केटलाक भला पोताना वगानुं पण दारिद्र दूर करवा चोवाथी साधे लेई जता वगवाय सरफ. दोडता हता. अने हजारोनी संख्यामां मध्यम पुं दान लई जेवी वसावस्ती ने दरिद्रपाद्रमां पीडाने हवा न थाय के ते पाणदार न मेते माटे केटलाक सीपाईओ डोळने राखवा पडता हता. पहेलो वारो पोताना वगो आवे तेनी राह जोता थाओ आववा दान मां मामुं मळवा नीकळीने पहार आवी भीजाय पडवाडे वधार मागले तेन पळीने आपीने पाछुं लेवा जवानो वार राखता पण हजारो देना व्याजनवध उपन्याने पडवाडेज उभुं रहेवुं पडतुं एम दश दिवस सुधी सुंदरसमाटना पर आगळ दाननो प्रमाण चालतो रह्यो हतो. वीज अनेक प्रकार अनाज देवानुं के कपडानुं दान देवानुं ने सावन चांमडी गणता रह्यो छे. सामान्य स्थितिना

બાળકોને પૂરતી મદદ કરવાનો આદેશ આપેલો હતો. સારાંશ દિવસે મદદની સારવારથી દૂર થયા પછી બગીચાઓમાં ફરતી વિશ્રાંતિ વેળાની ઝડપ ભાગ્યે જ સ્વાતંત્ર્યવંતી સ્નેહાળ હતી. તેમનું સર્વ આચરણ સ્વાભાવિક રૂપ ધરેલી કળાની ગણી નથી. પવિત્ર થયું એનું નામ ધાર્યું હતું. આ પવિત્રતાનો જન્મ થયો તે પછી ઘણાં વર્ષ વિતાવ્યા પછી ગઈ હતી કે દર્દીઓની અવસ્થા દવાખાનાથી સુધરે એક સારાની રાજપુત્રી ઘણી સ્વરૂપવતી ગુણવાન હતી અને તેનો ઘણા સારા હતા પણ પવિત્રતાની સેવા કરવાનું મૂકી દેઈ તેને ગમ્યું નહોતું.



# प्रकरण १० मुं.

## धम्मिलनो ज्ञानाभ्यास.

गरीबोने पण पुत्र वहालो होय छे तेथी दूर करता नथी तो श्रीमंतोना एकना एक लाडकवाया तेमां पण मोटी उमरे केटलाक महान कष्टने वेठीने मेळवेला वहाला पुत्रने घडीभर वीलो मुकवानुं मन केवी रीते थाय! अने पांच धात्रमाताथी उछेरातो कोमळवयनो बालक शिक्षकनी शिक्षा खमवा योग्य केवी रीते थाय! तेथी केटलांक मातापो पोतानी श्रीमंत स्थिति हमेशां कायम रहेवी जाणीने पोताना पुत्रोने सारी रीते भणाववा उपर लक्ष आपता नथी तेम कळाचार्य पासे भणवा मुकतां आंचको खाय छे तेथी घणा श्रीमंतना पुत्रो विद्याना अभावे विलासमां राची के अज्ञान रही पोतानी मनुष्यपणानी मळेली अमूल्य जींदगीने रद करे छे पण आ सुरेंद्रदत्त शेठ तथा सुभद्रा शेठाणी बन्ने विद्वान् हतां. तेओए पोते सारी रीते ज्ञान लीधेलुं होवाथी ज्ञानना फायदा जाणतां होवाथी तथा धम्मिलनी बुद्धि अति तीक्ष्ण जाणीने पांच वरसनी उमरेज पुत्र वहालने दवाणमां राखी तेना भविष्यना हित माटे कळाचार्य पासे भणवा मोकल्यो. कळाचार्य तेनो नाममात्रज निमित्त तरीके विद्या शीखववामां सहायकारी हतो बाकी एक वात बतावतां अनेक प्रकारनी वात क्षणवारमां जाणी लेतो हतो.

पुरुषनी बोंतेर कळा शीखीने पुत्र तैयार थया छतां पण धर्म कळा विना सघळी "कळाओ" एकडा विनानां मींडां समान नकामी होवाथी सुरेंद्रदत्ते पूज्य गुरुवर्यो जे संसारी विषयभोगोथी निस्पृही थया छतां पण परमार्थे भव्य जीवोने धर्मोपदेश देवा उपरांत धार्मिक तत्त्वोनुं ज्ञान पण अवकाशना वखते शिष्योने भणाववा उपरांत गृहस्थोना बाळ के युवान् के वृद्ध पुरुष जे शीखवाने योग्य होय तेमने

आपता हता अने मुनिवरोनी संख्या पण विशेष होवाथी जमानाने अनुसार मुनिराजो घनमां विशेष न रहेतां गृहस्थोने पोताने धार्मिक क्रियाओ करवा माटे गृहस्थोए बंधावेली पोषधशाळा जे उपाश्रय नामथी ओळखाय छे तेमां उतरता हता अने गृहस्थोने पण देवपूजन अने गुरु सेवा कर्या पछीज पोताना सांसारिक कार्यमां जोडावानुं होवाथी सुरेंद्रदत्तशेठ हमेशां सद्गुरुने उपाश्रयमां नमस्कार करवा माटे जतो हतो अने तेनी साथे धम्मिल पण उपाश्रयमां जतो होवाथी तेनी दिव्यकांति अद्भुतरुप, मधुरी कोमळ वाणी, अतिशे विनयवाळो अने तेओना समागमनो तेने चाहक जाणीने ते गुरुवर्यनी पासे धार्मिक शिक्षा लेवा माटे तेओना उपदेशथीज सुरेंद्रदत्तशेठे ते धम्मिल्लने मोकलवा मांड्यो.

सांसारीक अनेक कळाओ शीखव्या छतां तेमां मुख्यत्वे पांच इंद्रीओना अनुकूळ विषयोने मेळववा तथा अनुचितने त्यागवानो विषय होवाथी तेने माटे थता झघडा, लुंटफाट, चोरी, बदमासी इर्षाद्वेष इत्यादी हिंसादि अढारे पाप स्थान थतां देखीने तेना मनमां विद्यानो आनंद उत्पन्न थवा छतां पण ते थतां पापोथी तथा पोताने पण आरंभ परिग्रहनो मोटां पाप तथा सावद्य कार्यो करवां पडशे तेथी तेने अपूर्व शांति प्राप्त थती नहोती पण ज्यारे सद्गुरु पासे भणवा मांड्यो त्यारे प्रथम परमेष्टि मंत्रमां नवकारथी शरुआत करी प्रतिक्रमणादि विधि सहित शीखववामां आव्युं अने जीवविचारमां जीवोनुं स्वरुप समजावी जीव विनाना अजीव द्रव्योनुं ज्ञान आप्युं तथा संग्रहिणीमां विस्तारथी बतावेलुं त्रण लोकनुं स्वरुप समजाव्युं अने कर्म ग्रंथनी प्रकृति स्थिति रस प्रदेशना बंधनुं सत्तानुं उदयनुं उदीरणानुं तथा गुणस्थाननुं उपसम्यक्त्व क्षय उपशमिक वेद क्षायिक सास्वादन मिथ्यात्वनुं स्वरुप समजाव्युं अने मतिज्ञान आदि पांच भेदे ज्ञान तथा त्रण भेदे अज्ञान समजाव्युं तथा उपशम मिश्रक्षायिक उदयिक परिणामिक पांच भावोनुं तथा पांच

भावथी उत्पन्न थता सन्निपातिक भावनुं ज्ञान आप्युं त्यारपछी संख्यात असंख्यात अनंतना बधा मळी एकवीश भाग समजाव्या त्यारे तेने धीमे धीमे अंतरमां अपूर्व शांति प्राप्त थवा लागी अने भणवामां एटलो रस पडवा लाग्यो के निशाळमां भणीने थाकनी विश्रांति लेवा बहार फरवा जवानुं पण पूर्वे सांजसवार मन थतुं हतुं पण हवे तो बे वखत घेर जमवा आववा सिवाय बीजानी साथे वात करवानुं पण तेने गमतुं नहोतुं. एटले सुधी के सगांवहालांने त्यां लग्नमां के जमणमां के मेळामां के नाचमां के तमाशामां के फरवाहरवानुं कशुं तेने गमतुं नहोतुं! फक्त उंघमां पण उपाश्रय अने गुरुमहाराज सांभरता हता छतां पण आश्चर्य ए हतुं के तेने धर्मनुं ज्ञान भणतां थाक के कंटाळो के उदासीनता बीलकुल आवती नहोती तेम मोढानो चेहरो अने शरीरमां शक्ति तथा वचनमां कोमळता दिवसे दिवसे वधती जती हती आवी बन्ने प्रकारनी केळवणी लीधेलो शाणो पुत्र कोने वहालो नहि लागे?



# प्रकरण ११ मुं.

## गोपाल कविनुं दृष्टांत.

आम मातापिता तथा पुत्रना दिवसो सुखमां गुजरता छतां पण सांसारिक व्यवहार चलाववामां धम्मिल हाल ओटानो न होवाथी तथा पुत्रने परणाव्या विना वंशवृद्धि थवी अशक्य होवाथी तथा नहि परणाववाथी कदाच कुमार्गे दोराशे एवा डरथी तथा युवावस्थामां आवेलो तथा दिव्य कांतिवाळो तथा सारी चालनो तथा सुंदररूपना निर्मळ कुळमां संबंध जोडवाने घणा गृहस्थो पोतानी कन्या आपवा तैयार थएला होवाथी अने तेमनी तथा मित्रोनी वारंवार थती प्रेरणाथी सुरेंद्रदत्त शेठे पण हवे धम्मिलने परणाववा माटे विचार करी तेने योग्य कन्याओ शोधी तेनी साथे लग्न करवानो प्रथम सगपणनो संबंध जोडवा माटे एक वखत एकांतमां धम्मिलने पासे बेसाडी तेनी संमति मागी. धम्मिलने "स्त्रीनो कर ग्रहण करवो" ए अतिशे दीणवत भरेलुं लागवाथी पिताने नमीने विनयथी कहेवा लाग्यो के मारुं लग्न करवा हुं कोई पण रीते राजी नथी तेम तमे पण मने हाल धर्मशास्त्रना अमृत रसना उदधिमां मुकयो छे तो तेनुंज हाल तो संपूर्ण रीते मने पान करवा दो कारण के मनुष्य जन्म, जैनधर्म, धर्मपर श्रद्धा अने आदरवानी शक्ति वारंवार ए चारे साथे प्राप्त थतां नथी. ज्यारे पिताए घणो आग्रह करवा मांड्यो त्यारे धम्मिले कह्युं के हे पिताजी! तमे मारा सुखना माटे जे कन्या परणाववा तैयार थया छो ते तो उलटुं मारी कळा तथा बुद्धि तथा शक्तिने नाश करवाना कारणरूप थशे कारण के स्त्री परण्या पछी तेनुं, तेनाथी उत्पन्न थती प्रजानुं तथा नोकर चाकरोनुं तथा सगांनुं सगव्हालांनुं मन संतोष करवा अतां करवी पडती खटपटथी मने आश्रय मळवाने बदले अनाथत्वनी प्राप्ति थशे

पोतसो गाथा बनावी राजाने संभळाववा मांडी. एम दिवसे दिवसे राजाए तेनी काव्यकळामां अधिक मधुरता जोइने पोतानी सभामां घणा काळथी पेसनारा अने घणांज म्हाणा विद्वान कविराजो उपरथी तेनी ममता उतरवा मांडी अने पोतानुं तनमन धन सघळुं गोपाळ कविनेज अर्पण करी दीधा जेवुं तेणे करी दीधुं ! जेथी ते पंडित विचक्षण कविराजोए भेगा मळी विचार करवा मांड्यो के आ गोवाळीआ मांटे शुं सूक्ष्म गुजारवा मांड्यो छे ? राजाने केवो मोहित कर्यो छे के जे आपणा जेवा अनेक वर्षोथी अनेक प्रकारे राजाने रंजित करवावाळा छतां पण अत्यारे राजा आपणा सामुं प्रेमदृष्टिथी पण जोवाने अशक्ति बतावे छे ! त्यारे पण तेमां शुं आश्चर्य छे ? गोप ( गोवाळ ) वडे गोप ( राजा ) राजी थायज. वळी कामीओने जेम घरमां पद्मणी सरखी परणेली स्त्रीमां जेटलुं चित्त होय तेना करतां अधिक प्रेम चाळा करी कटकां मारी मधुर बोली फसावनारी दुराचरणी दासी उपरज होय छे !!!

तेवीज रीते आ राजाने देव वाणीना उत्तम काव्यो करतां गामडीयानी गमार भाषा जेवां नीचनां काव्योमां वधारे रस लागे छे ! अने तेथीज आपणां घरोमां फक्त दारिद्र निवास कर्यो छे, अने हमणां आपणी दीनस्थिति राजाने कहेवा जतां उल्टो ते कोपायमान थाय छे माटे आपणे कंइ एवो उपाय करीए के तेथी राजानी तेना उपर इतराजी थाय ! एम विचारी एक दिवस ज्यारे भरसभामां राजा गोपाळकवि उपर प्रसन्न थइ तेनी स्तुति करतो हतो त्यारे आ सघळा विद्वानो उभा थइ राजाने अनुसरतुंज बोली गोपाळकविनी प्रशंसा करीने एक विज्ञप्ति करी के हे प्रभो ! खरेखर आ गोपाळकवि कोइ दिव्य शक्तिवाळा छे के जेनी तुलना करवाने अमे कोइ रीते समर्थ नथी ! आवी तेनी उत्तमता जोइ तेनी दरेक प्रकारे तमे तजवीज करो छो ते सर्व वात योग्य छे छतां पण एक खामी रही छे ते दूर करवा आप लक्ष

आपवुं जोइए कारण के देवो देवी साथे मनुष्यो मानुषी साथे अने पशु पक्षीओ पण पोतानी मादा साथे आ संसारमां अलौकिक आनंद मेळवे छे छतां आ अमारो मित्र गोपाळ कवि आपनी पूर्ण कृपा छतां पण तेवी आनंदित अवस्थाने प्राप्त थइ शक्यो नथी ! ! !

राजा तथा गोपाळ तेओनुं आवुं मार्मिक बोलवुं तेमनुं सरळ हृदय होवाथी न समजी शक्याथी एक गृहस्थनी रुपवती कन्यानुं ते गोपाळ साथे ते राजाए लग्न करी आप्युं. थोडा दिवस तो तेनी साथे गोपाळे नवी मोजमां गुजार्या तथा तेनुं कवित्व उंचुं मुकायुं कारणके विना फुरसदे श्लोक क्यांथी बनावे ! अने धीमे धीमे श्लोक बनाव्या विना राजाए नवुं द्रव्य न आपवाथी जुनुं खवाइ जतां घरमां शोभा प्रमाणे स्त्रीनी इच्छा पूरवा अनेक प्रकारनी वस्तु लाववानी खटपटमां पडवाथी चित्तमां उल्लासने बदले चिंताए घर करवाथी पछी राजसभामां जवा छतां पण काव्य करवानुं तो तेणे विसरवाज मांडयुं अने ज्यारे राजाए नवां काव्य बनाववा तेने आग्रह करवा मांडयो त्यारे बेचार रस विनानी भाग्येज कविता तेणे बनाववा मांडी अने दिवसे दिवसे अंधारियाना चंद्र माफक तेनुं मों उदासीवडे कांतिरहित थवा लाग्युं. ज्यारे तेनी आवी दयाजनक दशा जोइ त्यारे राजाए तेनी दया लावी तेनुं कारण पूछतां तेणे पोतानी दुर्दशानुं खरुं कारण स्त्रीनी परणवा पछीनी सघळी स्थितिनुं वर्णन कही बताव्युं जेथी ते राजा पण आश्चर्य पामी गयो पण करे शुं ? तेनो कंइ उपाय तेनी पासे नहोतो !



# प्रकरण १२ मुं.

## धम्मिलनुं फरज्यात लग्न-परिणामे पत्नी यशोमतिनी उपेक्षा.

हे पिताजी ! आवुं स्त्रीथी दुःख थवुं जाणीने हुं केवी रीते परणवा इच्छा बतावुं ! त्यारे पिताए कह्युं के हे पुत्र ! संसारमां नहि परणनारा उन्मत्त युवानो कुमार्गे चडी जाय छे. अने मावापना निर्मळ वंशने कलंकित करे छे. अने ते गोपाळे अभ्यास न राखवाथी कळा भूली गयो तेमां स्त्रीनो शुं दोष ? वळी सारी स्त्रीथी पुरुष पण विशेष शोभाने पुर्णीमाना चंद्र माफक केम नथी पामतो ! वळी नारी अबळा छे माटे तेना सेंकडो दोषो जोवा सौ तैयार थाय छे पण पुरुषमां शुं दोषो नथी होता ? एम तेने बोलतो बंध करी पराणे हा पडावी तेना माटे कन्याओ शोधवा मांडी अने केटलाक श्रीमंत कुलवान् गृहस्थोए पोतानी कन्यानुं सगपण तेनी साथे करवा हा पाडी पण एक वखत धम्मिलने वखत मळतां पोताना मित्रोने पोताना हृदयना विचार खुल्ला जणावी दीधा के पिताना आग्रह छतां पण मारा शास्त्र अभ्यासरुप अमृत उदधिमां पान करतां विघ्न करनारी अपशुकन करनारी बिलाडीरुप कन्याने हुं कदापि पण ग्रहण करनार नथी. आ वात प्रगट थतां सघळा श्रीमंतोए पोतानी कन्या बीजा सारा युवानो साथे परणावी दीधी. जाणी जोइने कयो पुरुष पुत्रीने फांसामां नांखे !

केटलाक जाणता हशे के आवा एकांत धर्मना अभ्यासमां लीन थएलाने कन्या नहि मळे ! पण जेनो पूर्व संबंध छे अथवा भविष्यनो संबंध थवानुं निर्माण थएलुं छे तेनो संबंध कदापि पण छूटतो नथी. तेवीज रीते तेज शहेरमां धनवसु नामनो शेठ हतो तेने धनदत्ता नामनी कुलांगनाथी यशोमति नामनी नाम प्रमाणे गुणवाळी पवित्र पुत्री

घेर स्त्री होवाथी रात्रे बहार नीकळी उपाश्रये जवाय तेवुं नहोतुं तेथी घेर रहेवा छतां पण साथे सुतेली प्रेमदाने बोलाववा विनाज पडी रहेतो अने मध्य रात्रे ते सुतेली मालुम पडती के शास्त्रमां सांभळेली देवलोकना देवोनी विमाननी के नरकना पाथडानी के चारगतिमां असंख्यातीवार भ्रमण करतां भमी अनंतोकाळ गुमावी भोगवेला दुःखनो विचार करतो. जागी हिसाब मेळववो के ज्योतिषदेवोनी चालनुं गणित करतो, ग्रहोनी तारानी चाल तपासतो रात्रि गुजारतो हतो. केटलाक दिवसो एम धम्मिल्लने तो सुत्रना अर्थने विचारतां आंख मींचतां वीती गया पण पतिथी उपेक्षा करायेली यशोमतीए अधीरता लावी बीजो कोइ उपाय न जोवाथी पोताना पियर जइ माता आगळ पोकेपोक रडी पोताना दुःखनी हकीकत जणावी दीधी. त्यारे तेनी माताए तेने पूर्वे कह्या छतां पण तें कदाग्रह कर्यो तो तेनां फळ भोगव ! एम कह्या छतां पण पुत्रीना अत्यंत प्रेमथी आकर्षाइ तेनुं दुःख दूर करवा पोते विचार करी तेने धीरज आपी शांत करी तेथी पोते तेना सासरे जइ पोतानी वहेवाण सुभद्रा शेठाणीने केटलांक सामान्य तथा केटलांक कठोर वचन संभळावी ठपको देइ जमाइने ठेकाणे लाववा कोइ पण उपाय लेवा आग्रह करी गइ हती.

सुभद्रा पोते भणेली अने गंभीर पेटवाळी छतां पण उमर लायक पुत्रनी विचित्र वर्तणुंकथी तथा लोकमां अत्यंत अपवाद थतो सांभळी दीलमां घणो खेद लावी पुत्रने ठेकाणे केम लाववो तेना संबंधमां अनेक विचारो करी ज्यारे पोतानो पति घेर आव्यो त्यारे सुभद्राए पोताना हृदयना उद्‌गार जोसभेर तेनी आगळ काढवा मांड्या. हे स्वामिनाथ ! तमे सर्व वाते शाणा छतां पुत्रनी आवी बेढंगी चाल सारु शा माटे ध्यान आपता नथी ? ते दुनियाना वहेवारथी तद्दन अजाण्यो रही गयो छे ते शुं तमाराथी अजाण्युं छे ! भणवानी वय पण वीती गइ, लग्न पण थइ गयुं. उमरलायक सारा घरनी कुळवान

सुंदर वहू पण घेर आवी छतां पण जाणे कोइ अतरायुं घरमां रहेतो होय तेम ते घरमां दुकानमां तथा वहेवारमां तथा स्त्री साथे पण विमुखज रहे छे. आखो दिवस उपाश्रय अने रात्रे पण धर्मनीज वात! आते आपणा घरमां केम नभशे! पुत्र क्यारे वहेवार समजशे! क्यारे तेनी वहुनी साथे बोलशे. अरेरे मारे आ दुःख शा माटे वेठवुं जोइए! मारुं कोण माने तेम छे!

सुरेंद्रदत्त धम्मिलनी आवी एकांत धर्मावस्थाथी नाराज हतो कारण के गृहस्थने तो धर्म अर्थ अने काम ए त्रणेने बाध न आवे तेम वर्त्तन करवुं जोइतुं हतुं. तेम युवान् अवस्था, नवी परणेली स्त्री घरमां आवेली विगेरे सघळां वहेवारमां पडवानुं तेने योग्य छतां तेतो तेथी तद्दन विमुख रहेलो जोइ तेने सुधारवा इच्छा हती पण वखते धर्मने मूकी ते एकल्या काममां राची कुमार्गे दोराय तो वेवडी हानि जोइने मौनज रहेतो हतो अने स्त्रीने पण ते वात सारी रीते समजावी, छतां पण तेणे ज्यारे आग्रह छोडयो नहीं त्यारे फरी समजाव्युं के हे कल्याणि! तुं जे कहे छे ते पण सत्य छे पुत्रने वहेवारमां नांखवोज जोइए! पण संसारमां नांखवा जतां कदी ते कुमार्गे दोराशे तो पछी पाछो ठेकाणे लाववो मुश्केल थइ पडशे ए केम भूली जाय छे? हाथीना आगळ मुकेलो पूळो पाछो लेवो मुश्केल छे तेम जो तेने विपरीत मार्गे वर्त्तन करावया अधम उपाय लइशुं तो पाछो सारी चालमां लाववो अत्यंत दुर्लभ थइ पडशे। माटे धीरज राख। कामनो अभ्यास कोइने शीखवाडवो पडतो नथी तेथी अनादि काळथी मैथुन नामथी एकेंद्रियो वेद लइने आवेल छे अने ते वेद भयंकर सिंह माफक सुतेलोज एक वाते भलो छे कारण के जागेलो सिंह जगाडनारने पण फांसामांथी छोडतो नथी पण तेना प्राण हरे छे तेम ते धम्मिलनो वेद सूतो छे त्यां सुधी ते आपणुं किंचित् पण कोइनुं माने

त्नार्थ। आपणी पण अविनय करनारी बनशे तेनुं शा माटे कुंरी आग छे ? गुजराण् आ पाप शारी रीते हृदयमां वसारी पण तेने तेनी सते-ग्रेग के करेला पापोनां हला गया तेनी पस्तावनी रोनां जे दृग्नी अ-श्रुदा तेने वही हती के हृदयमां वारंवार तेने कौनराह करेनी याद आवती हती, तेथी तेणे विचार करी कह्युं के, प्रभु कृपाथी होवाय पण जो संसारनो व्यवहार न शीखवां रहे तो कोक दिवस पण पोतानी स्त्रीने पोतावडे पण न साधु जेवो मायां देखी रहेनारो छे. संसारना व्यवहारथी तद्दन अजाण्यो बनना धनधर मापक लोकी पण वंचता करनारो रहे ते कोई माने सारुं नथी. माटे सघे संसारना व्यवहार शीख-वनारा शीखनीओनी तेने विराम करी आपो. एज मारी छेवटनी प्रार्थना छे ।।।

# प्रकरण १३ मुं.

## उलंठोनी सोबतनुं माठुं परिणाम.

स्वप्ने पण जेनो संग न वांच्छे तेवा अधम दुराचारी, रोगोथी सडेला, पैसाथी खुवार थएला, जुगारमां आगेवान, भमरा नामथी लोकमां ओळखाता, जनोमां निंदाता, माबापे दूर करेला, कोइ पण जातना कृत्यथी नहि डरनारा, तथा सर्वे दुर्गुणोना घर समान एवा छेलै पुरुषोनी सोबतमां धम्मिलने मूकवो ए सुरेंद्रदत्त शेठने कोइ पण धाते योग्य लाग्युं नहि, पण स्त्रीनो रोजनो आग्रह अने धम्मिलनी धर्ममां एकांत निश्चळता जोइ बीजाथी ते कोइ पण प्रकारे सुधरे ( संसारमां पडे ) तेम न होवाथी थाकीने आखरे अमृतने बदले भूखमां हलाहल विष ग्वावा माफक दीलगीर चहेरे सीपाइ मारफते ते अधम दुराचारीओने बोलावी तेमने धम्मिलने सोंपी संसारना वेहवारमां वाकेफ करवा सूचव्युं. तेना माटे कोइ पण रीते संकोच न राखवानी पण तेणे आज्ञा आपी, तथा जोइतुं धन वापरवानो बंदोबस्त कर्यो. भावनुं हतुं अने वैदे आज्ञा आपी तेम आ उलंठोने कोइ उभा राखे तेम नहोतुं. तेमना दर्शनथी पण लोकोने त्रास थतो. तेवाओने ज्यारे आवा तवंगर नगरशेठे मानपूर्वक बोलावी आमंत्रण आपी पोताना वहाला पुत्रने सोंप्यो त्यारे ते अधमोना हृदयमां हर्षनी सीमा नहोती. तेओए शेठने पक्की खातरी आपी दीधी के शेठजी याद राखो के अमारी सोबतमां आवेलो धम्मिल केवो संसारी कळामां तथा भोग-विलासमां प्रवीण थाय छे, तथा उपाश्रयनुं तथा गुरुनुं नाम केवुं विसरी जाय छे ते आप सारी रीते तपासी अमने खुशी करजो.

तेओनी सोबतमां सोंपेलो धम्मिल तेमने कोइ पण प्रकारे गांठे तेम

नारी नाटकशाळामां तथा नाच मिलावडाओमां मोटा खर्चे तेने लेइ गया. वेश्याओना के कुलटाओना हावभाव के नाटकना कोमळ वयना स्त्रीनां रुप लीधेला बाळकोना लटकामटका कोइ पण वाते ओछा होता नथी तेमां गमे तेवो पाक्ट घटनो श्रुत भणेलो ब्रह्मचारी साधु पण कडवा नरकादि दुर्गतिना विपाकने जाणनारो छतां पण भोळवाइ जाय. त्यां आ विचारा मोटे गोखी राखेल सुत्रना अर्थने नवो युवान् कोमळ धम्मिल क्यां सुधी आवा साक्षात् स्वर्गनो आभास आपनारां सुखो आगळ धारी राखी शके? प्रथम दिवसेज नाटकनी मजाह हृदयमां रुचि गई एटले उपाश्रयने वदले नाटकशाळास्थान थयुं, साधुने वदले कोमळ वयना बाळको सोवती थया, सुत्रनां वचनोने वदले तेमनां श्रृंगाररसनां गायनोना पाठ हृदयमां रुचवा लाग्या. त्यांथी जुगार' खानुं देखडाव्युं के ज्यां विना महेनते हजारो रुपिया कोई कोई आंख मींचतां अने उघाडतां कमाई जता हता. ज्यारे वेपारमां सवाशेर पर-सेवो नीकळे पैसो मळवो हतो! त्यांथी वगीचामां अनेक जातनां झाड तथा पक्षीओ तथा वेलो झाडोनी साथे वींटायेली देखाडी खीलेलां कमळवाळी वावडीओ देखाडी. एक वखते वपोरना समये विश्रांति लेवा थाकीने वनस्पति उपर चालवा मांड्या त्यारे तेमां जीव मानता धम्मिलने गुरुनुं वचन याद आववाथी पापना डरथी ना पाडी त्यारे पेला दुष्टोए कयुं अरे! पशुसमान बाळक वहेवारथी अजाण्याने भोळे दहाडे ठगवासमान साधु नामथी पुजाता धुताराओए तने ठग्यो छे के आमां जीव छे, पाणीमां जीव छे के वापडा भोळाओ भरमाई तेनी मजाह लेतां अटकी जाय अने मळेलो मनुष्य जन्म व्यर्थ गुमावी दे पण तुं तो वडो शाणो छे त्यारे कां विचारतो नथी के जीव होय तो शामाटे बोले नहि? तेम शामाटे भागी न जाय तेम एमां जीवनी शुं खात्री छे अने पाप छेज क्यां? ए तो दुनियामां कंगाल, कायरो, कम अक्कलना तेवुं कार्य करी शके नहि त्यारे कहा दे के एमां पाप छे,

तपनो परीक्षक तरीके नीमवानी सूचना करी के सौनी दृष्टि एक सामुए बेठेला धम्मिल उपर गइ तेने सौए पसंद करी परीक्षक तरीके नीम्यो. सघळी कळामां प्रवीण वेश्यानी परीक्षा करनारो धम्मिल पण परीक्षा करवामां उतरे तेवो न होवाथी वेश्याए पण हद बहार चातुर्यता तथा गायन तथा अंगनुं चाळवुं बतावी सौने तल्लीन करवा साथे धम्मिल्लने पण आश्चर्यथी डोकुं धुणावतो तथी वाह वाह बोलावतो कर्यो के राजाए तेने पास थएली गणी. रजा आपवा साथे पुष्कळ द्रव्य इनाममां आप्युं हतुं अने तेथी सौ संतोष पामीने पोतपोताने स्थानके गया.

आम धन्नेनी प्रथम ओळखाण अने प्रीति तथा अरसपरस हृदयमां कोतरी रखायेलां पतांज तेना अधम मित्रोए तेने योग्य थएलो गणी प्रसंगोपात वेश्याना मोहल्लामां लइ जवा मांड्यो. ज्यां एक वखत शणगार सजेली वसंततिलका गोखमां बेठेली जोइ के त्यां धम्मिल्लनुं चित्त खेंचायुं धन्नेनी दृष्टि एक थइ त्यां तेना मित्रो तुर्त तेने लइ गया अने तेना बापनो संदेशो कही काम क्रीडानो अनुभव लेवा तेने सोंपी दीधो तथा जोइता खर्च माटे तेना बाप पासे मगाववानुं पण साथे सूचवी दइ तेने त्यांज छोडी धम्मिल्लना अधम मित्रो त्यांथी नीकळी गया. शेठने तथा शेठाणीने सघळी वात कही त्यां धम्मिल्लने रहेलो जोइ सुभद्राने संतोष थयो पण शेठ तो मनमां समजतोज हतो के आ परिणाम सारुं देखातुं नथी पण हवे इठ आगळ कांइ बोलाय तेवुं नहोतुं माटे उपरथी संतोष बतावी पेला अधम मित्रोने सारी रीते धन आपी संतोष करी रवाना कर्या तथा वेश्याने पण मों माग्युं द्रव्य मोकलवा मांड्युं.



# प्रकरण १४ मुं.

—◇◇—

## वसंततिलका वेश्यानो समागम–मातपितानो पश्चात्ताप.

स्वर्गनाविमान जेवो तेना घरनो ठाठ हतो. मोढेथी मीठुं बोलवामां नोकरो तथा दासीओ चतुर हती आसनोनी खोट नहोती तेम आ वसंततिलका तेने पोतानो राजसभाथी परमउपकारी मानी अंतरमां चाहनारी हती तेमां पण वेश्यानी जाति तथा आदरसत्कार तथा बोलवाचालवामां सघळुं धम्मिलने आनंददायी थइ पडयुं. पधारो पधारो आसनने पवित्र करो, मोटी कृपा अमारा जेवा रंको उपर करी अमारा घरने पवित्र कर्युं. एम कही सर्व वाते तेने संतोष पमाडी दास दासी रुमी गयां के तुर्त वेश्याए तेनी आसनावासना पोताना कोमळ हस्तवडे एवी सफाइथी करवा मांडी के अत्यार सुधी ब्रह्मचारी रहेले धम्मिल्ल प्रथमज नरककुंडनी कुंपीसमान दुर्गंधिथी भरेली नवे द्वारद्वार दुर्गंधीने बहार काढनारी उपरथी शणगार सजेलीमां आपातरम्य आनंद मेळवी पोतानुं सर्वस्व पायमाल करनार नर्ककुंपीमां डुब्यो ! अने संसारमां अत्यंत सुख कहे छे तेनुं पांचे इंद्रीओना विषयनुं सुख अत्यारे धम्मिल्लने भान थइ चूक्युं हतुं. गायनमां नंबर पहेलो, आंखना कटाक्षमां आगेवान, हास्यरसमां अद्भुत, नाचमां नायिका, अंगनी कोमळतामां मांखणथी पण अधिक एवी पांचे इंद्रियोना विषयोने अनुकूल वेश्या तेनी आज्ञानुसार यथारुचि चालनारी मळी जवाथी तेनो दिवस अने रात्रि एक क्षणवारमां पूरा थइ जता हता, तेम वेश्या अंतःकरणथी के बहारथी वारंवार तेने एज प्रार्थना करती हती के हे प्राणनाथ! जो तमे एक क्षण पण मारथी विखुटा थशो तो आ देहमां मारा प्राण नहीं रहेवाना नथी एम ( समजी लेजो ) ! नवी नवी जातनी रमतोमां रंजन करी नवी नवी चातुर्यतामां रसिक करी नवा नवा

प्रश्नोत्तरना गुढ रहस्यना मार्मिक वचनोथी मनस्वी पनावी उत्तम जातिना फुलना हार गजराथी तथा सुंदर अलंकारोथी तथा नवी नवी जातना रंगरंगित वस्त्रोथी, दासीओथी शणगारातो वेश्या धम्मिलने पण तेवो मनमोहन बनावी कोमळ वस्त्रोथी तथा कुसुमादिनी सुगंधीथी शोभायमान करेला देदीप्यमान पलंगमां ज्यारे तेओ शयन करतां त्यारे साक्षात् देव देवीसमान जोडुं जणातां. आम दिवसो, मासो अने वर्षो वीत्यां पण जेम देवलोकमांथी पूर्व भवनां सगांने मळवा जवानी इच्छा छतां पण देवांगनाना मोहथी छूटाय नहि तेम अहीं वसंततिलकाथी धम्मिल्लनो एटलो गाढ स्नेह थई गयो हतो के एक क्षणपण वस्नेनुं छूटुं पडवुं ते एक बीजाना प्राण जवा जेवुं हतुं !

अद्भुत शणगारनुं तथा वेश्याना कुटुंबीओनुं पोषण करवुं तथा भविष्यना खर्चनुं पण भेगुं खर्च गणी रोज आठहजार सोनामोहोरो अवा पासे शेठ नरफथी आवती हती. जो के शेठ चोक्कस समजतो हतो के मारुं धन पवित्र धर्म स्थानोमां धर्मना कार्यमांज खरचावुं जोइए पण मारा प्रबळ पापोदयथी मळेला कुपुत्र तथा कुभार्याना कदाग्रहथी गावमां घी होमवा माफक असति पोषण श्रावकने वर्जवानो हुकम वीतराग प्रभुए करवा छतां तेने अणचाल्ते करवो पडतो हतो.

संसारमां प्राणमने कोइ पण प्रकारे सुख नथी जेटलुं सुख छे ते मधरां मानी लीधेलां अने कृत्रिम छे अने तेथी प्राणमने इष्ट चीजनो जेटलो वियोग थाय तेटलुं दुःख मानी हायपीट करे छे अने इष्ट चीजना प्राप्ति थवा तेनो मधाग कायम रहे त्या सुधी हर्ष मानी गवमां आवे छे अथवा कोइ प्रकारनो संताप थयो हर्षशोकना कारणे स्थिर रहेता हश नहि तो बाकी रहेला प्राणीओ वारंवारमां दुःख मानी हायवोय अनेकवार नजरे पडता देखाय छे ! कोइ वाडीनुं दुःख. कोइ पुत्रनुं दुःख. कोइ धननुं दुःख. कोइ तेना वियोगनुं दुःख, मानी निरंतर [illegible] रहेताज रहे छे तेओने संतापी

के सुखी करवाने कोइ समर्थ नथी ! कारणके ज्ञानने तेमां कारणभूत मानी लइए तोपण अहींआं सुभद्रा ज्ञानी छतां पण तेने हमणां उपरनां कारणोथी दुःख माप्त थयुं हतुं तेथी एम जणाय छे के ज्यांसुधी आत्मामां अभ्यंतर ज्ञान स्थिर थयुं नथी अने मोहनो फांसो दूर थयो नथी त्यां सुधी सौ दुःखीज रहेवाना देखाय छे !!!

जो के सुभद्रानी स्थिति सर्वे मकारे लोकोने चाहवाजोग हती कुबेर जेटली रिद्धि लोकमां गणाती. माणथी पण अधिक प्रेम बतावनारो पति हतो. देवकुमार जेवो पुत्र हतो. नोकर चाकर, शरीर सुंदरता तथा लोकमां मानपानमां कोइ मकारे कमी नहोतुं तेना पतिनी तथा तेनी भलमनसाइथी हजारो गरीबो तथा श्रीमंतनां कुटुंबो तेने सर्वे मकारे संतोष आपवा उत्सुक हतां छतां तेने दुःख मथम तो पुत्रने पत्नी साथे उपेक्षा करनारो जोइ दुःख थतुं पण हवे तो वेश्यानी सुंदरतामां लीन थएलो माबापने मों बतावबा जेटली फुरसद लेवाने पण अशक्त थइ पडयो हतो ! आजे आवशे, काल आवशे, परमे आवशे, पखवाडीए आवशे, महिने आवशे, छ मासे आवशे वरसे आवशे वारतहेवारे आवशे सगांवहालांना लग्नमां आवशे, नाच तमासा के बीजा कोइ जरुरना मसंगे पण एकवार आवशे आवशे ने आवशेज, एम मनमां खात्री धरावती आशामांने आशामां बेसी रहेली सुभद्राने वरसो वीतवा छतां पण पुत्रना दर्शननो लाभ दुर्लभ थइ पडयो हतो तेथी अधीरता अने अत्यंत दुःख हृदयमां साळवा लाग्युं हतुं !

जेथी एक दिवस शरम तोडी सुरेंद्रदत्तशेठने सुभद्रा कहेवा लागी! स्वामिनाथ! तमे कोइ दिवस धम्मिलने बोलावा माटे माणस केम मोकलता नथी ? जो तमने वहालो होय के न होय ! तोपण मने तो तेना . एटलुं दुःख लागे छे के जो तमे ताकीदे नहि बोलावो तो मारो ग थोडा वखतमां तेना वियोगे नीकळी जशे !! शेठ मनमां ते नहि आवे एवुं मथमथीज जाणता हता छतां पण स्त्रीना आग्रहथीज अने

तेने संतोष करवा माटेज बोलवामां समजाववामां चतुर एवा नोकरोने धम्मिल्लने बोलाववा माटे शेठे वसंततिलका वेश्याने त्यां मोकल्या. निमकहलाल नोकरो तुरत त्यां जई धम्मिल्लने एकांतमां बोलावी तेनी माताए तथा पिताए कहेलो संदेशो कहेवा तैयार हता पण वेश्यानो संग छोडवा धम्मिल्ल तैयार नहोतो तेम धम्मिल्लनो संग न छोडवा माटे क्षणवार बीजा साथे वात करवा देवा वसंततिलका तैयार नहोती! हवे केवी रीते एकांतमां वात थाय? तेथी शरम तोडी तेओए धीमेथी धम्मिल्लने तेना मावापनो संदेशो कही एकवार पण तेमने मळवा सूचव्युं हतुं. तेओ बिचारा कालावाला करी कोमळ वचनोथी धम्मिल्लने प्रार्थना करता हता के हे बंधो! मातपिताथी जगत्मां कोई अधिक नथी तेओए तारा जन्म पहेलां पुत्र प्राप्ति माटे केटलुं कष्ट वेठयुं हतुं ते तथा गर्भमां धारण करी बाळपणमां उछेरी भणावी गणावी तैयार करी सेवा करवा योग्य हवे तने कर्यो छे त्यारे तुं चाकरी करवाने बदले आवो निर्मोही थई तेओने तद्दन विसारी मूके ए कोई पण रीते चाहवा योग्य नथी. तेओ तने बीजुं कंइ कहेतां नथी पण एक वखत तारो मनोहर चहेरो तेमने बतावी जेम चंद्रप्रकाशी समुद्रने हर्षवाळो करे छे तेम तुं पण (तारा मातपिताने दर्शन आपी) सुखी कर! तारा वियोगथी तेओने हृदयमां ग्रीष्मऋतुनो ताप अने आंखमां आंसुधाराथी वरसाद रात्र दिवस वरसी रह्यो छे अने पाणी खुटवाथी लोही वहेवा वखत आवी, तेओ अपंग अनाथ बनी गयां छे; माटे तुं करुणा के भक्ति लावी तेओने दर्शन आप! आ प्रमाणे घणुं समजाव्यां छतां पण साथे बेठेली सुंदरीना सौमनस्यमां स्थिर थएला शांत चित्ते साधु माफक मातपिता उपर पण निःस्नेही थई कहेवा लाग्यो के हुं कंई हाल आवी शकुं तेम नथी! छतां पण तेओए आग्रह करवाथी निर्लज्ज थई धम्मिल्ले जणाव्युं के मारा मातापिताने हाथ जोडी विनयथी मारुं कहेलुं वचन संभळावजो के निवृत्तिस्थान छोडीने खटपटवाळा प्रवृत्तिस्थानमां कोण

आववा इच्छशे? वळी बाळपणामां मातापिताना खोळामां प्रेमवानो अने युवावस्थामां अर्धांगनानी समीपमां रहेवानो जे क्रम छे ते क्रमनुं उल्लंघन हुं विवेकी थइने केवी रीते करुं? माटे तमे कहेजो के हवे ते बाबतमां आप संतोषी बनी त्यांज बेठे बेठे मारुं दर्शन मानी लेवुं!!!

आ संदेशो आववानुं शेठ तो प्रथमथी जाणता हता पण आशा राखी बेठेली सुभद्राने ज्यारे नोकरोए खुल्ला अक्षरे कयुं त्यारे सुभद्रा पोक मुकीने रडवा लागी. महामहेनते तेने धीरज आपी समजावी छतां पण न समजवाथी छेवटे मार्मिक वचनोथी शेठे समजाववा मांडी के जेने कुदरतथी के कोइना कहेवाथी पण विवेकदृष्टि न आवे अने जाणी जोइने तरसनी पीडामां बेवकुफ बनी पाछा नीकळवानो रस्तो शोध्या विना उंडा कुवामां पडी दुःख पामे तेमां तेनो अफशोष कोने आवे? तथा ते दुःखी थाय तेमां आश्चर्य शुं मानवुं!

जळथी माछलुं छूटे, पक्षी पांजरामांथी उडी जाय, हाथीखानामांथी सांकळ तोडी हाथी छूटो थाय पण स्त्रीना मोहमां फसेलो युवान् उन्मत्त केवी रीते छूटी शके! जेओ भविष्यना दुःखनो विचार कर्या विना मोहांध थाय छे ते सोमिल ब्राह्मणनी माफक दुःख पामे छे!!!



## प्रकरण १५ मुं.

### पुत्रदर्शननी चिंतामांज मातपितानुं परलोकगमन.

कोल्लाक सन्निवेशमां सोमिल नामनो ब्राह्मण मावाप नानपणमां मरी जवाथी अनाथ तरीके लोकोथी उछेरायो हतो तथा जनोइ आदिनो संस्कार कराइ थोडुं घणुं भणतां एक सामान्य स्थितिनी स्त्री साथे लग्नथी जोडायो हतो पण स्त्री घेर आवतां पुत्र पुत्री आदि कुटुंब वधवाथी संतोषी बनी थोडुं घणुं धन पण प्राप्त कीधुं हतुं त्यारे एक वखत विचारवा लाग्यो के मनुष्य जन्म अने जर प्राप्त थयां छे तो तेनाथी कंइ पण परमार्थ साधन करुं तो ठीक ! अने तेथी मारुं नाम पण रहेशे ! तेम धारीने तेणे जात महेनत लइने नानुं पण सुंदर सरोवर थोडा द्रव्यथी बंधाव्युं अने छांयमां लोको विश्राम ले माटे आजुबाजु झाडो पण रोप्यां अने लोकोने तथा पोताने भक्ति करवा माटे पोतानी इष्टदेवनी मूर्ति पण देरुं बनावी स्थापन करी हती.

फूलनां झाडोथी उतरेलां सुंदर फूलोवडे देवने पूजवा छतां तेने ते पूजाथी संतोष न थवाथी हिंसक लोकोनी रुढि अंगीकार करी देवने प्रसन्न करवा धार्मिक पर्वमां एक एक बकरानुं बलिदान पण देवा लाग्यो. अज्ञान अने मोहमां अंध थएलाने जीवनी दया क्यांथी होय ? आवा धर्मना बाने पापना करवाथी मरतो वखते अशुभ व्यापारथी आर्तध्यानमां मरी रौद्र परिणामे तेज पशु योनिमां बकरापणे अवतार लीधो. बिचारा तेना अज्ञान पुत्रो पितानी देखादेखी तेनी चाल प्रमाणे दर वरसे एक एक बकरो होमी पितृ तृप्ति करता हता. ज्यारे एक वखत धार्मिक तिथिए बकरो शोधवा गया त्यारे तेज हाथमां आव्याथी तेने होमवा ज्यारे दोरडे बांधी घर आगळ लाव्या त्यारे पोतानुं घर देखी उहापोह ( विशेष विचार ) करतां बकराने पूर्वभव देखावाथी पोतानुं मृत्यु देखी कंपीने बलिदानमां नांखवा लेइ जतां

रस्तामां बे बे करतो हतो तथा जवाने नाखुश थइ बहु जोरथी तेना गळानुं दोरडुं खेंचातां ते त्रास न खमी शक्याथी बयारे पोकार करी रडवा लाग्यो हतो, ज्यारे तेना अधम पुत्रो अनेक प्रकारे आनंदमां आवी वाजींत्र वगाडता हता अने स्त्रीओ मधुर स्वरे तेना आगळ गीतो गाती हती. बकरानो अतिशे कळकळाट जोइ सौने दया आवे तोपण ब्राह्मणना निर्दय पुत्रो छोडे तेवा नहोता; तेथी एक मुनि जेओ अतींद्रिय ज्ञानी होवाथी बकराने संतोष करवा मधुर स्वरे बोल्या के हे बकरा ! तें हाथे तळाव बंधाव्युं, हाथे देव पधराव्या, हाथे बकरो चडाववानुं बच्चांओने देखाडयुं तो हवे तारो वारो आवतां होममां होमातां रडे छे शाना माटे ? तारो दोष कां विचारतो नथी ? आटलुं सांभळी बकरो शांत थई गयो अने सीधो सीधो चालवा लाग्यो तेथी आश्चर्य पामेला ब्राह्मण पुत्रो ते मुनिवरनी पासे जई प्रार्थना करवा लाग्या के हे प्रभो ! तमे आ बकराने शुं समजाव्युं के जेथी ते बराडा पाडतो बंध थई गयो ? मुनिवर खरी वात कहेतां एकदम कोपायमान थएला ब्राह्मणना पुत्रो तेनो तिरस्कार करी कहेवा लाग्या के तेनी ग्यात्री शुं ? त्यारे मुनिवरे बकराए पूर्व ब्राह्मणना भवमां दाटेलुं धन छे ते काढी आपेथी तमारे सत्य मानवुं तेथी ते आश्चर्य जोवा होंस पडतो मूकी सघळा घेर गया अने बकराने आगळ करवाथी तेणे दाटेलुं धन काढी आप्युं.

आ साक्षात् दाखलाथी पोतानो बाप बकराने जाणी मुकी दई पोतानी तेवी अधमस्थिति न थाय माटे ते मुनिवरना चरणकमळने सेवी प्रार्थना करवा लाग्या के हे गुरुवर्य ! अमारा जेवा अज्ञान अंधकारवडे संसार समुद्रमां आथडी नवां नवां पाप करी भवभ्रमण करीए छीए तेनो तमे उद्धार करो. त्यारे मुनिवरे तेमने जीवदया, सत्यभाषा, चोरी निषेध, ब्रह्मचर्य, परिग्रहनुं पचखाण एवो सर्व विरतिनो तथा गृहस्थनो धर्म समजाव्यो. यथाशक्ति आदरी तेओ पोताना स्थळे गया.

आ दृष्टांतथी धम्मिलनो बाप तेनी माताने समजाववा लाग्यो के जेम सोमिल ब्राह्मणे अज्ञानताथी होम शरु कर्यो तो पोताने होमावा वखत आव्यो; तेम बहुनी दया लावी अज्ञानताथी भविष्यनो विचार न करतां वहेवार शीखववा अधर्म सेवतीओ मारफते वेश्याने त्यां मोकल्यो तो हवे ते तेमांज लीन थई त्यां गृद्ध थई तेने दर्शन देवा पण इच्छतो नथी तो सेवानी आशा तो शा माटे राखवी जोइए? माटे तारां कर्यां तुंज भोगव अने शोक करवो मुकी धर्मध्यान कर के सद्गति मळे!!!

सुभद्राने वारंवार शेठ ठपको आपता तेथी ते एक वखत कहेवा लागी के हे प्राणप्रिय! तमे कहो छो ते सत्य छे छतां पण माणसनी बुद्धि कांई पण काम करती नथी. वारंवार नशीब आवी माणसने मुर्ख बनावी वारंवार पश्चात्ताप करावे छे तेना उपर शिव ब्राह्मणनुं दृष्टांत विचारवा जोग छे!!!

सर्वे जातनी औषधिने उत्पन्न करनारा मगध देशमां सुग्राम नामे सुंदर गाम हतुं. जेना रहेवासीओ धनवडे शहेरना धनिकोने पण हिसाब-मां गणता नहोता. आवी त्यां रिद्धि सर्वना घरमां हती छतां पूर्वना अशुभ कर्मना उदयथी त्यां शिव नामनो ब्राम्हण अति दुःखी अने दरिद्रताथी दिवसो गुजारतो हतो. नानपणमां मातापिता मरी जवाथी सघळुं तेने जातेज कार्य करवुं पडतुं तेथी एक वखत लाकडां लेवा माटे जंगलमां वनचर माफक भमतां कोइ योगी मळी आव्यो. योगीनी तेजस्वी मुद्रा जोइ तेना मनमां आल्हाद थयो के आ प्रभाविक पुरुषने जो सेवा करी प्रसन्न करुं तो मारुं दारिद्र जरुर दूर थई जशे? एम धारीने निरंतर ते ब्राह्मण ते योगीनी पर्युपासना करवा लाग्यो. योगिए पण तेने योग्य जाणी सुवर्ण बनावानी रसकुंपिका बनाववी योग्य धारीने कयुं के हे शिव! तुं एक पाडानुं पुछ लावी तेने निरंतर तेलमां बोळी मूकवया सूचव्युं. ते प्रमाणे भिक्षा मागी तेनुं नीच कार्य पण ते ब्राम्हणे सुवर्णना लोभे कर्युं. ज्यारे मसाल योग्य ते तैयार थयुं त्यारे योगिए

तेना उपर दया लावी कह्युं के हे वत्स ! तैयार था ! हुं तने धनेश जेवो थोडा काळमां धनवान् बनावी दउं ! एम तेने साथे लेइ आवी ओळंगी पहाडनी गुफा शोधी तेमां पेसीने चालतां शरीर पत्थर साथे घसडावाथी लोही नीकळवा लाग्युं, पगनी ठोकरो खावा लाग्यो अने कोइ कोइ जग्याए अंधारुं आवतां साथे राखेली मसाल सळगावी चालता. तेओ जेम माताना उदरमांथी महामेहनते बहार नीकळे तेम साप विगेरे झेरी पशु तथा साप विगेरेनां कष्ट सहीने मेदानमां आव्या जेमां एक सुंदर दीपतुं देरुं देखीने तेओ अतिशे आनंद पाम्या. त्यां योगिए ब्राह्मणने कह्युं के तुं आ मंदिरमां रहेली सिद्धेश्वरी देवीने प्रसन्न करीने आ रसकुंपिकामांथी रस लेइ तारा मनोरथने पूर्ण करजे!!! ब्राह्मण पण उल्लासमां आवी नजीकमांथी फल तोडी लावी देवीने पूजीने तेने नवा श्लोकोवडे स्तवीने प्रसन्न करतां साक्षात् देवी प्रगट थई कहेवा लागी के हे विप्र ! हुं तने प्रसन्न थई छुं माटे वरमाग ! तने कांइ आपुं ! चंचळ चित्तवाळा ब्राह्मणे वस्त्रनो छेडो धरतां मूठी-भर जव देवीए नांख्या ! आ जोई आटलुं कष्ट वेठीने आवेला ब्राह्मणने ज्यारे देवीए फक्त मूठीभर जव आप्या त्यारे तेनी धीरता जती रही अने पोताना जातिस्वभाव प्रमाणे कोपायमान थई जवने पाछा फेंकी देतो बोल्यो के हे देवि ! हुं आटलुं बधु कष्ट वेठीने अहीं आव्यो अने साक्षात् तुं प्रसन्न थएली छतां फक्त कृपणनी माफक मूठीभर जव आपी संतोष करवा चाहे छे ? ते करतां तो मारी हमेशनी झोळी गाममां मागी फरवानी सारी के जेमां सामान्य लोको पण आखा दिवसनुं अनाज पूरं करी आपे छे. माटे कहेवत छे के देव तो दूरथीज रळीयामणा छे ते सत्य जणाय छे माटे रस विनाना लुखा जव तमारी पासेज कायम रहो एम कही फेंकी दीधा तेथी देवी कोपायमान थई तेने हाथमां झाली पत्थरना टुकडा माफक दूर फेंकी दीधो. आंख मींची उघाडे तेटलीवारमां ते ब्राह्मण एक भरजंगलमां आवी पड्यो अने नतो देवी के नतो योगी जोवाथी पोतानां कपडां तपासतां केट-

शक चोटेला जव जोया. ते उत्तम जातिना सुवर्णना चकचकीत मोटे
ाह्मण तो एकदम पश्चात्ताप करवा लाग्यो के अरेरे ! हुं केवो कमभाग्य
! के दारिद्रने दहन करवामां उत्तम आगनी ज्वाळा माफक आ
ुवर्ण चकचकीत जव मळवा छतां पण में नाहक वेचीने निद्री कोपा-
ान करी आपेला धनने पैकी हुं आवा भयंकर अरण्यमां देखीवडे
ळवायो छुं माटे मने निर्भागीने धननुं शरण हो एम चिंतवतो चाल्यो
यां कोस कोठाळाथी खणावानां भयान थतो कोई ते तरफ गयो.
ामनी वात सांभळी पोते पण कोस कोठाळा पासे रहेला सुवर्णना
जवथी खरीद करी खोदवा लाग्यो अने केटलाक दिवसे भागे आवेला
ानोने पोटलीमां बांधी केटलाक सोबतीओ साथे घर तरफ आववा
नीकळ्यो. केटलोक रस्तो कापी एक अटवीमां आवतां त्यां निर्भय थई
ूतो. ते सुतेला ब्राह्मणनी लाकडीनी पोटली आणी लेई एक वांदरे
रस्तो पकड्यो. ते समये ब्राह्मण जागृत थई सोबतीने जगाडतो पोकार
करवा लाग्यो ! त्यारे सोबतीओ जाग्या अने ब्राह्मणनी करुणा लावी
तमळा वांदराने पकडवा दोड्या, पण न मळवाथी रोता ब्राह्मणने
तेओए दिलासो आपी आगळ चलाव्यो, अने घेर आवतां निर्भागीमां
शिरोमणी पोताने मानतो तथा अनिष्ट इच्छा करनारा जेवा मलिन
मुखवाळो बनी निरंतर हायपीट घेर आवीने करवा लाग्यो तथा गामना
धणीने खबर पडतां तेनुं दुःख दूर करवा रोहिणी गाय तथा उत्तम
शालि आप्यां. ते ब्राह्मणे तेथी रडवानुं बंध करी वर्षाऋतुमां सारी
जमीनमां शालिने वाव्या. तेम रोहिणी गाय पण गर्भवाळी थई तेवामां
भिक्षा मागवानुं मोटुं कोई पर्व आववाथी पोतानुं छतुं धन छोकरा,
छोकरीने सोंपीने पोते भिक्षा लेवा नजीकना गामोमां फरवा गयो.
अहीं चोखा तैयार थाय ते पहेलां नाटकीआओनुं टोळुं आव्युं. तेमणे
गामना समूहने प्रसन्न करवाथी तेओए एटलुं बधुं धन आप्युं के तेओ
खुश खुश थई गया. आवी रीते तेमनी धन मेळववानी, खेल करवानी
कळा जोईने सोमदेव नामनो ते ब्राह्मणनो पुत्र विचार करवा लाग्यो

गे हवा स्वामीने यथास्थित बनेली वात संभळावी, त्यारे शिवमाणेके
विचार थाय पुत्र अने पुत्री मरवुं गुप्त थएलुं मोह परमां कोइ दिवसमां
रण हैनार न होवाथी तथा पोतानी मूर्खताथी पाछोवी न हसे माटे
अंगल्यां जइने पोकेपोक रडवा लाग्यो. एवामां तेना पुण्योदयथी त्यां
ज्ञानरत्नमां मग्न अने करुणाना सागर एवा भव्यजनोने सदुपदेशवडे
तारनारा मुनिगणने सोह नमस्कार कर्यो, त्यारे मुनिवरे तेनुं दुःखनुं
कारण पूछतां तेणे पोतानी स्थिति जणावी. ते समये ते मुनिराजे सर्व
व्याधिने नाश करनारी अमृतसमान वाणी संभळावी के हे भद्र !
लक्ष्मी कोनी ! पुत्र पुत्री कोनी ! कोनुं घर ! ए शुं सारी रीते विचारी
छे ? आ जीवे अनेक जन्म मर्ण करी एवां केटलां मेळवी ते मूकीने
पोते चाल्यो गयो छे अने चाल्यो जशे ! माटे जन्मारो व्यर्थ न
करतां निश्चळ सुखने आपनारा एवा शिवपदने मेळववा जिनराजे
भाषेला धर्मनुं सेवन कर. बाकी अनिश्चित् संबंध धरावनारा लक्ष्मी
पुत्रादिमां जे प्रेम धारण करवो ते आकडाने के धंतुराने कल्पवृक्ष
मानी तेनाथी इच्छित फळ मागवानी इच्छा राखवा जेवी मूर्खाइ
सिवाय बीजुं तेमां कंइ देखातुं नथी ! ! !

ज्यां सुधी अज्ञान छे त्यां सुधीज तेवा देखीता रमणीक पदा-
र्थोमां मोह उत्पन्न थाय छ अने मोहमां मुंझायलो तेनी तृष्णामां रात्र-
दिवस चिंतवन करे छे अने तेवा अनुकूळ पदार्थो प्राप्त करवा अनेक
प्रकारनां योग्य अयोग्य कार्य करे छे, देशावर भटके छे, कुटुंब कबी-
लाने छोडे छे तोपण निर्भागीने पूर्वना पुण्य विना लक्ष्मी मळवी
दुर्लभज थाय छे अने कदाच कोइ वखत थोडी घणी प्राप्त थाय तो
पाछी गमे तेम गुमावी पश्चाताप करावे छे. तेमज लक्ष्मी प्राप्त थवा पछी
पण सगांवहालांनो संयोग निरंतर रहेवो ते पण दुर्लभ छे, तेमने कायम
राखवा पहोंचाडेली बुद्धि पण निष्फळज जाय छे अने आखरे कर्म
आवी उभुं रहे छे अने तेना माटे आ हाथीनो दृष्टांत हृदयमां विचार.

छतां ते प्रणेथी विरुद्ध नारंज धारेलुं खरुं करी दीधुं छे. अने एकना मनोरथ पूर्ण थवा दीधा नथी माटे सने खरेखर निठारज छे! आ दृष्टांतथी वैराग्य पामी संसारनुं खरुं स्वरूप समजी शिवमार्गे शिवपदनुं खरुं सुख प्राप्त करवाने मुनिवरना चरणनुं शरण करी चरण ( चारित्र ) ने अंगीकार कर्युं.

सुभद्राए आ कथा कहीने पछी कर्युं के कहो स्वामिनाथ! माणसनी अकल शुं काम लागे! ज्यां होय त्यां नसीब दगो दे छे त्यां कोने टपको आपीए!

आ प्रमाणे पाछली अवस्थामां अनेक प्रकारनी संपदाओ छतां पुत्रना वियोगना दुःखथी ते सुखी जोडुं पण दुःखी बनीने निरंतर परस्पर दिलासो आपवा नवी नवी वार्त्ताओ कहीने दिवस गुजारतां हतां पण अंदरनी पुत्रप्रेमनी चिंताए हृदयना मध्यने चिंतानी अग्निए शोषी नांखवाथी ते दवथी बळेला वृक्ष समान देखातां हतां अथवा कीडाए अंदर रहीने कोरी खाधेला चीभडा समान सत्व रहीत थएलां देखातां हतां. जेम घुणनो कीडो लाकडाने बहारथी सारुं राखी तेपण अंदरथी पोकळ बनावे तेम ते धणीधणीआणी उपरथी लोकलज्जाए धैर्य राखता छतां पण हृदयना निःशासाथी निरंतर दुःखी रही हाडना खोखां जेवां मांसरहित बनता मांड्यां हतां. निरंतर आंसुनी धारा वहेनारी तेमनी आंखो हती अने लोकमां तेमना बहु मानथी घणे ठेकाणे शुभ प्रसंगोमां जवुं पडतुं के घर दुकाननो मोटो वहीवट चलावतां नोकरचाकर मित्रो कुटुंबीओथी बोलतां के गमन आगमन करतां ते सघळुं बेभानपणे पहेले पूर्वना संस्कारथी पूतळीओ जेवी चेष्टा करे तेम करतां हतां.

आपघातना अत्यंत पापथी डरीने तेओए आयुष्यनी दोरी टकावी राखी हती छतां अंतरमां जीववानी जरा पण इच्छा नहोती. हमेशां एज उद्गार तेमना अंतःकरणमांथी नीकळता हता के हे धर्मिष्ठ ! हे वहाला ! तुं आव ! आव ! तुं तारा वृद्ध मातापितानी सेवा कर-

## प्रकरण १६ मुं.

### धनहीन सती यशोमतिनो पीयर निवास.

सुंदर शहेरना मध्यभागमां हजारो माणसोने निरंतर अशाता दानथी कोन्हाहल मची रहेला चोकमां राजमहेलनी बरोबर शोभता घरमां सेंकडो माणसोनुं ज्यां वेपारना कारणे आववुं थवुं अने देवमंदिर माफक जुदी जुदी जातना वाजींत्रो वागता अने ते सांभळवा लोकोनी ठठ जामती. सगां मित्रो नातिना रोजना शुभ कार्यना महोत्सवना आमंत्रणार्थी घर देदीप्यमान लागतुं. प्रसंगोपात धार्मिक क्रियाना स्थापन ( उजमणां ) प्रभावना धर्मरात्रि जागरण थतां ज्यां लोकोनी पधारे आवजाथी घोरे घाणु शहेर करतां अधिक प्रकाश रात्रीए रहेतो. अने विद्वानो पोतानी विद्याकळाने बतावी शेठजीनी हाजरीमां हाजर थता तेमने एक पछी एक मुलाकातनो लाभ केटली महेनते मळतो त्यां अरण्य जंगल जेवो उज्जड घरनो शांत भाग अने अंदरथी अव्यवस्थित भागेलुं तुटेलुं सघळुं जोइ अंदर पेठेली दासीने हृदयमां अनेक विचार थवा लाग्या के शुं हुं घर भूली छुं? के लोकोए मारी मश्करी करी घर बीजुं बताव्युं छे के देवताए चमत्कार बताव्यो छे के हुं उंघमां स्वप्न जोउं छुं. के जे शेठ जगतमां विख्यात थएलो हतो जेने त्यांथी रकमबंध मोहोरोज मारी मालिक वेश्याने त्यां हजुं पण चाली आवे छे तेना घरमां आवो देखाव होयज केम! माणस पण नथी के कोइने पूछी खुलासो मेळवुं. आवा अजाण्या भागेला तुटेला घरमां पेसतां कदाच अंदर दबाइतो नहि जाउं! अथवा भूतने भ्रमण करवाना स्थानमां पेसवाथी घेली नहीं थइ जाउं अथवा वरसादमां पडेला पाणीथी उगेली वेलोथी ग्वाडामां के कुवामां सपडाइ नहि जाउं? आजुबाजु मोटां पडेलां देखातां दरथी वखते कोई उपर पग आवतां साप विगेरेतो नहि करडे! अंदर कोइ जग्ये भींतोमां उगेला घासने

मंगावी लीधेलुं होवाथी घरमां खावानुं पण हवे रह्युं नथी. छतां पण तुं आवी वधामणी लावेली उदास चेहरे पाछी जाय ते करतां आ पति वियोगे अंगना बोजारुप थतां आभूषणो लेनी जा ! एम कही सौभाग्यना चिन्हरुप यथोचित अल्प अलंकार राखी बाकीना दासीने स्वाधिन करी दीधा. अंगमांथी आभूषण उतारतां पतिना विरहना दुःखथी आंसु पाडती अबळाना करुणाजनक देखावथी दासीनुं पण हैयुं भराइ आव्युं हतुं पण अक्काना हुकम अणचालते हृदयमां विचारी धैर्य लावी धनने बदले दागीनाने लेइ वस्त्रमां पोटलुं बांधी आवी तेवी उदास चेहरे धीमे धीमे नीकळी पोताना घेरे आवी अक्काने दागीना अर्पण कर्या ! ! !

अक्काए दागीना जोतांज धम्मिल्लनी निर्धनतानुं तथा दुःखी मातापिताना स्वर्गवासनुं जाणी लीधुं हतुं अने दासीए ज्यारे सघळी हकीकत विस्तारथी कही अने यशोमतीए पतिना नामथी खुरबान थइ दागीना अर्पण कर्यानुं सांभळ्युं के ते अक्का पण तेना श्रेष्ट चरित्रथी आश्चर्य पामी यशोमतीनी स्तुति करवा मंडी ! अहो ! जगतने विषे हजु पण सतिरत्नो विद्यमान छे के जे आवा अधम दुराचारी घरने पायमाल करनार परणेली पत्नीनुं स्वप्नमां पण नाम न लेनार अने परस्त्रीनेज विमुख थएला एवा पतिना नामथी पण संतोष पामी तेने पोताना भरणपोषण रुप दागीनाने पण निर्माल्य नकामा गणी पतिने मोकली आपे छे धन्य छे ते सतिने ! तेना अने मारामां केटलो फेर छे ! क्यां ते कल्पवेली अने क्यां हुं बोरडी ! क्यां ते सतिमां शिरोमणि अने क्यां हुं कुलटाओमां कलंकिन आ प्रमाणे कठोर हृदयवाळी हुं तेने पण जे पोताना श्रेष्ट वर्त्तनवडे कोमळ हृदयवाळी बनावे छे ते सति जगतमां जयवंती वर्तो.

आवी सतिना भरणपोषण रुप अलंकारने हुं केवी रीते अंगीकार करुं. खरेखर ते सतिना निर्माल्यने जो हुं अडीश तो पण महा-

पातक मने लागशे माटे वहेतर छे के तेना अलंकार तेनेज पाछा सोंपावुं. अरेरे पण हुं भूली आवी सतिने अमूल्य रत्नोवडे पण पूजीएतो ओछुं छे माटे चाल हुं पण तेवो थोडो लाभ पण कां न लउं! एम विचारी दासीने ते पोटलुं पाछुं सोंपवा साथे धम्मिलनी पूर्वे आवेली सोना-मोहोरोमांथी आठहजार तेना गुजरान माटे यशोमतीने पाछी मोकलावी के जेथी ते सतिने पोतानुं पोषण करवा अंगना अमूल्य दागीनाने निर्माल्य गणीने पति जीवतां वेचवा न पडे! दासीने पण वेश्याना आवा उदार स्वभावथी आश्चर्य साथे अत्यंत आनंद थयो अने पगोने पांखो माफक गतिमां वेग मळवाथी दासी दोडती दोडती जइ यशोमतीने नमीने तेना दागीना अक्कानी स्तुति संभळावीने पाछा आप्या. यशोमतीए पण तेने चमत्कारिक जाणीने पाछा ग्रहण करी लीधा. कारणके वेश्याने त्यां गयेलुं द्रव्य आ प्रथमज पाछुं आव्युं हतुं.

दासी दागीना लावी त्यारे प्रथम किंचित् संतोष थयो पण दासीना जवा पछी दागीना पाछा आवतां दासीए खरो खुलासो तेना पतिनी उपेक्षा संबंधी संभळावतां तेने पाछो अत्यंत शोक थयो अने मनमां विचारवा लागी के हे स्वामिनाथ! में शुं पूर्वे पाप कर्यां छे के छते पतिए अने शहेरमां विद्यमान छतां पण हुं आवुं असह्य दुःख दुःखमां रीबाती दीन बनीने सहन करुं छुं! हजु त्यां आवीने पण तमने पाछा लाववाने समर्थ छतां पण लाचार छुं के लोकलज्जाने तथा सति धर्मने बाध लागे माटे आववा अशक्त बनी गइ छुं! खरेखर तेमां तमारो दोष जरा पण नथी कारणके मारा पूर्वना पापना उदयथी छते ज्ञाने पण तमे मारुं दुःख जाणवा अशक्त छो! एम वारंवार विचारती घरमां रहेवाथी विशेष दीलगीरी थवाथी अने पतिनी आववानी आशा हवे निष्फळ थइ जवाथी तुटेला घरने वेचीने संसारना सुखनी आशाने सर्वथी मुकीने धम्मिलना वडीलोना नामने घरथी पण रहित करीने पीयरमां चाली गइ अबळानो बीजो आधार शुं होय.

# प्रकरण १७ मुं.

## अक्काए कांढी दीधेलो धम्मिल.

धम्मिलनी प्रेमदा माणीने बहु आवे तोपण पोते उपरथी प्रेम ओछो करती नथी पण पैसानी प्राप्ति बंध थइ. वेश्या दाम पहोंचे त्यां सुधीज काम लागे छे पण वेश्यानी जातिनी कुबुद्धि जेने लागी नथी एवी वसंततिलका परणेला पति माफक धम्मिलने खरा भावथी चहाती जोइ अक्काने हृदयमां अत्यंत संताप थयो. तेणे एक वखते सरळ हृदयवाळी वसंततिलकाने समजाव्युं के आ धम्मिल धनथी रहित थएल छे माटे हवे कोइ पण प्रकारे आशी रस्तो पकडाववो जोइए कारण के कुलांगना ( परणेली ) पण्यांगना ( पैसाथी वेचायली ) मां एम तफावत छे के एक तो जीव होय त्यां सुधी धनवान के निर्धनने पति तरीके स्वीकारी जींदगी सुधी तेना परणेला पतिनी खरा भावथी चाकरी करे छे अने पण्यांगना तो ज्यांसुधी नाणुं आवे त्यां सुधी पति अने द्रव्य आवतो बंध थाय के " प्रेम न होय रति " सुनो रस्तो पकडाववो पडे ! तुं हजी दुनियाना रिवाजथी अजाणी छे माटे आवा निर्धन थएला निर्माल्य उपर प्रेम धारीने गांडी थती गइ छे. अत्यार सुधी आ विचारी वसंततिलका पोतानी अक्का ( माता ) तरफथी कदी पण आवुं कटु वचन सांभळ्युं नहोतुं तेम पोते पण विनय साचवी सामुं बोलती नहोती पण पोताना प्राण करतां पण अधिक प्रिय अने गुणवान धम्मिलने जुदो पाडवा फरज पाडवाथी तेणे नम्रताथी कह्युं के माता शुं वृद्धावस्थाने लीधे गांडी तो नथी थइ के आवा रूपमां कामदेव, विवेकमां बृहस्पति, अने गंभीरतामां समुद्र सरखो अने उदारतामां मेघ सरखा धम्मिलथी मने जुदी पाडवा वांच्छे छे ! तेनामां अनेक गुणो छतां गुनाह विना केवी रीते मारे काढी मुकवो ? कारण

के धन करतां पण गुणो गुणीने वधारे प्रिय होय छे ! आटलुं डोनुं धन तने आप्या छतां पण शुं तारी तृष्णा मटी नथी अने धन आपनारने हुं दगो देइ काढी मुंकुं तो पछी कुतरा करतां वधारे निमकहराम कहेवाउं ! कारणके कुतरो रोटली निमकहलालीथी चाकरी करे छे त्यारे एणे तो पोताना धन साथ सर्वस्व मने अर्पण करी दीधुं छे ! आ प्रमाणे बंनेने निरंतर खुब क्लेश थवा लाग्यो वसंततिलका तेना गुणोथी रंजित थइ राखवा मागती हती त्यारे तेनी अक्का निर्धनने कोइ पण रीते घरमांथी काढवा तैयार थइ हती अने अकाए तेटला माटे वसंततिलका कंइ पण वस्तु जो अक्का पासे मागे तो शेरडीने बदले कुचा, तलने बदले खोळ, रंगने बदले रस, नीचोवेलां धोयां आपवाथी वसंततिलका खीजाइने माताने ठपको आपवा जतां अक्का कहेती के निरस पतिने जे अंगीकार तेने निरस वस्तु मळवानी अने जो सरस वस्तु जोइए तो सरस (धनवान) पतिने अंगीकार करवो जोइए त्यारे वसंततिलकाए संभळाववा मांडयुं के हे हृद्धा ! साठी ने बुद्धि नाठी तेम हवे तारी अक्कल गुम थवा आवी छे के कुचा जेवी वस्तुमां पण केवो गुण छे ते जो कुचाना खारमांथी साधु माफक कपडां जोवाय छे खोळ ढोरने खवडाववाथी पशु दूध आपे छे, अने धोयावडे दीवा करवाथी लालरंगनो प्रकाश पडे छे माटे आवी निरस वस्तुनो पण यथायोग्य उपयोग करवाथी मोटो लाभ आपे छे माटे मारो निर्धन पति पण तेना बीजा उत्तम गुणोथी मने वधारे काम लागे तेम छे माटे हुं तेने मुकी देवा चाहती नथी ! आ प्रमाणे मातापुत्रीने वारंवार संवाद थवा छतां पण अक्कानी इच्छा पार पडी नहि ! तेम वसंततिलकाए धम्मिलने काढयो नहि !

वेश्याओने कमानारो पुरुष घरमां होतो नथी तेमने वाह्य आडंबर राखवामां मोटुं खर्च राखवुं पडे छे अने धम्मिलना बापे पूर्वे

हजारो मोहरो मोकलेली होवाथी वसंततिलका तथा धम्मिलनो ठाठ वगर राज्ये राणी अने राजा जेवो हतो अने रोज चालु आवक होवाथी अक्काए पण तेमने खर्च करवा देवामां वांधो काढ्यो नहोतो पण तेथी खर्च दीनपरदीन वधतुं जतुं हतुं अने पूर्वे आवेली रकम खरचातां जुज शिलिक बाकी रहेली होवाथी अने हमणां तो फक्त खर्चज कायम हतुं अने पेदाश तो दमडीनी नहोती तेथी अक्काए विचार कर्यो के आ मोमीं धम्मिलथी जेम तेनुं कुटुंब पायमाल थयुं तेम आ निर्भागी जो वधारेवार हजु अहीं पड्यो रहेशे तो मारा घरना पण तेवा हाल थशे! माटे कोई पण उपायथी मारे तेने घरमांथी बहार काढवोज पडशे, नहि तो तेनामां लुब्ध थएली आ मारी अक्कल विनानी पुत्री तो तेने कदी पण घरमांथी काढशे नहि अने ज्यां सुधी आ निर्भागी घरमांथी नहि नीकळे त्यां सुधी बीजामां वसंततिलकानुं चित्त पण लागशे नहि.

वेश्याना हावभाव अने विलास तथा विभ्रमथी तथा अलंकार तथा वस्त्रोथी मोहांध थएला घरनी कुळवान स्त्रीमां राजी न थतां बहार भटकी जींदगी रद करे छे तेमां केटलाकने एवा भयंकर रोगो थाय छे के तेथी तेमनी सघळी काया सत्वरहित थाय छे. मोढा उपर तथा शरीर उपर चाठां पडी जाय छे, इन्द्रि सडी जाय छे, पिशाब बहु मुश्केलीथी थाय छे, परंतु धन खराब थई जाय छे तथा नवा नवा घेरे भटकतां सौनुं मन पुरु करवा जेटलुं धन मेळववा चोरीओ करतां शीखे छे, जुगार खेलतां शीखे छे, धंधामां चित्त लागतुं नथी अने छेवटे अन्यनी परणेली कुलट्या स्त्रीथी पण प्रसंग पडे छे तेथी तेनी कोई आबरु गणतुं नथी. वीर्य एवा खराब मार्गे जवाथी पुत्रादिकनी संतति थती नथी, अनेक रोगोथी सडेलो वैद्योनी दवा खावामां हजारो रुपिया नाहक खर्चे छे अने केटलाकने तो बीजानी राखेली स्त्री पासे गमन करवा जतां प्राणनो भय पण राखवो पडे छे, केटलाकने नाक कान कपाववां पडे छे. पुरुष इंद्रियने कपावानो प्रसंग आवे छे अने केटलाक सजा-

धीशोनी वेश्या पासे जतां मूल मवाहना भागमां लाकडानी खुंटी ठोकवा जेवो पण प्रसंग आवे छे.

आ प्रमाणे अनेक नुकसान छतां बाळबुद्धिना जीवो कुसोबते चडी तेवी अल्प मजाह लेवा जतां घणा खुवार थाय छे तेनां सेंकडो दाखला अहीं नाम सुद्धां नोंधी लइए तोपण नोंधाय तेम छे छतां ते वात जाहेर होवाथी विशेष न लखतां हाल धम्मिलनाज हाल जोइए.

शहेरनुं गंदु पाणी ज्यां एकठुं थतुं अने आजुबाजु घास, छाण, लाद विगेरेथी भरेली कचरापट्टीनी गाडीओना कचराना ज्यां ढगला थता तेवी उकरडानी गंदी जग्यामां सूर्यना कीरणोने ज्यारे आववानी तैयारी थई हती तेवी प्रभातना समये एक दिवस धम्मिल पोते जागीने जुए छे तो तेने अति आश्चर्य लाग्युं हतुं.

क्यां मारी फुलनी कोमळ शय्या? क्यां आ गधेडाने आळोटवा योग्य उकरडानी जग्या? क्यां शरीर तथा वस्त्रो उपर छांटवानी उत्तम सुगंधी अने क्यां आ नर्कनी कुपीमांथी नीकळवा समान गटरनुं खाळनुं गंदु पाणी? क्यां चारे बाजु गोठवेला सुगंधी फुलोनो मघमघाट अने क्यां आ सडी गयेलुं घास पाळाथी सडीने नीकळेलो बदबो! पण आ केम थयुं हशे! कोणे कर्युं हशे! शुं हुं मरीने नर्कमां तो नथी उत्पन्न थयो! ना, ना, नर्कमां अने अहीं घणो तफावत देखाय छे. दूर जता आवता माणसो मारा जेवा नारकीना जीवो नथी त्यारे हुं अहीं केम आव्यो! शुं उंघमां तो चालीने नहि आव्यो होउं अथवा मने कोई उपाडीने त्यां नहीं नांखी गयुं होय? पण ते बनेज केम! मैं कोईनुं बगाडयुं नथी. मारा उपर वेश्या रागवाळीज हती त्यारे मने कोण आम फेंकी दे? शुं मारा कोई दुश्मने तो आवुं अघटित कार्य नहि कराव्युं होय! पण आहा मने याद आवे छे के मारा खातर वसंततिलकाने तेनी माता साथे कजीओ थयानी वात सहेज सहेज मारा काने आवी हती अने ते कजीआनुं कारण पण हवे याद आवे छे के

धन आवतुं बंध थई गयुं एतुं पण काने में सांभळ्युं हतुं! धने शा माटे बंध थई गयुं हशे? मारां मातपिता जीवतां होय तो जरुर धन मोकल्या विना रहेज नहि! शुं तेओ मरण पाम्यां हशे के निर्धन थई गयां हशे! गमे तेम हो! पण तेनी तजवीज करवानी मारे शी जरुर छे? मारे तो मारी वसंततिलकाने जोइए छे अने ते पण मने प्राण करतां वधारे चाहे छे माटे चाल चल्लु ठीकठीक करी तेने मळुं अने अमे बे भेगां थयां के बीजानी शुं परवा छे! एम जे बखते चाले छे तेवामां विचार थयो के त्यां गया अने पेसवा नहि दे तो मारी पासे शुं उपाय छे के तेना मकानमां पेसी शकुं? आहाहा! ते अक्काए मने गई काले बपोरेज अनेक प्रकारे भोळवी मिजलसमां सामिल कर्यो हतो; मिजलसमां पण कोण! सघळी वेश्याओ! अने मिजलस पण शानी! दारु पीवानी मोज! स्वप्ने पण जेनुं नाम सांभळ्युं न गमे ते नजरे देख्यो! थातुं पण ठीक शोधी काढयुं. वाळी निर्दोष वसंततिलकाने बेभान करी पोतानुं इच्छित करवानुं! अरेरे पण हुं निर्भागी केवो के तेणे अनेक प्रशंसाओ दारुनी करी मने ललचाव्यो अने हुं पण ते मंखणीना वचनमां ललचायो! खरेखर में मातपिताने तज्यां, गुरुओने तज्या, सदाचारने तज्यो, स्त्रीने तजी त्यारे एवा अधर्म पासे धर्म तो क्यांथी रहे अने ज्यां अधर्म पेठो त्यां दारु बिचारो शुं गणतरीमां छे! पण तेनी शिक्षा पण थवीज जोइए. जेणे बीजाओने संताप्या तेने संतापनार दुनियामां बीजो शा माटे न होय! जे गुरुओना प्रतापथी एकेंद्रिय जीवनी पण हिंसा करवानुं मन न थतुं! जे मातापिताओना प्रसादथी देवकुमार जेवो फरतो, जे स्त्रीनी भक्तिथी रात्रदिवस देव माफक सेवा करातो, सारा मित्रोथी सत्कार्य करतो ते धर्ममां आगेवान जेवो हुं ते कुमित्रोनी सोबतथी निध्वंस परिणामथी अनेक प्रकारनी मोजमजामां मातापिता तथा स्त्रीने दुःख देनारो थयो छुं. तेमनुं धन नाश कर्युं छे. सेवा करवाने बदले संताप उपजाव्यो छे; तेनुं लागेलुं पाप हाल उदय अहींज आव्युं देखाय

छे अने तेनी शरुआत थवा मुजब मने अकाए फेंकी देवदावेलो जणाय छे! पण हुं भूल्यो! मने वधारे पाप तो ज्यारे मातापिताए अति आतुरताथी चाकरोने मोकलीने बोलाव्यो त्यारे में अधमे तेओने धोखी ना पाडी हती ते दुःखथी तेओ जीवतां हशे के मरण तोल हालतमां सडतां हशे? माटे मने तेओनो लागेलो श्राप जो पुरो थशे तो मारुं ठेकाणुं क्यांय पण नहि थाय! कदाच निर्दय हठीलो थइने वेश्याना घरमां जइश अने त्यां वधारे अपमान अका करशे तो मने बचावनार के सहाय करनार कोण छे! अने कदाच वसंततिलका मदद आवशे तो अंदर लई जईने दारुने बदले भोजन विगेरेमां विष खवडावी देशे तो अकाळमोतथी मरी जईश? माटे ए आशा तो मुकी दे! जो घेर जई मातापितानां दर्शन करी तेमने संतोष आपीश तो पाछी मारी सारी स्थिति तेमना आशीर्वादथी कांइक पण थशे एम करी कोई ओळखी शके नहि तेवा गंदा वेशमां उदास चेहरे वारे वरसे परदेशथी आवेलो होय तेम घणी शेरीओ फरी फरीने पगे चालतो पोताने घेर आव्यो, घेर आगळ तपास करतां पोतानी कंइ पण निशानी न मळवाथी हांफळोफांफळो थइ चारे बाजु निहाळी जोवा लाग्यो त्यां कोइ गंभीर चेहराना वृद्ध माणसने जोइ विनयथी पासे जइ पूछवा लाग्यो के हे काकाजी! अहींआं पूर्वे सुरेंद्र शेठ अने सुभद्रा शेठाणी रहेतां हतां ते क्यां गयां छे! देखातां केम नथी! तथा तेओनी अपार रिद्धि अने देवप्रसाद माफक शोभितुं मंदिर क्यां गयुं.

सुरेंद्रदत्त मख्यात शेठ हतो, अने धर्मात्मा होवाथी सौना हृदयमां कोतरायलो हतो तेथी ज्यारे ते मरण पाम्यो हतो त्यारे देशपरदेश सर्वत्र तेना मरणथी लोकोए शोकातुर थइ अनेक रीते धर्म करी तेना आत्माने शांति आपवाने बनता उपायो कर्या हता अने केटलाक दिवस सुधी तेना उत्तम गुणोथी आकर्षायला सज्जनो रात्रदिवस इष्ट देव माफक तेना नामनो जाप करता हता. तेवा धर्मा-

त्माना मरणने पण आ विचारो जाणतो नथी ? तेथी ते वृद्ध माणसे आश्चर्य पामीने तेने कहेवा मांड्युं के हे वत्स ! तुं दूर देशावरथी आवेलो अजाण्यो माणस देखाय छे के आवा जगत् विख्यात शेठना मरणथी पण तुं अजाण्यो छे ! अरेरे केवो धर्मात्मा सुरेंद्रदत्त शेठ ! के जेणे गरीबोना पोषणने माटे अनेक आश्रयस्थान काढेलां हतां. केटला गरीबो तेना लीधे रोटी कमाइ खाता हता. केटलां अनाथ बाळको, वृद्धो, विधवाओ, अपंगो तेनाथी आश्रय पामी रात्रदिवस तेनुं आयुष्य दीर्घ थाओ एवी आशीष आपतां हतां. शुं तेनी नम्रता ! शुं तेनी कोमळता, शुं तेनी सरळता, शुं तेनुं निस्पृहीपणुं, शुं तेनी क्षमा, शुं तेनो शांत चेहरो, जेणे कदापि पण कोइ जीवने संताप्या नथी, कोइनुं पण अहित चाह्युं नथी, राज्यमां मानीतो शेठ छतां पण गरीबोनी साथे केवी मायाळुपणानी बात करी तेमने धीरज आपी तेमनुं दुःख दूर करतो हतो. ते मरतां पोते तो मुओ नथी. यशकीर्त्ति-वडे जीवतोज सौना हृदयमां कोतराइ रहेलो छे ! पण तेना मरणथी सुभद्रा शेठाणी पति साथे पतिना दुःखमां भागीयण थवा झुरी झुरीने मुइ. वेपार धंधो बंध पडवाथी आवक बंध थतां सघळां धर्मादा खातां बंध थवाथी हजारो अनाथो जीवता छतां मरेला जेवा थनी परमेश्वर पासे प्रार्थना करी तेवा दातारनी उत्पन्न थवानी राह जोता बेठा छे अने प्रभुने विज्ञप्ति करे छे के हे प्रभो ! आवा धर्मात्माने मारी अमने निरंतर रीबाता कर्या छे ते करतां तेने अमर करी अमनेज मार्या होत तो वधारे बेहतर हतुं. अरेरे ! तेनो प्रथम धर्ममां लीन थएलो देखातो शत्रुरुप पुत्र क्यांथी उत्पन्न थयो के आवा धर्मात्मा शेठने अकाळमृत्युना कारणरुप थयो !

जे अधम पुत्रे परणीने पत्नीने दगो दइ मावापने तरछोडीने तेमनाथी मोकलायला पैसाथी अधम वेश्यामां गृद्ध थएलो कोइ दीवसे पण मातपिताने याद कर्या नहीं. एटलुंज नहि पण जेणे मातापिता

# प्रकरण १८ मुं.

## मृत्युना उपायो पण व्यर्थ.

एक भयंकर झाडपानथी रहित अरण्यमां ज्यां फक्त वंटाळभूमि रावेली हती. आंबा, दाडम, नारंगी विगेरे फळवाळां झाड अने सुगंधी पुष्पोनी लताओने बदले ज्यां त्यां बोरडीनां, बावळनां, थुवेरनां, फाफडीयानां नानां झाडो छुटां छवायां देखातां हतां. सूर्यना असह्य तापथी तथा कुवानां पाणी सुकाइ जवाथी कादव कीचडथी भरेला अवावर कुवा, तळावनां खाबोचीया आवेलां हतां. रस्तामां पाणी अने फळद्रुप झाडनी छायाना अभावने लीधे माणसो तेने रस्तो अति विकट लागवाथी तेओ जता आवता बंध थवाथी त्यां तद्दन शून्य लागतुं हतुं छतां पण त्यां खुन करनार के खुन करी तेना मडदाने फेंकवा माटे चोरटाओने दिवस पण संतावा माटे ते जग्या उपयोगमां लेवाती हती तेथी पडेलां मडदानो निकाल लाववा माटे गीध कागडा विगेरे पक्षीना के घोरखोदु विगेरे जंगली शिकारी पशुना दिवसे पण देखाव नजरे पडतो हतो ते अरण्यना वचमांथी हिंमत राखीने धोळे दिवसे पण कोइथी न नीकळाय तेवुं भयंकर त्यां लागतुं हतुं.

जमीनमां मोटा मोटा राफडा करीने रहेलां झेरी साप, अजगर, चंदनघो विगेरे त्यां निर्भयपणे फरता हतां तेवामां जानवरथी के वाघ वरुथी काटे पण प्राणार्थी पोताना घात थवा माटे एक युवान त्यां आजा पहोर सुधी फरतो हतो पण आश्चर्य ए हतुं के तेने मारी तेवुं पाप पोताना अंगमां ल्यावा दरेक अधम पशु पण नाराज हतां. आम पोतानुं मरण पण वाछतुं न मळवाथी तेणे पोतानी पासे घणा काळथी राखेली नानी तलवार तराडार काढीने तेने संबोधी कहेवा लाग्यो के हे मारी व्हाली नानी तलवार ! तुं तारा मालिकना गळे घा करवाथी

मागना युवानना करुणाजनक देखावथी जीवारी पशुपक्षीओ पण शांत बनी तेना दुःखने दूर थवानी प्रभु पासे प्रार्थना करता जेवो देखाव करनारां लागतां हतां. कंटाळ झाडो पण पवनथी पोताना कांटाना समूहने आम तेम फेंकतां बंध थइ गयां हतां. ते वखते युवाने मोटेथी बोलवा मांडयुं के मारो एवो दिव्य शक्तिवाळो छुपो शत्रु कोण छे के हुं दुःखीथी थई छुं. तेने मरवामां पण विघ्नकर्त्ता थाय छे ! हे प्रभो ! शुं मोतना दुःखने पण मेळवी शकवाने अयोग्य छुं ! हे देव ! हे देवी ! जे कोइ होय ते प्रत्यक्ष थइ मने कहो के शा माटे तमे मने पापीने मरवामां पण अटकाव करो छो !

आवी तेनी अत्यंत प्रार्थनाथी कहो के तेना कोमळ अंतःकरणथी कहो के तेना पूर्वे करेला पापोना पश्चात्तापना कारणे कोईए पण तेने अदृश्य आकाश वाणी संभळावी के हे युवान्! "मृत्यु साहस मां कर!" आ शब्दो सांभळतां तेने आश्चर्य साथे धैर्यता पण आवी तेथी शांत थई विचारवा लाग्यो के नजरे तो कंई देखातुं नथी त्यारे आ बोलनार कोण हशे ? आहा! पण देवी देवतानी ते पण शक्ति होय छे! कदाच मारी हितस्वीनी देवीए मारी दया लावी मारं भविष्यमां भलुं थवातुं जोई मने मरतां पण तेणे विघ्न नांखी बचाव्यो होय तो शुं आश्चर्य छे! अने ते मने जाहेर न देखाय तो पण शुं बगडयुं छे! माटे मरवामां शुं सार छे? जीवतो नर फरीने घरबार बधां वसावी नथी शकतो ? मरी जईश तो कुळनी अपकीर्त्ति मारे माथे कायमज रहेशे ? अने जीवतो रही सत्कार्य करीश तो वडीलोनी आबरुमां विशेष वधारो करनारो पण थईश? चडती पडतीना दिन सौने आवे छ ! झाडनी छाया पण बदलाती रहे छे तो मारो पण सारो दिवस भविष्यमां बधां नहि आवे ! माटे अहींआ हवे वधारे वार रहेवामां पण सार नथी एम कही नीकळी गयो !

पेलो युवान् ते आपणो धम्मिल हतो अने जंगलमां मरवा माटे पण तेज गयो हतो. पण मोत न आववाथी अने देवीना वचनथी पाछो फरेलो हतो ते एक फळद्रुप गुलझार वनमां उतावळथी चाल्यो आवतो हतो कारणके प्रथम जे मोतने लाववा मोतना मोढामां निर्भय पण शिकारी हिंसक पशुओना कवजामां गयो हतो. ते हवे मोतथी डरतो रखेने तेओ मारी वांसे न पडे माटे झडपथी चालतो लोकोथी वहेवारमां लेवाता मार्गमां आवी पहोंची थाकेला अंगने तथा दुःखथी दमायेला चित्तने विश्रांति आपवाने उलटभेर शीतळ सुगंधी पवनथी झुलता फळोना झुमखाथी शोभितां झाडोनी शीतळ छायामां बेसवाने इच्छतो हतो. वनमां पेसतां झडप कर्या करी अनुकूळ बेठकवाळुं ठंडी छांयनुं झाड जोई त्यां स्थिर थई चारे बाजु वननी सुंदरता जोई मगजने शांत करवा लाग्यो. आ वखते पूर्वनी दशा विसराई जवा लागी हती आशाना तुरंगो समुद्रना मोजां माफक तेना चित्तमां चोतरफ व्यापी रह्या हता पण आशाने आलंबनरुप कोई महान् पुरुषना आश्रयनी पण जरुर होवाथी तेने शोधवा आतुर हतो.



# प्रकरण १९ मुं.

## कुलीन वसंततिलकानो सुद्दढ प्रेम-विरह संकट.

जेम अहीं धम्मिल महान् पुरुषनो आश्रय शोधतो बेठो हतो तेम तेनी वहाली वसंततिलका वेश्यानी पण शुं स्थिति थई हती ते पण जोतुं जोइए!

जे सवारमां धम्मिल उकरडाथी पोताने घेर गयो हतो तेज प्र-भातमां दारुनो निशो उतरतां वसंततिलका जागी अने हमेशनी माफक पोते धम्मिलनी शय्यामां तेने उठाडी तेने स्नानादि करावबा माटे ज्यारे तेना सुवाना ओरडामां दाखल थाय छे त्यां शय्या सुनी पडेली जोई धम्मिलने न देखवाथी वेबाकळी बनेली वसंततिलका आश्चर्य पामी तेनी दासीने पूछवा लागी पण कोईए संतोषकारक खुल्लासो न आपवाथी अक्काने पूछयुं पण ते तो सामी गळे पडवा लागी के ते अधमनी खबर मने शा माटे पुछे छे! शुं ते दरेक वात मने पुछीने करतो हतो के हुं तेनी खबर राखवा बेठुं! वळी तेनामां शुं माल हतो के तेना माटे आवी शोकातुर बनी बेठी छे! अने ते निर्धन निर्भागी जतो रहेवाथी तारुं शुं बगडी गयुं छे! कमळ सरखां नेत्रवाळीने तेने भेटवाने सुगंधीने वांच्छनारा भमरानी माफक कयां लक्ष्मीवान रुपाळा गुणवान श्रीमंत पुत्रो तैयार नथी!

आवां कठोरतां वचनोथी वसंततिलकाए बिचारी नीचुं के आ अधम अक्का, रे! मारी देखीती माता छतां पूर्व भवनी वेरिणीए मारा पतिने बधाय पण बेभान करीने फेंकावी दीधेलो देखाय छे के तेनी घात करावी हशे? अने गई काले उत्सव करवानुं तथा सौने दारु पावानुं पण ते दुष्टाए ते माटेज कर्युं हशे एम वारंवार विचारी ते अक्काने तिरस्कार साथे धमकाववा लागी के, हे हराम बनावनारी माता

रुपे वैरिणी शत्र! तें मारा प्राणपतिने शामाटे माराथी दूर करी तेनुं तथा मारुं हित सर्वथा नाश करी दीधुं? ते धम्मिले तने आपवामां शुं बाकी राख्युं हतुं! तारा घरमां ठाम ठाम सुवर्णना ढगला करनार अने आवी आबाद स्थितिमां लावनार अनेक प्रकारनी उत्तम वस्तुओथी मने, तने तथा आखा घरने शोभावनार एवो कल्पवृक्ष समान फळदायी धम्मिल मारा हैयानो हार तें शा माटे अने क्यां मोकळावी दीधो! हे साप तुं पण गर्व मूकी दे, अग्नि तुं पण मान मूकी दे, कारण के तमे तो दूध पानार के मद्य के घी होमनारने बाळो छो पण आ मारी अक्काए तो सर्वस्व अर्पण करनारनो पण अंत आणी दुष्टतामां तमाराथी अधिक दरज्जे चढी छे! क्यां ते बुद्धिनी चातुर्यताना विलासना वाक्योना दिवसो अने क्यां आ मूर्ख अक्काना दुर्वचन सांभळवाना दिवसो, क्यां ते गुणना सागर धम्मिलनो समागम क्यां. आ घरना मूर्खना सरदारो एवा नोकरोनो समागम! पण हजु आ पापिणी अक्का मने संभळावे छे के! धम्मिल जेवा निर्धन तुं कहे तो गलीए गलीए भटकनारा सेंकडो लावी आपुं! तेथी मने एम लागे छे के मने बीजा कोई श्रीमंत साथे संबंध जोडवा अने धन प्राप्त कराववा ते उमेद धरावे छे! पण ते फोकट फांफां मारे छे! एक श्रीमंत गुणवान युवानने सर्व प्रकारे पायमाल करी तेना कुटुंबनुं निकंदन करावी तेने गमे त्यां फेंकावी हुं अहीं सुखथी बेठेली छुं. अरे मारा प्राणो तमे मारा अंगथी शामाटे विमुख थता नथी! में पूर्वे महा पाप करी आ अधम कुळनी निर्दय अक्काना कुखमां अवतार लेई गुणवानने पण निर्गुण बनावी, धर्मीने अधर्मी बनावी, तेना धनने, आबरुने, सत्यने नाश करनारी थवाथी मने केटलुं पाप आ भवमां लाग्युं छे! हे प्रभो! हुं ते पापोथी केवी रीते मुक्त थईश! मारुं भविष्यमां क्यां गमन थशे! अने हजु पण धनना लोभमां पडी जो बीजाने फसावीश तो केवुं भयंकर पाप बंधाशे!

भले ते परणेलो हो के पोतानी करी माननारो होय! पण मारे तो ते परणेला पति करतां अधिक माननीय, वंदनीय अने चाहावा योग्य छे. जो के ते दुनियामां जीवता छे के मरी गया छे के मरणतोल हालतमां छे पण ते जाण्या विना हुं तेने सहाय केवी रीते करुं ? तेने केवी रीते मळुं! तेनी क्यां शोध करुं! क्यां जइने पुछुं! पुछुं तो कोण पत्तो आपशे! मारा रुपथी कोई वधारे संतापनार तथा शीयळ भंग करनार कोई पापी मळी जशे तो मारा पतिव्रतना भंगने दूषण लागशे तेथी अहीं रहुं तो अज्ञायी अने वहार जाउं तो बीजायी मारा शीळने दूषण लागवानो संभव छे! तेथी ते शीळना रक्षण माटे तथा पतिना दुःखमां अहीं रहीने पण भागीयण थवा माटे आजथी मांडीने ते पति हैयाना हार मारा न थाय त्यां सुधी मारे दुनियाना सघळा स्वादो तजी देवा जोइए! तेथी पान खावुं, आभूषणथी अलंकृत थवुं, वेणी बंध बांधवो, के शरीरने शोभाववुं ते सघळुं त्याग करुं छुं. धन्य पुरुषनुं कामदृष्टिथी मोढुं जोवुं पण बंध करुं छुं. भले जीवते मळो के मुआ पछी मळो पण तेज मारा प्राणोना मालिक छो, स्वप्नमां पण अन्यनो संग न थाओ! एम वेश्या छतां पण परणेली माफक सतिव्रत पाळवा लागी.



# प्रकरण २० मुं.

## मुनिवर्यनो मेलाप–उपदेश प्रसंगे गुणवर्मानुं दृष्टांत.

द्राक्षोना मांडवा द्राक्षोथी देखवा योग्य थइ रह्या हता. केळो केळांना समुदायथी झुकी रही हती. पक्षीओ कल्लोल करी रह्यां हतां. मधुकरो झंकारव करी रह्या हता, युवानो आरामगृहोमां आराम लेता हता, एम सघळां सुखी वनने विषे देखावा छतां पण आपणो धम्मिल हजु निराश चहेरे झाड तळे बेसीने अनेक तरंगो करी चोतरफ निहाळतो हतो. तेवामां तेना प्रबळ पुण्योदयथी रत्नोने पेदा करवामां रोहणाचळ जेवा अने गुणोना सागर आभवपरभवनुं दुःख दारिद्रने दूर करनार शांत मुद्रावाळा दर्शनथी पण व्याधिनो विनाश करनार सर्व विद्याना पारंगामी अने धैर्य तथा धर्मना स्थानरुप अने कुकर्मनो नाश करनारा एवा एक मुनिराज जेओ तपस्यावडे कृश छे तोपण जेना मोंढानो चेहरो तथा ललाट मध्यान्हना सूर्य माफक अतिशे तेजस्वी हतो तेमने अशोकवृक्ष तळे ध्यान करता उभेलाने दूरथी जोया. जे समतावाळा छतां पर उपकार करवामां आतुर हता, पोते वनमां रहीने पण सर्व प्राणीओनुं अवन ( रक्षण ) करता हता.

*एकांत शिवरमणीमां रक्त छतां पण अनेकांत वीतरागना मार्गने* भतिबोध करवामां समर्थ हता. पोते अकिंचन छतां पण अकिंचन ( दरिद्री ) ने इंद्रनी रिद्धि आपवा समर्थ हता. पोते बीजा उपर धर्म स्नेह राखवा छतां पण पोते रमणीक अरमणीक सर्व वस्तु चराचर उपर निर्मोही गणाता कर्मनुं विवरण करवा छतां पण कर्मना समूहथी तेओ दीनपरदीन छूटा थता हता. आवा अलौकिक परमार्थी पुरुषनुं सेवन करवुं ते सर्व सुखोने आपवामां सुखनी खाण समान छे ! तेमनुं सेवन तो दूर रहो पण वचन सांभळवुं ते पण सर्व व्याधिने

शांत करनारुं हतुं. कदी वचन न सांभळाय अने दूरथी दर्शन थाय तो पण दारिद्र तो दूरज भागी जाय तेम हतुं दर्शन तो दूर रहो पण कदाच तेमनुं नाम पण हृदयमां याद आवे तो हृदयना मेलने काढी नांखवा ते नाम पण समर्थ हतुं ! तेथी ते साधुने दूरथी जोवाथीज तेना मननी चिंताओ मनमांज लीन थवा मांडी. चित्तमां थाइना, अंगमां शक्ति, जीभमां वाचळता अने शरीरमां नमनशक्ति आववाथी त्यांथी उठी तेमनी पासे गयो.

पूर्वना साधुने वंदनना संस्कारो हृदयमां स्फुरायमान थवा लाग्या तेमने प्रदक्षिणा करी मस्तकमां अंजली लगावी शीरने साधुजीना चरणमां मूकी मस्तकेन वंदामि एम यथायोग्य वंदन करता धम्मिल्लने ते मुनिवरे धर्म लाभ एवी मेघनी गर्जनारुप वाणीवडे आशीष आपी. उपदेशने योग्य धारी उपदेश देवा मांड्यो ! सर्वे जनोने श्रेष्ठ पद अपावनारी संपदाओ प्राप्त थवी मनुष्यने सुलभ छे. मनोहर लावण्यथी झळकी रहेली कांतिवाळी कांताओ प्राप्त थवी सुगम छे, तेम हाथी घोडा रथ अने राज्यनी साहबी मळवी पण कोइ वखत सुलभ थाय छे पण बुद्धिवानोनो वहालो जे अमूल्य धर्म ते महा पुण्योदयथी कोइ वीरलानेज प्राप्त थाय छे ! ते धर्म रत्नोमां चिंतामणी सरखो अने वनोना वृक्षोने प्रफुल्लित करनार जेम मेघ अने वसंतऋतु छे तेम सर्वे सुखोने आपनार धर्म अने धर्म आराधननी क्रिया छे जो ते विधिपूर्वक समजीने क्रिया करवावडे धर्म आराध्यो होय तो सर्वे भयोथी प्राणिने निर्भय बनावे छे अने आ लोक परलोकमां वांछित फळ आपे छे! पण धर्म आराधन करतां इंद्रियोना विषयो धन लेवा जतां जेम व्यंतर के नाग विघ्न करे छे तेम धर्ममां विघ्न करनारा तेओ थाय छे तेथी करीने केटलाक व्रत लेता नथी तेथी मोहमां मुझायेला जीवो अनाचार सेवीने दुर्गतिमां जाय छे अने केटलाक किंचित् हिंमत राखी व्रत थोडां घणां ले छे तो ज्ञानदर्शन चारित्ररुपी रत्नोने लुंटवा ते

इंद्रियोना विषयरूपी लुंटाराओ निरंतर आडा आवे छे माटे जैन धर्ममां कहेला विधिथी एटले निश्चय वहेवारने उलंघोने जेओ प्रवर्तन करे छे तेओ फळीभूत थता नथी तथा विषयोनेज जेओ श्रेष्ठ गणी तेने लेवा प्रयत्न करे छे ते विचारा चिंतामणी रत्नना भ्रमे काचना टुकडाने ग्रहण करी दुःखी थाय छे! कोयलाना भूकावडे शरीरनी शोभा करवी के भालानी अणीवडे आंखनी खणज खणवी तेवी इंद्रियोना विषयवडे साची मझाह लेवा जेवी छे माटे प्रथम मधुरता अने पछवाडे प्राण हरनार हळाहळ विषसमान जे इंद्रियोना विषयो तेमां कदी पण लल चावुं नहि. माटे दुर्जनना संग माफक ते विषयोना संगथी डरीने तेनाथी दूर रहेतां दुर्गतिनो रस्तो दूरज रहे छे अने सुलषी गुणवर्मा माफक सद्‌गति मेळवे छे!

गुणरूपी अलौकिक रत्नोथी अने हीरा माणेक पानां विगेरे लौकिक रत्नोथी अलंकृत थएला माणसोथी देदिप्यमान थएला कुरु देशमां हस्तिनापुर नामनुं नगर देवोना अमरापुर माफक शोभी रहेल छे, त्यां दशरथ राजा अने चंद्रानना नामनी पटराणीथी अद्भुत विक्रमवाळो गुणवर्मा नामनो कुमार सिंहस्वप्न सूचवीने उत्पन्न थएलो होवाथी बाळपणामां पण शत्रुओने कंपारो उपजावतो हतो. तेनी कांति सूर्यना जेवी प्रतापवाळी होवा छतां पण सरळ पुरुषोने चंद्रमा सरखी शीतळ लागती हती. सघळा गुणोथी ते भरेल होवाथी लोकने तेना पूर्ण रुपथी तेने निहाळी जोतां दृष्टि तेना रुपमां लीन थती अने तेओनुं हृदय तेना गुणोमां रक्त थवाथी तेनो सहवास घडीभर पण छोडवो तेओने गमतो नहोतो. निशाळे उपाध्याय पासे भणतां थोडा काळमां सघळी विद्याओने स्थिरताथी रहेवानुं ते स्थान थइ पडयो हतो तेने तेना जेवो गुणनो सागर सागर नामनो मंत्रि पुत्र निशाळमां भणतां सोबती मळवाथी बंनेने एक बीजा उपर अतिशे प्रेम बंधाइ गयो हतो अने एक बीजाने भणवामां मददगार थइ पड्या हता.

एक दिवस ज्यारे ते कुमार सर्वे विद्याओ भणीने यौवावस्था पामीने पोताना पिता पासे राजसभामां बेसीने पोतानी निपुण बुद्धियी सभासदोनुं मन रंजित करतो हतो तेवा समये तेनो पिता तेना माटे सरखा गुणवाळी योग्य कन्या शोधवानी तजवीजमां हतो. ते समयेज सीपाईए आवीने सूचना करी के श्रीपूरनगरना श्रीषेणराजानो मंत्रि आपना पासे आववानी ईच्छा धरावतो दरवाजा आगळ उभो छे. राजाए तेने कर्युं के शीघ्र लाव; त्यारे ते मंत्रिए सभामां आवी राजाने नमस्कार करी अरसपरस कुशळता पूछी राजाए आपेला आसन उपर बेठो, त्यारे पोतानुं आववानुं कारण राजाए पूछवाथी मंत्रिए कर्युं केः अमारा स्वामिने कनकवती नामनी कनकसदृशी कांतिवाळी अने कळाओना समूहने विलास करवाना स्थानरुप बनेली अने शीळना भूषणे शोभिती एवी यौवावस्थामां आवेली पुत्री छे, एक समये ज्यारे ते पिताने नमस्कार करवा आवेली त्यारे तेना शरीरना अंगोपांग पूर्णपणे निहाळतां तेनी परणवा माटे थएली योग्य उमर विचर्मा चितववा लाग्यो केः आतो परणवा योग्य थई पण एना जेवो कळावान् पति तेना माटे क्यां शोधवा जवो. आम चितामां पडेला राजाने मंत्रिए कारण पूछतां तेणे यथास्थित कही बताव्युं. त्यारे मंत्रिओए धीरज आपी के हे प्रभो ! तमे चिंता शा माटे करो छो ? ज्यारे प्रबळ पुण्ययी तेणे आवुं रुप अने गुण प्राप्त कर्या छे, त्यारे तेना माटे पति पण ते प्रबळ पुण्ये कां नहि उपजाव्यो होय ? छतां पण अमुक वरने आपो तेवुं वचन काढवाने पण अमो असमर्थ छीए; कारण के योग्यने बदले कदाच ते अयोग्य नीकळे तो अमोए अत्यार सुधी पराक्रमथी मेळवीने बाळने सफेद कर्या छे तेने कलंकरुप काळो डाघ शामाटे लगाडीअे ! माटे तेना सारु स्वयंवर मंडप रचावो के त्यां आवेला उत्तम पुरुषोमांथी एकाद नररत्नने ते कन्यानुं पुण्यज शोधीने तेने आपशे. राजाए पण तेमनुं वचन मान्य कर्युं कारण के राजाना धर्मचक्षु तो अंगनी शोभा-

मंडप तैयार कराव्यो छे तेनी सांगक सर्वे नामांकित राजाओने आमंत्रण आपवा माटे माणसो मोकलवामां आव्या छे, अने आपश्रीने बोलाववा मने मोकल्यो छे, आप त्यां पधारी आपना चरणकमळवडे श्रीनगरनी भूमिने पवित्र करो! आटलुं प्रधाने कह्याथी वृद्ध राजा विचारवा लाग्यो के मारी वय जोतां अने शरीर उपर आवेल्या जमनादुत समान पळी जोतां अंतकाळे पण आदरेलो धर्म स्वर्गनुं स्थान तथा शिवपद आपनारो छे तेने सम्यक् प्रकारे सेवीने मळेला मनुष्य जन्मनो ल्हावो लेवा रुप मारे कार्य करवानुं बाकी रह्युं छे तेमांज हवे लीन थवुं जोइए छे! पण पाणी ग्रहण करवुं के पाणी ग्रहणना मंडपमां जइ बेसवुं ते कोइ पण रीते योग्य नथी, पण ते सुंदरी तो युवान् गुणवर्माने योग्य छे तेवो चोकस विचार करीने आवेला प्रधानने संतोष आपीने तेनी साथे शुभ मुहूर्त्ते पोताना पुत्रने योग्य माणसो सहित मोकल्यो. ज्यारे थोडा वखतमां एक सरखा प्रयाणथी तेओ श्रीपुर नगरनी सरहदमां आव्या त्यारे श्रीषेण राजाए प्रथमथीज सर्वे राजाओने योग्य सन्मान आपवा माणसोनी तजवीज करी छतां पण गुणवर्माना गुणोत्करथी आकर्षायलो राजा जाते सामे आवीने तेने योग्य स्थाने उतारो आप्यो. आम एक एक राजानो प्रवेश महोत्सवपूर्वक थतो होवाथी रात्रदिवस वार्जीत्रनो अने गायनोनो ल्हावो त्यांना शहेरीओने जोईए ते करतां पण अधिक मळतो हतो; छतां पण तेमां अत्यंत मधुरता होवाथी देवोना वैक्रिय शरीर मायक उदारीक शरीर पण तेओ रसमां लीन थयेला थाकने जाणता नहोता!!!



# प्रकरण २१ मुं.

द्रष्टांत चालु–ब्रह्मचर्यनी शरतथी गुप्त रीते पति पसंदगी.

लग्ननो दिवस नजीक आवतां कन्याए एक रात्रे विचार कर्यो के सारा नरसानी परीक्षा करवाने असमर्थ एवा, राजाए मारा मळा माटे सारो वर शोधी काढवा आटलो मोटो प्रयास तन, मन, धन, खरचीने कर्यो छे अने ते छतां पण जो हुं योग्य वरने न पामुं तो मारो जन्मारो रद थाय, अने पितानी लीधेली महेनत व्यर्थ जाय. पण जे पिता जाहेर रीते सौने मळी तेमना दरेक कार्यथी वाकेफ थया तेनी पासे सघळां साधन छतां पण जे पुरुषनी परीक्षा करीने योग्य वर शोधवा पोताने अशक्य मानी मने सोंपे छे, त्यारे हुं निरंतर घरना खुणामां पडी रहेली अपरिचित राजाओना गुणोने के दोषोने केवी रीते शोधी काढीने योग्य पुरुष पसंद करीश? कारणके मने परणवानी इच्छा राखनारा राजाओ तथा राजकुमारो मल्लो जेम विजयलक्ष्मीने वांच्छी अनेक प्रकारनी चातुर्यता बतावी युद्धमां वीर (लडवैया) तरीके दीपी उठे छे तेम तेओए अनेक प्रकारनां वस्त्राभूषण पहेरी ठाठमाठथी सिंहासनोनी श्रेणीने स्वयंवरमां शोभावता रहेशे, तेम पोतानी वाक्चातुरी, हुन्नरकळा, वीरत्वना पोताना भाट चारणो बीरदावळी बोलावता रहेशे त्यारे हुं त्यां सुगुणी के दुर्गुणीने सगक्षणवारनी परीक्षामां केवी रीते पसंद करीश. माटे बेहतर छे के तेओना निरंतरना गुणदोषोने तपासवा आजे हमणांज एकांतमां बेठलाने हुं जोई लउं तो वधारे सारु कारणके बहार ठाठ बनावनारा एकांतमां पोतानी हमेशनी आदत दूर करी शकता नथी! एम विचारी पुरुष वेश धारण करी एक वृद्ध स्त्रीने पण वेश बदलावीने साथे लइने राजाओना अभ्यंतर गुणदोष तपासवा नीकळ्या. कारणके माणसनी

उपर देश, रूप, विगेरेनी परीक्षा करवी सुगम छे पण समुद्रना तळीआ माफक तेना अंदरना गुणदोषो तपासवा अति दुर्लभ छे!!!

जुदा जुदा उतारामां ज्यारे तेओ भ्रमण करे छे त्यारे केटलाक राजाओनी विचित्र वर्तणुंक तेओना जोवामां आवी तेथी वृद्धाने कुमारी एकांतमां कहेवा लागी के आ राजा पोतानी अल्पकळा चातुर्यथी पण अहंकारमां आवी दारुना नीशामां आवेलानी माफक जेम तेम बोलवामां पाछी पानी करतो नथी! आ बीजो राजा तो साप जेवो क्रोधी रहीने किंचित् गुनाह करेलो नोकर वारंवार माफी मागवा छतां पण तेना उपर स्नेह दृष्टिथी जोई शकतो नथी! आ त्रीजो राजा तो माणसो साथे केवा प्रकारे बोलवुं ते पण गामडाना गमार माफक जाणतो नथी!

एम कोईमां कांई अने कोईमां कांई दोष जोती गुण विनाना अनेक जीवोने नीरखीने निराश बनेली कुमारी पोताना दुर्भाग्यने दोष आपती अनुक्रमे फरती फरती गुणवर्मा कुमारना उतारे आवी त्यां राजकुमारने नजरे निहाळतांज तेनो थाक तथा चिंता दूर थई गयां. विचारवा लागी के शुं तेनुं रूप, शुं तेनी यौवनवस्था, शुं तेनी बोलवानी पद्धति, शुं माणसोनुं मन संतोष करवानी ढब, शुं कुदरते सघळा गुणोने एकत्र करीनेज आ नररत्नने दुनियामां उत्पन्न कर्यो हशे? के मारा पुण्यना उदयथी पृथ्वी उपरना सघळा सद्गुणो खेंचाई आवीने तेना शरीरमां स्थिरताथी रह्या हशे! तेनी परीक्षा करवाने कोण समर्थ छे एज मारो धणी थाओ अने तेने परणीनेज हुं मारो जन्मारो सफळ करी शकीश! एम विचारती ए पोतानुं चित्त त्यांज तेने अर्पण करी कायाथी पोताना महेलमां आवीने वृद्धा (धावमाता)ने हार तथा संदेशो आपीने गुणवर्माकुमार पासे मोकली कुमारे पण ईशारतवडे माणसोने दूर करी वृद्ध स्त्रीनो आदरसत्कार करी आगमननुं कारण पूछ्युं

## प्रकरण २२ मुं.

### द्रष्टांत चालु कनकवतीनुं लग्न.

आ चक्रेनी आवी रीते छूपी रीते गोटवण थया छतां पण सघळा राजाओ तथा राजकुमारो पोताने तेवो लाभ मळशे, तेवी उमेदमां वाकीना दिवसो गुजारी लग्नना दिवस पहेलां छेल्ली रात्रिए पोताना नोकरो मारफते दरेक राजाओने अमुक वखते स्वयंवर मंडपमां आववानुं आमंत्रण करेलुं होवाथी अमूल्य वस्त्राभूषण अलंकृत थएला तेओ वखतसर आवी पहोंच्या. चारे दिशाना दरवाजे पोतपोतानी योग्यता प्रमाणे हाजर राखेला नोकरोए नामांकित आसन बनावतां सर्वे राजाओ पोतपोताना स्थळे विराजेला देवकुमारो माफक शोभता हता। पण ज्यारे अनुक्रमथी सौ पोतपोताने स्थानके बेठा, त्यारे गुणवर्मोकुमार पण पोताने आसने बेठो पण प्रथम जे राजाओ सूर्य माफक आडंबरथी तथा तेजस्वी चंद्रथी प्रकाशता हता, ते सघळा गुणवर्माकुमारनी प्रभा तेमना उपर पडतां तेमने विशेष तेज मळवाने बदले सूर्य उगतां तारा झांखा पडी निस्तेज थाय तेम सघळा झांखा पडी गया. अने अंतरमां शोचवा लाग्या के: आपणे परणवानी आशा राखवी ते निरर्थक छे। छतां पण आवा अमूल्य नररत्नने जोईनेज तेना दर्शनथी आपणो प्रयास सफळ थयो छे तेवुं तेओ मनमां मानवा लाग्या। थोडीवार पछी कुमारी शणगार करीने ज्यारे पालखीमां बेसीने वरमाळ सखी पासे उपडावी वाजींत्र वाजते तथा गीतो गवाती आवी त्यारे सर्वे राजाओ तेने जोवा आतुर थई गया; अने ज्यारे ते नीचे उतरी एक एक राजा पासे अनुक्रमे आववा लागी त्यारे तो तेओनी दृष्टि तेना तरफज आकर्षाई रहेती हती, अने विचारता हता के आते अप्सरा छे के नागकुमारी छे के सरस्वती छे के साक्षात्

रंभाना के रतिना रूपने आक्रमण करवा आवी छो! तेने ओळखीने आपणी आंखो मळवाथी सफळ मानीए छीए!!!

हवे प्रतिहारिणी जे घणाखरा राजाओना चरित्रथी वाकेफ हती, ते मधुर स्वरे कुमारीने केहेवा लागी, हे वत्से! तारा उत्तम गुणोथी आकर्षाइने आवेला सघळा राजाओ तने मेळववा चाहे छे. माटे एक एक राजाना चरित्रने सांभळीने तेना गुणोथी जाणीती थइने एक नररत्नने शोधी ले.

जो आ माळवानो महाशाळ नामनो बळवान महाराज बेठेल छे, जे शत्रुरूप झाडोने विषे दावानळ समान छे, अने सेवा करनारा उपर कल्पवृक्ष माफक वांछित दान आपनार छे. माटे जेम पोतानी वृद्धि, सुंदरता तथा प्रफुल्लितपणुं मेळववा जेम वेल वृक्षने वींटी वळे छे तेम तारा कल्याणने माटे आ महीपतिने वरमाळा आरोपण कर त्यारे कन्याए धीमेथी कह्युं के जो ए माळवानो महाराज छे तो सौनी आगळ धुरी (वेळ) थइने पहेलो केम बेठो छे! जेथी आगळ चालीने प्रतिहारिणी केहेवा लागी हे कन्ये! जो आ शत्रुरूप वकराना टोळामां सिंह समान गाजी रहेल सिंह नरेशने परणीने तेनी राजधानी चंपाने अंगदेशना अंग माफक छे तेने अलंकृत कर.

कुमारीए कह्युं के सिंह साथे सिंहण शोभे, पण हुं तो बळ (सत्व) विनानी अबळा छुं, तेथी अयोग्य जोडानो संबंध क्यां सुधी टके? पछी मगधदेशना राजग्रही नगरीना महाबळराजने उद्देशीने कहे छे के हे बाळे! जो आ (समूह) तो जो के जेना यशने गावाने भाट चारणो रात्र दिवस मुखरी बनीने गायांज करे छे अने जे राजाए पोतानी लक्ष्मीने असार जाणीने प्रजाना ग्रहो संपत्तिवडे राजग्रह (राजाना महेल) जेवां करी मूक्यां छे तेवा अतुल्य संपदाना स्वामिने हृदयमां धारण कर. कन्याए कह्युं के तेवा गुणवाळो तो मारो पिता थवाने योग्य छे. पछी काशीना वासी वीरसेन भूपने प्रतिहारिणी वर्णववा

लागी. हे मुग्धे! जेनी कीर्तिस जाणे साक्षात् रूप धारण करीने तेना चरणनी सेवा करवा माटे उज्वळ जळसमूहने धारण करी रहीं गंगा नदी निरंतर वहे छे ते गंगा नदी तथा राजाना अमूल्य गुणो जगत्ने पवित्र करे छे तेना चरणनुं शरण लई तुं पण जगत्ने पवित्र करनारी था! कन्या बोली के हे मात! ते काळो छतां तेनी कीर्त्ति धोळी केवी रीते होय?

आगळ चाली सोरठना सूरराजाने प्रतिहारिणी वखाणवा लागी के: हे सुंदरि! अभव्योने दुर्लभ एवां शत्रुंजय अने गीरनार जेवां पवित्र तिर्थो जेना राज्यमां स्थान करी स्थिरतार्थी रह्यां छे तेवा तीर्थोनी निरंतर सेवा करवा सुलभ थवा माटे आ सूरराजाने पसंद कर, कारणके जेने कोशाध्यक्ष ( भंडारी ) माफक समुद्रवांच्छित संपदाओ तरंगोना उल्लास साथे अर्पण करे छे! कन्याए कह्युं के निरंतर समुद्रना खळभळाटना घोंघाटथी निद्रा केवी रीते लेवाय? आ प्रमाणे अनेक राजाओना अनेक गुणोने अनेक प्रकारे स्तवीने सर्व राजाओने संतोषीने प्रतिहारिणी तेमना उपर प्रेम धरवा कन्याने सूचवती हती, पण मेरु पर्वत माफक धीरता धरावी कन्याए कोई उपर पण पोतानुं मन ललचाव्युं नहि. त्यारे गुणवर्मा कुमारनो वारो आवतां वृद्ध स्त्री बालिकाने कहेवा लागी के: हे सृष्टि सौन्दर्य! तारा पूर्ण भाग्यना साक्षात् रूपी समूह माफक शोभता आ गुणवर्मा कुमारने जो! जे धर्ममां दृढ, अने कळामां प्रौढ अने निरंतर परोपकारमां जेनी रुढ छे तेवाने परणीने बुद्धिना निधाननुं आश्रय स्थान था.

भाव्युं हतुं अने धैये कह्युं जेथी तेनी स्तुतिवडे संतोष पामेली ते बालिकाए गुणवर्मा कुमारने वरमाळा पहेरावी. जे वखते योग्य वरकन्यानुं जोडुं मळवाथी संतोष पामेला आकाशमार्गे जता विद्याधरोए बहु सारुं थयुं योग्य वर पसंद कर्यो. एम गर्जारव करवा मांडयो. आवेला राजमंडळने पण आ योग्य जोडाने जोई अति उल्लास



थवाथी तेओए जानैया तरीके भाग लेई तेओनी समस्त मोटो उत्सव करीने श्रीपेण राजाए ते कन्याने थवळमंगळ गवाते छते वार्जित्रोना नाद मेघगर्जना माफक संभळाते छते तेमनुं लग्न कर्युं अने राजाए जमाइने तथा दीकरीने अमूल्य घोडा, हाथी, रथ, पालखी, हीरा, माणेक विगेरे आपवा साथे दीनोनी दीनताने पण दूर करवामां जरा पण बाकी राख्युं नहि. पछी राजाओने वखत वधारे थवाथी तेमने आदरसत्कारपूर्वक वोळावीने गुणवर्मा कुमारने त्यांज राख्यो हतो छतां पण गुणवर्मा कुमारने पिताने मळवानी अति उत्कंठा होवाथी वारंवार रजा मागवाथी पुत्रीपर अत्यंत स्नेह छतां पण पुत्री सासरे अने हाथी राजदरबारे शोभे तेम जाणीने वोळाववानी सामग्री तैयार करी कयुं के हे पुत्री! तुं सर्वे वाते ज्ञाणी छे, सुकुळमां जन्मेली छे, सारा अध्यापक पासे भणेलीछे, गुणवंत सखीओना सहवासमां रहेली छे, अने मातापितानी आज्ञाने पूर्णपणे पाळनारी हती छतां पण तने अमारे कहेवुं पडे छे केः हवे तारे वाळपणानी अवस्थाने मातापिताना लाडने, चाकरोनी सेवाने, सखीओनी हांसी मश्करीने भूली जवुं जो- ईए; कारण के तारे सासरे जतां सर्व वडीलोनी सेवा करीने तेमने संतोष आपीने अमारा कुळनी आबरु वधारवी तारा हाथमां छे. पति आवतां उठी उभा थवुं, नजीक आवतां आसन आपवुं, तेमना सूता पछी सूवुं, पहेलां उठवुं, पतिनी पूर्ण कृपा छतां पण अहंकार लावी ोईने तिरस्कार के अपभ्राजना न करवी, परपुरुष साथे कारण ना थोडुं के घणुं बोलवुं नहि, परघेर भटकवुं नहि, सासु ससरानो विनय करवो, सगां, मित्र, जाति, नाति संबंधीने कदी पण असंतोषी करवां नहि; कारण पडे तो पण क्रोधी के मानी थईने बीजानुं बगा- डीश नहि पण सरळ थई सद्गुणनोज लोभ राखजे.

आम अनेक प्रकारे माताए तथा पिताए समयावेळी ज्ञाणी सु- कुमारी पति साथे चालतां मातापितादि पाछां वळ्यां अने गुणवर्मा-

कुमार हस्तिनागपुर तरफ पोतानी सेना साथे झपाटाबंध प्रयाण करी
कुरुदेशनी सीमामां आवी पहोंच्यो. राजाने पण खबर पडतां समुद्र
जेम चंद्र सामे उछळे तेम रोमांच उभां थएलो ते राजा सामे आवे
अति हर्षथी कुमारने भेट्यो. हजारो माणसो तेमना दर्शने आवेलां ते
वरवधूना जोडाने अनेक गुणोथी वर्णववा लाग्यां. स्त्रीओ कुमारीन
भाग्यने वखाणवा लागी के तेने आवो गुणनो सागर स्वामी मळ्यो
त्यारे पुरुषो गुणवर्माना भाग्यने वखाणता के आवी रत्नमाळा तेन
संबंधमां आवी; त्यारे केटलाक विधाताने वखाणवा लाग्या के सुंदर
जोडुं बनावी पोतानी कळाने सफळ करी दीधी. आडंबरथी शहेरम
आव्या पछी राजाए कुमारने तथा पुत्रनी वधूने जुदां जुदां रहेवान
रमणीक मन्दिर आप्यां हतां. शहेरमां प्रवेश थया पछी स्त्रीना रूपम
गुणवर्मकुमार रक्त छतां पण पोतानी पूर्व प्रतिज्ञा प्रमाणे जरा पण
तेना व्रतने बाध लगाडतो नहोतो.



# प्रकरण २३ मुं.

## द्रष्टांत चालु—उपकारना बदलामां मळेलुं दिव्य अंजन.

जो के पोतानी धार्मिक क्रिया करी राजकुमार सवारमां ते स्त्रीना महेलमां जतो अने वखते आखो दिवस तेनी साथे वातचीतमां अनेक प्रकारे आनंद मेळवतो छतां पण रात्रे तो तेने परस्त्री माफक गणी तेना आवासमां पण पगलुं देतो नहोतो. आम घणा दिवस थया पछी एक वखत बपोरे पोताना आवासमां मध्याह्ने राजकुमार जमवाने बेसतो हतो तेवामां कोई योगी राखोडी अंगे लगावीने कमंडळ हाथमां धरेलो, वाघचर्मने वस्त्र तरीके ओढेलो प्रेतोना नायक समान (जम) बिहामणो बनी आवीने कहेवा लाग्यो के: हे राजकुमार! नजीकना वनमां रहेला मारा गुरु भैरवाचार्य तमने याद करे छे तेनुं शुं कारण छे ते तेओज जाणे छे. एम कहीने पाछा फरता योगीनी पछवाडे जईने कुमारे कह्युं के तेमने कहेजो के: हुं सवारमां जरुर आवीश. योगी आटलो उत्तर लई संतोषी थईने पोताना आश्रमे जवा लाग्यो ने कुमार विचारवा लाग्यो के आ भैरवाचार्य कोण? अने मारे तेनो शुं संबंध? तथा शा माटे ते मने बोलावे? एम करतां दिवस अने रात्रि तेना विचारमांज पूर्ण थई गई. प्रभातमां मंगळपाठके बिरुदावळी गाई अने वाजींत्र मधुरनाद संभळाव्यो के राजकुमार जाग्यो, अने पोतानी आवश्यक क्रिया करी पोतानुं वचन पाळवा वनमां बतावेला स्थानके योगीनी हाजरीमां पहोंच्यो. लाल पीळी जटाने धारण करेला, अने माळावडे जाप करता. अने पद्मासने बेसी लोचनने स्थिर करेला भैरवाचार्यने चिह्नोवडेज शोधीने तेमना चरणमां नमस्कार करी कुमारे तेमनो आशिर्वाद मेळवी पोताने योग्य आसने तेमणे आपवा जतां आचार्यने रोकी पोताना सेवकना उतरासन (खभानुं वस्त्र) बीछावी

तेना उपर कुमार बेठो; अने पोताने योग्य कार्य बताववा विज्ञप्ति करी त्यारे भैरवाचार्ये कयुं केः तारी अपूर्व कान्ति अने हृदयनी अत्यंत शान्ति तारी मनोहर मुखमुद्राए कही आपे छे, अने तारी बाळचलगज तारा श्रेष्ठपणाने प्रगट करे छे, अने मळेली संपदा तथा सत्वने जे परमार्थमां वापरवा उत्साह धरावे छे, तेवा तो गुणोनुं वधारे वर्णन शुं करवुं? वळी परमार्थी पुरुषो छेदेलुं चंदन जेम सुगंधी आपे छे; तेम परमार्थमां कष्ट आवे छे ते पण परमार्थने प्राण करतां वधारे वहालो गणे छे माटे हे सौम्य! सांभळ, मने सद्गुरुए एक मंत्र आपेल छे तेने साधतां आठ वरस थयां छे हवे छेल्ली एक रात्री पर्यंत सत्ववान् पुरुषनी सहायथी तेनी सिद्धि करवी छे पण तेवो सत्ववान् तारा सिवाय बीजो मळवो दुर्लभ छे माटे तने कीर्ति अने मने मंत्रसिद्धि मळे तेवी सहायता (उत्तर साधकता) करजे. कुमारे कयुं के हे गुरु! आप मने आम विशेष प्रशंसा अयोग्यने योग्य स्थाने गोठवो छो ते करतां मारा योग्य होय ते कार्य फरमावो के आपनी सेवा बजावीने मारो जन्मारो सफळ करुं. तेथी भैरवाचार्ये कयुं के–हुं आवती अंधारी चौदशना प्रथम प्रहरे त्रण शिष्यो साथे स्मशानमां आवीश ते समये तमारे पण त्यां आववुं. आटलुं कही गुरु चंच थया के कुमार रजा लई पोताना महेलमां आव्यो. आ कार्यमां वडीलो रजा आपशे नहि तथा अन्य जाणशे तो विघ्न करशे तेटला माटे कुमार पोतानुं वचन पाळवा ठरावेला वखते अंधारी रात्रे एकलोज खड्गने सोवती करीने वेश बदलीने मित्रोने के कोईने कह्या विना गुपचुप महेलमांथी नीकळी स्मशानमां आव्यो.

गृहस्थावासमां हिंसा करीने के बाळचेष्टाथी जींदगी रद करी होय अने अंतकाळे किंचित् शुभ अध्यवसाय थवाथी मरीने देवगति प्राप्त करी होय पण अल्प पुण्य बांधवाथी व्यंतरजातिमां उत्पन्न थएला ते जीवो देवरूपे छतां पण देवत्वना सुखना भागी न थतां जेम

श्रीमंतना पुत्रो व्यभिचारमां के महान् राजाओ शिकारमां के विमुखो मांसमदिरामां जींदगीने रद्द करे छे तेम ते देवो पण स्मशानादिमां अनाथनां मडदांने आमतेम फेंकी मोज मेळवे छे. जो घट आवे तो गेडीना बदले काम लागे अने माथुं आवे तो दडा तरीके काममां ले. तथा केटलाक तो शुळीए चडावेला रीबाता मांस खावानी चेष्टा करे छे तथा विचित्र वेष लई बीजाओने डरावबा प्रयत्न करे छे तेवां व्यंतर पण व्यंतरनां स्थळ केटलांक झाडोमां तथा अवापर कुवामां के तळावआदिना किनारे होय छे त्यारे केटलांक तो स्मशानमांज भटके छे तेमनुं जोर विशेषे करीने रात्रिएज ज्यारे कुमार स्मशानमां आव्यो त्यारे उपर कहेला भयंकर तथा व्यंतरोए मडदांने उपयोगमां लीधाथी मडदांने भक्षण शियाळीआंने भक्ष न मळवाथी रुदन करतां होवाथी स्मशान रात्रिनी भयंकर काळाश, शियाळीआं विगेरेनो पोकार, तथा व्यंतरोना विचित्र देखावथी तथा झाडोना सुका पानोनो खडखडाट, तथा कामांथी नीकळती फोस्फरसनी हवानां बळतां देखीने गमे तेवो छातीवाळो माणस पण त्यां जतां डरे तेवा स्थळमां पोतानुं वचन पाळवा कुमार आवी पहोंच्यो हतो.

स्मशानना मध्य भागमां कुमारने आवेलो देखीने गुरुने हर्षथवाथी उच्च स्वरे आदरसत्कार आपीने कह्युं हे वत्स! आव! कुमार पासे आव्यो त्यारे होमनी विधि सघळी तैयार हती तेथी गुरुए राजकुमारने कह्युं के मारा शिष्यो कार्य करवा बेठा छे पण तेओ रांकडा होवाथी तारी सहायथीज तेओ टकी रहेशे माटे सावचेत रहीने इष्ट सिद्ध करी आपजे. कुमारे हिंमत आपवाथी कार्य शरु थयुं. कुमार रक्षा माटे उत्तर दिशामां उघाडी तरवारे सावचेत उभो हतो. बीजी त्रण दिशामां शिष्यो उभा अने वचमां गुरुए कुंडाळुं करीने गोठव्युं अने तेनुं मोढुं फाडी कुंड माफक तेमां बळतुं सळगाव्युं.

त्यार पछी इच्छित मंत्र उच्चारतो योगी ते वळलामां कणेरना फुल अने गुगळनी गोळीओ होमवा मांडी एटले थोडीवारमांज शाकिनी, डाकिनी, राक्षस, भूत विगेरे आवी पहोंचवाथी तेमना भयंकर देखावथी गुरु तथा शिष्योने हालवानी पण हिंमत रही नहि. वळी योगीना मोढा आगळज पृथ्वीने फाडी नांखे तेवो भयंकर वज्रपात समान अवाज थयो तेथी ते चारे गुरु चेलानुं हृदय स्तब्ध थइ गयुं अने फाटेली जमीनमांथी बळती ज्वाळा सरखा माथाना वाळवाळो, पीलाडीनी आंख जेवी आंखवाळो, भेरी सरखी नासिकावाळो, मोढामांथी बळताना भडका काढता भुंड जेवी दाढवाळो, भागेला घडाना ठीकरा सरखा गालवाळो, अने उंट सरखी स्कंदवाळो, पाणीना बेडा जेवा उदरवाळो, ताड जेवी उंची भुजावाळो, नदीनी किनारी सरखी केडवाळो, खांडणी सरखा पगवाळो, अने भयंकर रुप धारण करेलो जेम पीलमांथी साप नीकळे तेम बहार एक वेताळ नीकळी आव्यो. जेने देखतां एक कुमार विना बाकी सघळा गुरु तथा चेलाओ बिलाडीथी जेम उंदर त्रास पामे तेम त्रास पामी चुप थइ गया.

आदरेल्युं अधुरुं होय तेम योगिने मुद्गर उंचकीने वेताळ धमकाववा मांड्यो. रे योगिन् बोल ! तुं कोना बळथी मारी भूमिमां मंत्र साधे छे. मने आराध्या विना तारी मंत्रसिद्धि केवी रीते थशे. मंत्रसिद्धि थवाने बदले विना परवानगीथी पारकी भूमिमां पेठो छे माटे कुतरानी पेठे अपमान पामीश, तेथी ते योगी तो अत्यंत भय पामीने दीन चहेरे राजकुमार तरफ जोवा लाग्यो. राजकुमार समय ओळखी तलवार काढीने उगामीने वेताळने धमकाववा मांड्यो के रे वेताळ ! आम जो ? ते योगीराज महारी सहायथी मंत्र साधे छे. तारा वांसडाना फाटवाथी जे अवाज थाय तेवा अवाजथी हुं डरवानो नथी. अने जो तुं सरखाथीज युद्ध करवा तैयार होय तो मारी साथे लडवा तैयार था. पण योगी जेवा भिक्षाचरोथी लडतां तने शुं यशः प्राप्त थवानो

छे. अने वळी आ मारुं खड्ग अंधकाररुपी शत्रुने रवि माफक दूर करवाने तैयार छे. तेथी वैताळे कह्युं, हे बाळ! बाळक उपर मारे बळ शुं बतावबुं? माटे तुं मनुष्य जन्मनुं फळ जे राज्य तेने भोगववा लक्ष आपी युद्धनो उत्साह मुकी दे. पारकाने माटे नाहक शामाटे जीव खुए छे? तेथी कुमारे कह्युं हे वैताल! बाळ जाणीने मारी उपेक्षा मत कर. कारण के सिंहनुं नानुं बाळक शुं हाथीने नथी हरावतुं? नानो दीवो अंधाराना समूहने दूर करतो नथी? नानुं वज्र शुं पर्वतने भेदतुं नथी? माटे नाना मोटानो कंई संबंध नथी. फक्त सत्वज काम लागे छे. तेम परमार्थी पुरुषोने परमार्थ तेज छे, स्वार्थ छे कारण के परमार्थ ते लोकोत्तर स्वार्थ गणाय छे अने मेघने, सूर्यने, चंद्रने, जगत्‌ने उपकार करवा सिवाय बीजो कयो स्वार्थ साधवानो छे? तेम वीरपुरुषोने पोतानुं वीरत्व अनाथोनुं रक्षण करवा माटेज निर्माण थयुं छे परने रक्षण अने पोताने यशः प्राप्ति तेथीज थाय छे. माटे विशेष बोलवाथी तथा आत्मप्रशंसाथी सर्युं. पोतानुं बळ हथीआरनो उपयोग करतां पोतानी मेळे प्रगट थशे. आ प्रमाणे ते राक्षसना भयंकर चहेराथी के वचनथी के कृतिथी कुमारने न डरेलो जोवाथी वैताळ पण आश्चर्य पामी गयो तेथी डरामणो चहेरो फेरवी दिव्य रुप धारण करेलो वैताळकुमारने मधुर स्वरे कहेवा लाग्यो के हे वीर! तारा उपर हुं प्रसन्न थयो छुं माटे वर माग!

कुमारे कह्युं हे देव! तमे जो प्रसन्न थया हो तो आ योगिराजनी वांच्छा पूर्ण करो. देवे कह्युं ते तो में क्यारनी तेना इष्ट मंत्रनी सिद्धि करी आपी छे. छतां तारुं शुं भलुं करुं ते बोल! कारणके देवदर्शन कदापि निष्फळ थतुं नथी. ज्यारे देवे बहु आग्रह कर्यो त्यारे कुमारे कह्युं के आप अतींद्रियज्ञानी छो तो मारी प्रिया मारा उपर अतिशे प्रेम धरावनारी छतां ते आवी यौवन अवस्थामां शीलव्रत शा माटे पाळे छे ते कहो! देवे कह्युं के प्रभातनो समय थय

आप्यो छे. अने कारण विना देवो दीवसे देखाव देता नथी. माटे ए लांबो धामनुं वधारे विवेचन करवा करतां आ अंजन लइ जा. जे आंजवाथी तुं अदृश्य रहीने सर्वे वात जाणी शकीश. एम कही अंजन आपी देवता अदृश्य थइ गयो. पछी योगी कुमारने कहेवा लाग्यो के हे वत्स ! तारी सहायथी मारो मंत्र आठे वरसे आजे सिद्ध थयो छे माटे तारो उपकार नहि भूलुं पण तेना बदले तारुं शुं भलुं करुं अने बदलो केवी रीते वाळुं ते बोल ? कुमारे कह्युं के आपनी कृपा-दृष्टि तेज मने निरंतर हो ! बीजुं तेथी शुं वधारे छे ? एम अरसपरस आनंद आपता बेओ पोतपोताने स्थाने गया.



# प्रकरण २४ मुं.

## द्रष्टांत चालु–ब्रह्मचर्यनी शास्त्रना भेदनी माहिती.

राजकुमारी शा कारणे ब्रह्मचर्यव्रत पाळे छे ते जाणवाने कुमार बहु आतुर छतां पोते आपेला वचनथी पोतानी स्त्रीने पूछी शकतो नहोतो तेम बीजुं कोण ते वातनो खुलासो करी शके तेथी राजकुमार हमेशां मुंझातो हतो तेम ते स्त्री पण पोताना पतिने कोई पण कारणे जरा पण खुलासो आपवा शक्तिमान नहोती तेथी ते पण मुंझाती हती. पण बंने जणां आशामां ने आशामांज दिवस काढतां हतां. पण राजकुमारने, योगीने परोपकार करतां देवे प्रसन्न थईने आपेला अंजनथी अदृश्य थवानी शक्ति मळवाथी ते अदृश्य थइने राजकुमारीनुं छूपुं चरित्र जाणवा त्यार पछी एकदम आतुर थई रह्यो हतो. छतां पण राजकुमारीने कोई पण प्रकारनो वेम न आवे माटे राजकुमारे योगी पासेथी प्रभातमां आवीने थोडीवार निंद्रा जरातरा करीने उठीने पोतानी क्रिया करीने हमेशना नियम प्रमाणे तेनी साथे वातचीत करी तेनुं मन रंजन करी बपोरना घेरे (पोताना स्थाने) आवी सांज पडवानी राह जोतो बेठो एम करतां करतां रात्रि पडी कुमार पण अवसर जोई अदृश्य थइ त्यां छूपो रहीने बंनेनी चेष्टा तपासवा लाग्यो हतो.

पहेलो पहोर वीततां राजकुमारी अगाशीमां चडेली दीवी माफक प्रकाश करवा लागी अने धीमे रही सखीने पूछवा लागी के हे सखि! केटली रात्रि गई हशे? सखीए उत्तर आप्यो शणगार सजो वखत थवा आव्यो छे. तेथी तैयार थवा माटे रात्रिए फरी स्नान करी विशेष प्रकारे वस्त्राभूषण सजी जेम प्रेमदा पतिने प्रसन्न करवा जाय तेम तैयार थएली जोईने कुमारनुं तो लोही उकळी आव्युं. ते विचारवा लाग्यो के आ शुं? सतिना चाळा आवा कदापि पण होइ शके?

पोताना पतिने गमे तेम समजावी छूपी रीते आवां अन्य पुरुषोथी कुकर्म करवा माटे तोफान करे ते स्त्रीना शीळनो भरोसो केवी रीते आवे ? मारा सिवाय तेने बीजो कोण वहालो छे के मध्यरात्रिए तेनी पासे शणगार सजीने तैयार थइने त्यां जइने तेनुं मन प्रसन्न करे ? खरेखर ते व्यभिचारिणीज छे. नाहक हमारा गळे जोतरुं वळग्युं छे. अरेरे ! ते आम मन वांच्छित मजाह भोगवे, अने हुं तेना फांसामां फसेलो ब्रह्मचर्य पाळुं पण मारी सरळताने ज ते ठपको घटे छे के हुं आवी रीते अमर्यादशीलना भरोसे रही नाहक दुःख खमुं छुं. पण हवे छती आंखे केवी रीते पोतानी मेमदाने व्यभिचार करतां देखी शकुं ! माटे आ कुल्टाने तेना कर्मनो बदलो आ मारी चळकती तलवारना घा वडे लेवा दो ? जेवी तलवार मारवा उगामे छे तेवामां पाछो कुमार विचारवा लाग्यो के आवुं साहस शा माटे करवुं जोईए. अने तेने एकलीनेज शा माटे गुनेहगार गणवी जोइए? त्यांज साथे मारे पण जवुं जोईए. अने पूर्ण तपास कर्या पछीज तेनो निवेडो लाववो जोईए. वखते कोइना दवाणथी के देवतादिकना कारणे आम करवुं पडतुं हशे तो तेमां ते अबळानो शुं दोष छे ? व्यभिचार जोया विना, निर्णय कर्या विना नाहक स्त्रीहत्यानुं पाप शा माटे लेवुं जोईए. एम पाछो शांति पामीने तलवार म्यानमां घाली शुं बने छे ते जोवा आतुर थई रह्यो. तेटलामां आकाशमार्गे विमान आवतुं जोयुं अने ते चंद्रशाळा नजीक आवी उभुं रहेलुं अने फरकती ध्वजावडे आमंत्रण करेलुं जोतांज राजकुमारी तथा तेनी सखी तेमां संभाळथी बेठां के कुमार पण अदृश्य थइ तेमां चडी बेठो अने विमान झपाटाबंध आकाशमां चढयुं.

उत्तर दिशामां घणे दूर कोई अति रमणीय सरोवर हतुं. तेनी नजीकमां नंदनवनने शोभामां तिरस्कार करे एवुं उद्यान आव्युं हतुं. त्यां जिनेश्वरनुं रत्नोना प्रकाशवडे सूर्य करतां अधिक देदीप्यमान

मंदिर पृथ्विना भूषणरुप भव्य प्राणीना उद्धार माटे स्थापन कराएलुं हतुं, ज्यां आगळ देवो तथा विद्याधरो पण पोताना आत्माना उद्धार माटे आवता हता. आवा मंदिरमां जो विधि प्रमाणे पूजन थाय तोज कल्याण थाय छे. पण जिनेश्वरोए कहेली विधिने अनुसरीने जो न करवामां आवे तो कल्याण थवाने बदले अकल्याणज थाय छे तेटला माटे जिनेश्वर भगवतोओ पूजनकरनारने फरमाव्युं छे केः तमारे दर्शन माफक ज्ञान अने चारित्रने पण यथाशक्ति आराधवुं जोईए कारण के प्रथम ज्ञान अने पछी दया माटे ज्ञान भणवाथीज आवश्यक क्रिया पण सम्यक प्रकारे समजाय छे अने जेटले अंशे समजाई तेटलीज करेली क्रीया संपूर्ण फळ आपनारी थाय छे पण एकला भणवाथी के अेकला पूजनथीज ईछित वस्तु प्राप्त थती नथी आ मंदिरमां पण विद्याधरो यथाविधि पूजन करत हता पण कोई विद्याधर जिनेश्वर भगवंते कहेली विधि अनुसार न करतां पोतानी स्वेछाए जिनेश्वरे रात्रिपूजन निषेध कर्या छतां जिनेश्वरनुं पूजन तथा नृत्यादि त्यां रात्रिए करावता मांडयुं हतुं तेमां केटलीक कुमारी कन्याओने प्रथमथी तेमना मावापथी छानी रीते विद्याथी उपाडी लई जतो हतो अने तेमनी पासे पराणे रात्रे आ जिनमंदीरमां नाटक करावतो हतो. तेनी घणी कुमारीकाओने पकडी तेमने वचनथी बांधी निरंतर रात्रे विमान मोकली बोलावतो हतो तथा परणेली स्त्रीने पण तेना पति पासे जवानुं बंध करी पराणे ब्रह्मचर्य व्रत पळावी रात्रिए त्यां विमान मारफते बोलावतो. आपणी गुणवर्मानी स्त्री कनकवती पण तेवा निशाचर विद्याधरना फांसामां बाळपणाथी फसाई गई हती पोताना पिताना घेरे गोखमां बेठेलीने आ अधम विद्याधर छूपो उपाडी जई निरंतर त्यां नाटक करवा आववानी कबुलातथी तेने पाछी मूकी हती तथा परण्या पछी तेनी परवानगी मेळव्या पछीज पुरुष साथे संसार भोगववा फरज पाडी हती.

जे वखते विमान त्यांथी उपड्युं त्यारे तेमां बे स्त्रीओ अने एक पुरुष हतो. ते पणे ज्यारे रस्तामां हतो त्यारे विमानमां रत्नोना प्रकाशे चारे बाजु अजवाळुं थई रह्युं हतुं ते अजवाळाना लीधे गुणवर्मा कुमारे कई दिशाए विमान जाय छे ते ध्यान राख्युं हतुं ते पवनना वेगने पण बाजुए मुके तेवा प्रबळ वेगथी झपाटाबंध चाली सेंकडो कोश आवी पहोंच्युं हतुं अने प्रथम कहेला मंदिर नजीक आवीने जमीन उपर स्थिर थयुं हतुं जेवुं त्यां स्थिर थयुं के तुर्त त्रणे जणां उतरी गयां. प्रथम कनकवती, त्यार पछी तेनी सखी, अने पछी गुणवर्मा कुमार मंदिरमां दाखल थया. हमेशना नियम प्रमाणे प्रथम जिनेश्वरने नमस्कार करी बहारना मंडपमां ज्यां विद्याधर नरेश बेठेलो हतो. त्यां आवी पोताना जेवीज पकडायेली कुमारीकाओनी बाजुमां विद्याधरने नमस्कार करी सन्मुख उभी रही हती. चारेमां मुख्य आ कनकवती होवाथी प्रथम ते अने तेनी पछवाडे त्रण एम चारे विद्याधरने पोतानुं आवागमन जाहेर करी उभी हती त्यारे ते विद्याधर नरेश महाबळ राजाए जिनेश्वरोए निषेध कर्या छतां पण पोतानी स्वेच्छानुसार जिनेश्वरनुं पूजन कर्युं जेमां प्रथम स्नान करीने पछी पूजाना सर्वे भेदो वडे पूजन करीने पछी नाटक करावता तथा नाटकने जोवामां उत्साह मानता महाबळ विद्याधर नरेशे पूछ्युं के आजे नृत्य करवानो वारो कोनो छे त्यारे त्रणे कन्याओए कनकवतीने बतावी जेथी विद्याधरना हुकमथी तेणे नाच करवा मांड्यो जेम इंद्रनी सभामां रंभा अपसरा नाच करे तेम कनकवती नाच करती हती अने तेनी त्रणे सोबतणो ताळ वेणावीणा यथायोग्य वगाडती उभी रही हती आ प्रमाणे इंद्र तुल्य पोताने मानी आनंद पामी नाचनारी तथा वगाडनारीने शाबाशी आपतो आश्चर्यथी डोकुं धुणावतो विद्याधर महाबळ नरेश संपुर्ण सुखी पोताने मानतो हतो त्यारे अदृश्य रहेला गुणवर्मा कुमारने दुष्ट महाबळनी आवी अधम वर्तणुकथी तथा पोतानीज

पत्निने पोताना देखतां ईच्छानुसार पराणे नचावी तेमां पोताने संपूर्ण सुखी मानतो देखीने तेनां रुंवे रुंवे ज्वाळा लागी रही हती.

ते विचारवा लाग्यो के ते अधमे मारी स्त्रीने नाचनारी वेश्या तरीके बनावी जेनुं मोढुं कुरु देशना राजाओ पण जोवा समर्थ थया नथी तेवी मारी अर्धांगनाने नचाववाथी ते राजाने तथा विद्याधरोने उत्सव थाय छे अने जे स्त्रीने हुं तथा मारां घरवाळां स्त्रीरत्न तरीके गणी घरनी मालिक जाणीने तेनुं बहु मान करीए तेवी पवित्र प्रेमदाने पोताना पतिमां सतिपणे रक्त छतां दासी जेवी बनावीने आ विद्याधर पोतानी पांपणना इसारायी इच्छानुसार नृत्य करावे छे! आ अधम विद्याधरे जिनेश्वरनी आज्ञानुं उल्लंघन करी लोकनीतिनो त्याग करी अनाचार अंगीकार कर्यो छे तो तेने हणीने तेनुं प्रायश्चित्त पुरेपुरुं आपवुं जोईए छतां पण भविष्यमां हजु ते केवां केवां दुष्ट कार्यो करे छे ते जाणवा माटेज हाल मारे तो मारा क्रोधने दबावी देवोज जोइए. एम करी शांत उभो रह्यो तेवामां नाचतां नाचतां तेना पगना कंदोरामांथी घुघरी नीचे पडी के अवसर जोई कुमारे तुर्त उंचकी लीधी ते नाचना रसमां पडेलाने कोईने मालुम पडी नहि पण नाची रह्या पछी घुघरी पडी गयेली ओछी थवाथी कुमारीने ते कंदोरामां खामी लागवाथी आजुबाजु शोधवा मांडी पण न मळवाथी राजकुमारीए विद्याधर नरेशने जाहेर कर्युं पण रात्रि घणी जवाथी निद्रा आवेली विद्याधर नरेशे जाणीने कह्युं के वत्स! तुं हमणां जा? रात्रि घणी गई छे. तारी कींकीणी गमे तेम करीने काल सुधीमां शोधी आपीश! एम कही सौ रवाना थया अने सभा बरखास्त थई गई. जो के सौ सौने स्थानके जई निद्रावश थई गया हता पण गुणवर्माकुमार तो सुवा पछी पण विचार समुद्रमां गोथां खातो हतो के आ विद्याधर कोण? आ मारी स्त्रीने तेणे वश केवी रीते करी? मारी स्त्री मारा वश छतां बिचारी शा कारणे परवश थई गई हशे. तेनो उपाय शो करवो

मारे थवा सुधी येमी रहेवुं, गमे तेम थाय पण मारे तेनो उपाय करवोज जोईए. आम अनेक विचारो करतां आखी रात्रि पूरी थई सवारमां सूर्योदय थयो के कमळ विकस्वर थयां तेम तेनां नेत्रो पण खुल्लां गयां धार्मिक क्रीडा रोजनी माफक करी पाछी स्त्रीने त्यां जवा माटे पोताना मित्रने साथे लीधो, त्यां जईने अनेक प्रकारनी आनंददायक वातोथी तेने संतोष पमाडी पाछी रमवा बेठां.

एक वखत स्त्री जीती तेथी उल्लासमां आवीने स्त्रीए कह्युं के बीजी रमत रमवी होयतो कांई पण शरत थवी जोईए. फोकट हाथ घसे शुं दहाडो वळे ? कुमारे पण योग्य अवसर आवेलो जोइ गई रात्रे मेळवेली घुघरी पोताना मित्रने प्रथम आपी राखी हती. ते मित्रने कह्युं के हे बंधो ! तारी पासे जो कांई वस्तु होय तो आप के दाव खेलीने आनंद मेळवुं ! कुमारीए आतुरताथी जोवा मांड्युं तो मित्रे कींकीणी आपेली हती ते पोते गई रात्रे गुमावेली हती. तेने साक्षात् जोईने तेने ध्रासको पड्यो, जेथी उदास थवा छतां पण बीजाने ते वात जाणवामां न आवे माटे धीरज राखी बेठी पण कुमारे तेनो चेहेरो पारखी स्त्रीने मार्मिक शब्दोवडे पूछवा मांड्युं के हे मुग्ध ! सवारनो प्रथम आनंददायी छतां मोहुं खील्वाने बदले चींमुए करवा माफक हृदयमां दुःख पामेलीनुं थों कांतिरहित केम थवा मांड्युं छे ? स्त्रीए धीरज धरीने कह्युं के हे स्वामिन् आ कींकीणी मारी छे ते मने आपवाने बदले तेनीज शरत थकवा बेठा छो ते केवी रीते हुं संतोष पामी शकुं ?

राजकुमारे पण हसीने कह्युं के जेम आ कींकीणी तारी छे तेम मारुं राज्य अने हुं शुं तारो नथी के ? अने जो तारुं सघळुं होय तो पछी शुं शरतमां मूकुं ? स्त्रीए कह्युं स्वामिनाथ ! ते तो हुं समजी, पण आ घुघरी तमारा हाथमां क्यांथी आवी ? कारणके ते कोई पण स्थळे मारा कंदोरामांथीज पडेली तमारा मित्रना हाथमां आवेली छे,

अने क्यां पडी ते पण हुं जाणती नथी गुमाया पछीज मने मालुम पड्युं छे. राजकुमारे कुमारीने धैर्य आपवा कह्युं के आ ज्योतीषमां प्रवीण अने विद्यामां चमत्कारी मारो मित्र छे तेनुं वचन तीर्थंकर वचन माफक प्रमाणभूत गणाय छे. तेने जे पूछवुं होय ते पूछ. कुमारीए पूछतां तेना मित्रे खुलासो कर्यो के ज्योतीषथी जाणीने आवती काले जोईतो खुलासो आपीश, आम स्त्रीने भ्रममां तथा भयमां पाडीने वखत थवाथी बंने मित्रो त्यांथी नीकळी गया. बीजे दिवसे पण सांजे पोतानुं काम आटोपीने राजकुमार गुपचुप विमानमां बेसी स्त्री साथे देवमंदिर रात्रे आवी पहोंच्यो हतो.

थोडीवार पछी हमेशना रीवाज प्रमाणे नाटक शरु थतां बीजी कुमारीकानो नाचवानो वारो होवाथी कनकवतीने वीणा वगाडवानुं आव्युं. वीणा वगाडतां एक रसमां लीन थतां पगनो ठणको करतां झांझर नीकळी पडेलुं ते पहेला दिवस माफक कुमारे कबजे करी लीधुं हतुं. ज्यारे जवानो वखत थयो त्यारे झांझरनी फरीयाद विद्याधर नरेश आगळ करतां रात्री घणी वीती जवाथी तथा विद्याधरो केटलाक वेराई जवाथी क्रोधायमान थएला विद्याधर नरेशे बाकी रहेला माणसोने धमकावीने कह्युं के रे विद्याधरो ! अहीं चोर कोण उभो थयो छे ? तपास करो के तमारा विना बीजो अहीं कोण आववा लाग्यो छे देरामां, अने वळी मारी सत्ता छतां पण चोर चोरी करी सुखे जाय ते केवी रीते बनी शके ? हुं तेने मारा कोपरुपी अग्निमां पतंग माफक बाळी नांखीश हे कुमारिका तुं धैर्य धर ! अत्यारे जो ! हुं तेनी शोधमांज छुं. त्रीजे दिवसे हमेशनी माफक राजकुमार मित्रने झांझर आपी तेने साथे लइने राजकुमारी पासे आव्यो अने रमवानुं शरु करी बराबर रस आवतां कुमारीए कंई पण शरतमां मुकवानुं कह्युं तथा घुघरीनो खुलासो माग्यो त्यारे कुमारे मित्रने इशारत करतां ते बोल्यो के हे मित्रभार्ये ! तारी घुघरी साथे कोई बीजी वस्तु पण पडी गयेली

हृदयमां ईच्छाय छे माटे विचार करी तरासो जो के तारुं वीन्तुं शुं खोवाय छे ? कुमारी आश्चर्य पामी तेना सामुं तारी ताकीने जोवा लागी तथा पूछवा लागी के, कहो देवरजी ! मारुं वींतुं शुं खोवाय छे ? त्यारे मित्रे कह्युं के मारुं शांतर खोवाय छे अने जो ते आ रह्युं. एम कही तेना हाथमां आप्युं. राजकुमारीए तेने जोई तपासी पोतानुं चरोदर ओळखीने कह्युं के ते मारुंज छे पण मने ते जग्यानुं नाम तमे केम बतावता नथी ? त्यारे निमित्तनो डोळ घालनारा मित्रे धीमे धीमे कहेवा मांड्युं के हे गौरांगि! ते स्थान तेजस्वी अने घणे दूर रहेलुं होवाथी सामान्य माणसथी त्यां जवाय तेवुं नथी. राजपुत्राए पाछुं पूछ्युं के त्यारे तमारा हाथमां क्यांथी आव्यां ? त्यारे गुणवर्मना मित्रे धीरजथी कह्युं के हे मुग्धे ! जेने आवो गुणनिधान गुणवर्मा जेवो मित्र मळ्यो छे तेने जगतमां शुं दुर्लभ तथा अशक्य छे ? आ सांभळीने लज्जा: पामेली कुमारीका मों नीचुं घाली पृथ्वीमां पेसी जवा पृथ्वी पासे जगा मागवा लागी. तेना हृदयमां अनेक प्रकारना तुरंग उठवा मांड्या के घणे दिवसथी मारी घस्तु केम त्यां पडे छ अने त्यांथी अहीं केवी रीते आवे छे? माटे जरुर आ मारो स्वामी कोईनी सहायथी कांतो त्यां आवे छे अने कांतो कोई दैवीक सहायथी अहीं बेठे त्यांना समाचार जाणी ले छे अने वस्तु त्यां पडेली मने भय पमाडवा माटे तथा आश्चर्यता बतावना माटे अहीं लावीने मने आपे छे. हवे मारो एके उपाय रह्यो नथी हुं शुं करुं? क्यां जाउं? अने तेनी निद्राए भरेली आंखो जोतां चोक्स थाय छे के ते जरुर त्यां मंदिरमां आवी मारो तमासो देखे छे अने अहीं आवी मने छूपी रीते ईशारत करीने मने सतावे छे, अने आ जोगी बनेलो तेनो मित्र पण तेनी साथे मळी बंने दंभ करी मने भोळीने ठगे छे.



जोईए ? जोते हुं शुं थाय छे ? एम विचारतो कुमार मियवंदा सखीने एकली जती जोईने पाछळथी अदृश्यपणे वेसी गयो अने देवमंदिरमां आव्यो. मियवंदा मोडी आवतां विद्याधर नरेश महा कोपायमान थयेलो धारीने राजकुमारी विनाश प्रमुनुं स्नात्र करीने रंगमंडपमां नाटक कराववो बेठेलो हतो तेणे मियवंदाने धमकावता मांडी के, रे मूर्ख ! तारी सखी हजु केम नथी आवी ? आवो प्रमाद करवाथी तेने शुं नुकशान थशे ते शुं तुं जाणती नथी के ? मियवंदाए भय पामीने कह्युं के तेने शरिरे ठीक नथी माटे थाट जोईने हुं एकली आवी छुं, माटे क्षमा करो ! विद्याधरनरेशे तेनी लुच्चाई जाणीने कह्युं के ते खोटुं बोली, नथी आवी तो तेनी शिक्षा तेने योग्य थशे पण तुं खोटापणामां भाग लेनारी छे तेने तो जरा स्वाद चखाडुं एम कही गळेथी पकडी मारवा जतां प्रथम तेने कह्युं के, तारा इष्टदेवनुं स्मरण कर. तेथी मियवंदा भय पामीने प्रार्थना करवा लागी के, हे विद्याधर नरेश ! में तेम धार्युं हतुं अने तेम थयुं छे. अस्तु. पण मने जगत्‌ने शरण आपवा योग्य एवा जिनेश्वरनुं आ भव अने भवोभव शरण हो ! अने लौकिकमां मारी सखीनो स्वामी जगतनुं रक्षण करवा एक-लोज समर्थ छे. तेवा गुणवर्मा कुमारनुं बीजुं शरण हो ! आगममां तेल होम्या माफक तेने अतिशय क्रोध व्यापतां विद्याधरनो स्वामी मारवा खड्ग उगामी जेवो घा करवा तयार थाय छे तेटलामां कुमारे प्रगट थई कह्युं के रे अधम ! अवळाने त्रास आपनारा ! बीकणने बीवडा-वनारा ! दीनोने डरावनारा ! पोताने वीर माननारा ! तारुं वीरत्व वीरने बताव. अवळा उपर तारी तरवार जतां तारुं सारुं थवानुं नथी. तें जो के जिनेश्वरनी पूजानुं निमित्त वचमां आणी अनाचरण जिनेश्वरना मंदिरमां आदरवा मांडयुं छे पण तेनुं फळ हवे साक्षात् अहीं मळशे. अविधिए खवायेलुं औषध पण अमृत जेवुं छतां प्राण लेनारुं हलाहल विष समान शरीरमां परिणमी प्राण हरे छे. बाळा-

बन्नेय निर्भयपणे वातो करी. तथापि पण समय जोई दूर थवाथी बन्नेय पत्नी पतीनी पेठेनी रात्री आजेज मानीने यथायोग्य आचरणथी मनुष्य जन्मने सफळ मानतां इंद्रियोना विषयने सेवतां ढंवी गयां हतां. माणसना मनमां ज्यां सुधी विघ्न जणाय त्यां सुधी दीनता उत्पन्न थाय अने इच्छित कार्य थतां आनंद पामी निर्भय थाय छे अने मनमां दुःखने बदले सुखना तरंगो थाय छे परंतु एक पण घडी पवी नथी के कर्मधारी माणसो निर्भयपणे एक क्षण पण सुखथी नीरांते रही शके। कारण के माणसो शुं धारे छे त्यारे विधि तेथी उलटुंज करी मूके छे.



खिन्न तथा दीन चेहेराथी तापसे तेनी भूख, तरस, थाक टाळवा जंगली फळ तथा निर्मळ झरणनुं पाणी तथा विश्रांति स्थळ बतावी आराम लीधा पछी कयुं के, हवे चालो, अमारा आश्रममां. वडील गुरुने मळीने आनंदथी दिवस गुजारो. एम कही तेने साथे तापस आश्रममां आव्यो. त्यां अनायासे खुणामां एक स्त्री रोती बेठेली जोईने तेने घणुं आश्चर्य लाग्युं अने तापसने तेनुं नामठाम पूछयुं.

एक तापसे आनंद पामीने कुमारने पूछ्युं के हे वत्स! आ बाई तारी स्त्री छे के केम? जो तारी स्त्री होय तो मुखेथी तेनुं वृत्तांत सांभळ! त्रण दिवस पहेलां हुं फळ विगेरे लेवा माटे आ नजीकना वनमां फरतो हतो त्यां लताना झुमखामां एक स्त्री दीन स्वरे पोकार करती हती के हे, वनदेवीओ! हे दिग्पालो! तमे मारी आ नम्र विज्ञप्ति सांभळो! मारो पति मारा माटे केटलां दुःख खमी रह्यो हतो, अने आखरे कोई पण रीते दैवी सहायथी तेणे मारी गुप्त वात जाणीने पोताना सत्वथी मारा भयने टाळ्यो हतो अने घणे दिवसे हुं तेनी सोडमां सुती हती; पण कोई मारा कमभाग्ये के पापना अत्यंत अघोर अशुभ प्रकार उदय थवाथी कोण जाणे केवी रीते तेने तथा मने जुदे जुदे स्थळे फेंकी दीधां छे के, तेनो पत्तो हजु लागतो नथी अने हुं पर्वतमां भ्रमण करती केटलेक दिवसे नीचे आवी तेने समुद्रमां फेंकयानुं अनुमान करी तेनी शोधमां भटकती त्रण दिवसथी लागलागट अहीं फरुं छुं, अने हवे मारी आशा पण नाश थवा मांडी छे. जेथी तमारी साक्षीए मारो प्राण त्याग करुं छुं. कदाच ते पुरुषनो जीवतो आवे तो तमे कहेजो के तमारी अर्धांगनाए तमने अत्यंत दुःख आपीने पोताना असह्य वियोगना दुःखने वधारे वार सहन करवा अशक्त थईने लाचारीए बलात्कारथी पोताना प्राणोने पतिने परभवमां शोधवा माटे अर्पण कर्या छे. रे उडनां पक्षीओ! सांभळो शुन्यमां लीन थएला आ देवो कदाच मारा पतिने शोध करवा ते आवे छतां पण जवाब न देवो

तमे तेने मारी वात याद करावजो. एम बोलती अबळाए पोताना गळामां पोताने हाथे फांसो नांखी माण तजवा उद्यम करवा मांडयो. जेथी में तेना वचनोनी दया आणी तेनी पासे जई तेनो फांसो तोडी मरती अटकावी शांत स्वरे कह्युं. हे पुत्रि! आवुं अकृत्य न कर, न कर! त्यारे अबळा गभराईने कहेवा लागी. हे मुने! मारा पतिने शोधतां थाकीने तेमना विना रहेवा अशक्त होवाथी हुं मरुं छुं तेने तुं शा माटे अटकाववा चाहे छे? में शुभ चिह्नोथी कह्युं के हे वत्से! तुं चिंता न कर, त्रण दीवस पछी तारो पति आज आश्रममां तने मळशे.

कुमारे मनमां विचार्यु के हजु मारुं पुण्य कांइक बाकी रह्युं देखाय छे नहि तो आवो अनुकुळ संजोग क्यांथी आवत? माटे चाल आगळ सौ सारुं थशे एम मनमां चिंतवी तापस पासेथी पोतानी स्त्रीने लई तेमनो मोटो उपकार मानी तेमना तपमां तथा धर्मध्यानमां विघ्न न आवे माटे तथा घेर सौ चिंतामां पडयां हशे तेमनी चिंता दूर करवा माटे तापसोनुं मन संतोष करी तेमनी रजा लई थोडेक दूर सुधी तापसे बतावेला वनना रस्ते थई घोरी मार्गे आव्यां अने तापसने पाछो फेरवी बंने पगे चालतां सांजना वखते एक नदीना किनारे आव्यां. जो के घणुं संकट तेमणे वेठयुं हतुं, चालवानी शक्ति नहोती, कोमळ अंग हतुं, पगे चालवानो महावरो नहोतो, अनेक प्रकारनां स्वादिष्ट भोजनना निरंतर स्वाद लेतां हजारो नोकर चाकरो खमा खमा करता, पाणी मागतां दुध मळतुं, ते सघळुं वीसरी रेशम अने जरीना गादलामां सुनारां अत्यारे भरजंगलमां नदीना किनारे रेतीमां आळोटतां पडी आनंदनी वातो करी रात्रि गुमारतां थोडीवारमां निद्रावश थयां हतां.



# प्रकरण २७ मुं.

## प्रद्योत वालु-दुर्जननी चालु दुर्जनता.

बंने जणां निर्भयपणे सुतां हतां, ते दिवसे सांजना विश्रांति लीधा पछी स्त्रीने संतोष करी पूर्वनो अधिकार गुणवर्माए पूछतां स्त्रीए कह्युं हतुं के हे स्वामिनाथ ! जे अधम विद्याधरे तमने ओचिंता उचकीने दरियामां फेंकया हता तेज विद्याधरे पाछळथी गुप्त आवी मने उचकीने कहेवा मांडयुं के, रे पापिणि ! तारा माटे मारा भाईनो घात तारा पतिए कर्यो छे अने तेना मरणथी हवे सुखथी संसार केवी रीते भोगवी शकशे ? माटे जेम में तारा पतिने समुद्रमां नाखीने मगरनो कोळीओ कर्यो छे तेम तने पहाडनी टोच उपर शिकारी पशुनी भक्ष्य वस्तु करीश. जोके हुं परपुरुषना स्पर्शने पण वांच्छुं नहि छतां ते अधमे मने उचकीने मारी दुर्दशा करवा धूरो करवा माफक पत्थरना टुकडा माफक मने फेंकीने ते भागी गयो. कोई पुण्यना प्रभावथी हुं बची गई अने वेरान भयंकर भागमांथी धीमे धीमे दृष्टि पहोंचाडी, मेदानमां उतरी तमारी शोधमां दरिया किनारे भटकवा लागी. बाकीनी बाबत तो ते पिता समान भला तापसे तमने कही बतावी छे. आ वात सांभळीने केटलोक शोच थया छतां पण बंने मेगां थवाथी फळ खाईने त्यां घरनी माफक निर्भयपणे सुतां हतां. निद्रा सर्व हितनो विनाश करनारी छतां केटलाको तेने सुखदायिनी गणे छे. जो के दिवसे सारी रीते महेनत लेनारने रात्रे विश्रांति जोईए तेने माटे तद्दन वृद्धने एक पहोर, पाकी वयना युवानने बे पहोर, काची वयना बाळकने त्रण पहोरनी अने तद्दन नाना बाळकने चार पहोरनी पण ऊंघ जोईए तो पण बाळक परवश होवाथी तेना मातापिताने तेनी चिंता राखवानी छे, पण जेओ उमर लायक समजणा छे तेओए निद्राने

घटाडवी जोईए तथा निद्रा लेवा छतां पण एवी निद्रा न होवी जोईए के घरमां कोई चोरी जाय के आग लागे के कोई घांटो पाडीने थाके तो पण जागे नहि. आवी केटलाकने खराब निद्रा होय छे तो तेओ विचारा बळता घरमां बळी मरे छे, तेमना घरमां चोरो निर्भयपणे चोरी करे छे, केटलाको मोडी रात सुधी नाटक तमासामां भटकी के नामुं लखीने जागता रही पछी घोर निद्रामां सुवे छे तेवाओ पछी सवारमां आठ वाग्या सुधी दरिद्री माफक आळोटे छे. तेवाओने घणे प्रकारे नुकशान छे. खरुं जोतां दश वाग्या पछीथी चार वाग्या सुधीनी निद्रा लेवी वधारे सारी छे; तेमां पण घोर निद्रा तो नज जोईए. ज्यारे घरमां घोर निद्रा न जोईए तो पछी भरजंगलमां ज्यां चारे बाजु चोरनो, लूटारानो के भयंकर पशु पक्षीनो डर होय त्यां तो केवी रीते निर्भयपणे निद्रा लेवाय? आवुं छतां पण ते कुमारने हजु दुःख वधारे वेठवानुं हतुं तेथी वैरिणी निद्राए तेने घेर्यो अने अधम विद्याधरने लाग फाव्यो, बन्नेने उचक्यां. एकने पाछो दरीयामां फेंक्यो अने पेलीने पहाड उपर फेंकी दीधी अने अधम विद्याधर हर्ष पामतो पोताना स्थाने जतो रह्यो. तेमणे स्वप्नमां कष्ट जोयुं नहोतुं, जे एक वखत भयंकर कष्ट सहीने केटलेक श्रमे पोताना नगर नजीक आववानी तैयारीमां हतां तेवामां आ कष्ट आवी पडवाथी सामान्य माणस तो ते अधम विद्याधरना भयथी उचकातांज प्राण त्याग करी दे तो भयंकर समुद्रमांथी के मगरना भयमांथी के पहाडना शिखरना बिहामणा देखावमांथी उतरी वाघ विगेरेथी वराडा पडाता जंगलमां केवी रीते बची शके ? पण ना! ज्यां सुधी ते भवमां दुःख सुख भोगववा नक्की थयां होय ते पूरां थया विना केवी रीते मरी जाय? कुदरत तेने बचाववाना संजोगो पण तेवा करी आपेछे, गुणवर्मा समुद्रमां पड्यो, पाटीयुं हाथमां आव्युं, तेने वाझी पडयो, तरतो किनारे आव्यो, पाछो तापसनो आश्रम देखायो त्यां प्रथमनी माफक पाछी अर्धांगना भेगी थई. अने

तारथी तेमने प्रथम जतां बाकने निर्माण कर्युं हतुं के आ लोकोने पाछुं फक वखत अहीं आववुं पडशे ते प्रमाणे मासात् जोयुं नथी कुमारने मैत्रोपकारक वचनोथी कर्मनी विचित्रता समजावी शांति उपजावी अने बंने पाछां प्रथमनी माफक चाल्या. तेओ केटलेक दिवसे तेज नदीना किनारे आंबना पांदोनी रत्नानो थाक उतारवा.अंगनी मलीनताने दूर करवा बंने जणे स्नान कर्युं अने दिवस छतांज वनफळादिनुं भोजन करी पाछां त्यां रेतीमांज सुवानो विचार करतां हतां पण उद्यम माणस तो प्रथमथीज नपेनन होय छे अने मध्यम होय तो ते पण एक वखत ठोकर खाधा पछी सावचेत थाय छे. तेम गुणवर्मा कुमारे विचार कर्यो के, मारी बुद्धि तथा कळा सर्वत्र विजय आपनारी छतां प्रमादने वश थई में पूर्वे निद्रा करी तो आटलुं दुःख खम्युं छे तो हवे हा माटे निद्रा लेवी जोईए ?

पतिना सुवा पछी स्त्रीनो सुवानो धर्म छे अने तेने दिवसनो लागेलो थाक दूर करवा माटे तेनी चरणसेवा करवाने दासी माफक वर्तन करवानो प्रेमदानो धर्म होवाथी अत्यार सुधी वियोगमांज दहाडा गयाथी आज पाछो तेवो समय मळ्याथी तेने सुवानी वाट जोती कनकवती बेठी हती पण पतिने तो निद्रा लेवाने बदले जागतोज बेठेलो जोई पत्नीए पूछ्युं. हे नाथ ! वातोमां घणो वखत काढ्या छतां थाकने दूर करवा हा माटे निद्रा लेवा हजु उद्यमवंत थता नथी ? पतिए कह्युं हे सुंदरी ! आ संसारमां में तथा तें पूर्वे शां पाप कर्यां छे के हजु सुधी सुख तो लेश पण देखातुं नथी. वळी जेम मोटा आगळ कोळीओ चवावी मोंढामां मूकवा वखत आवे के झुंटवी ले तेम आपणी दुर्दशा विधि करावे छे; माटे क्यां सुधी आपणे आवा दुःखथी पीडायला रहीशुं. एम कही निसासो नाखतो पाछो विचार समुद्रमां लीन थई गयो. पति माफक प्रेमदाने पण तेवुं हृदयमां वारंवार दुःख सालतुं हतुं छतां पण पतिने हिंमत आपवा छाती कठण करी कहेवा लागी के,

हे प्रिय ! तमे विद्याधर जेवा दुष्ट निशाचरने दैवीक शक्तिथी शोधीने मने बंधनमुक्त करी अने हजारो राजार्मा वीरत्वनी छाप पाडी तेओने जानैया बनावी मारी साथे लग्न कीधुं छे तो हवे किनारे आवी आ माटे पाछा दुःख समुद्रमां डुबो छो ? शुं दुःख बीजा वीर पुरुषोने नथी आव्यां ? शुं तेथी तेओ हिंमत हारी गया हता ? शुं हिंमत राखवाथी पछवाडे अधिक सुखनी प्राप्ति नथी थई ! माटे विचार समुद्रमां तरफडीयां मारवा करतां शांतिथी शयन करो के, हुं पण आपनी चरण सेवा करी विश्रांति लउं ? आवां पत्नीनां धैर्यतावाळां वचनो सांभळीने तेना मनमां विशेष उत्साह आव्यो, नवुं जीवन आव्युं, हजारो शत्रुओने हरावी दीधा जेटलुं बळ उत्पन्न थयुं अने शांत चहेरे स्त्रीने कहेवा लाग्यो के, सुशीले ! तारुं कहेवुं योग्यज छे अने हुं पण तेवां अनेक संकटो आवे तो पण कंटाळनार नथी छतां पण निद्रा लेवा मारी ईच्छा थती नथी. कारण के, एक वखत निद्रा लीधी तो आटलुं कष्ट वेठयुं छे. अने पतिनी सेवा करवानो सतिनो धर्म छतां पण आजे तुं विश्रांति ले; कारण के, पुरुषो तो धैर्यता अने बळने धारण करनारा होवाथी गमे तेवा थाकने गणना नथी पण स्त्रीनां हाड कोमळ होवाथी चालवाने अशक्त छतां मारा बराबर जोसभेर चाली आवेली होवाथी थाकने दूर करवा निद्रा ले अने सुखथी शयन कर, पण अधम विद्याधर पाछो दगो न दे, माटे मने तो जागतोज रहेवा दे. कारण के, बळवाननुं बळ जागे त्यां सुधीज छे अने मने भय पण लागे छे के, तेनी विद्यानो ते खोटो उपयोग करवा रात्रदिवस आपणुं छिद्र शोधतो वेठो रहेतो हशे अने लाग जोई पाछुं दुःख देवानी तैयारी करी अहीं आववानी ईच्छा राखतो हशे. आम घणुं कहेवाथी स्त्रीने झोकां आववाथी ईच्छा नहि छतां पण निद्रावश थईने पतिना सामे अचेतनपणे पडी. त्यारे कुमार सुकेलां पांदडांनी शय्यामां स्त्रीने सुवेली मुकीने चारे बाजु निहाळतो विद्याधरनी राह जोतो उभो रह्यो हतो.

जेओ सज्जन छे तेओ स्वप्नमां पण बीजानुं अहित चहाता नथी पण पोताना कर्मनेज दोष जाणीने कर्मने तोडवा प्रबळ प्रयास करे छे अने तेथी तेओ जगत्‌ने मित्र तरीके गणी कोईनाथी पण भय पाम्या विना निश्चिन्तपणे धर्मने आराधीने मनुष्य जन्मने सफळ करे छे. पण जेओ दुष्ट छे तेओ पोतानुं कोईए बीगाडयुं होय अथवा बीजाए प्रेरणा करी होय तो गमे तेवा उत्तम माणसने पण शत्रु गणीने पोताना दोष जोया विना तेनुं बीगाड करवा चाहे छे पण तेना प्रबळ पुण्यथी तेनुं बीगाडी शके नहि त्यारे रात्रदिवस मनमां खेद करतो आर्तध्यान करतो रहे छे अने बीजानां छिद्रो शोध्यां करे छे अने वारंवार पोते पीडाई बीजाने पीडे छे. तेवी रीते ते अधम विद्याधरे बे वखत राजकुमारने तथा तेनी स्त्रीने दुःख दीधा छतां पण तेओ न मरवाथी तेमने मारवानुं चिंतवतो आजे लाग मळवाथी पोतानी विद्यावडे तेमनुं स्थान जाणीने आव्यो हतो. तेना मनमां एमज हतुं के, आजे पण पूर्वनी माफक लाग फावशे. पण ज्यारे ते आवीने जुए छे त्यारे एकली स्त्रीने जोईने आश्चर्य पामीने जेवी स्त्रीने दुःख देवा माटे उचके छे तेवोज कुमारे हाकोटो कर्यो के, जेम सिंहनी त्राडथी चकर्‌ं गमराय तेम ते विद्याधर भय पामी गयो अने ज्यारे कुमारे नजीक आवी खुल्ली तरवारनो वीजळी माफक चमकारो देखाडयो के, ते पोतानुं मोत नजीक आवेलुं जाणी बेभान थइ गयो. तेनी विद्याओ पण क्यांय जती रही तेथी ज्यारे कुमारे तेने उद्देशीने कयुं के, रे दुष्ट ! रे छळशोधक ! तने हुं शी शिक्षा करुं ? शिक्षानुं नाम सांभळी ते कालावाला करवा लाग्यो के, हे वीर पुरुष ! हुं जाणुं छुं के मने मारा अपराधथी मोत शिवाय बीजी शी शिक्षा मळे तेम छे ? छतां दीनपर दया कर. एज मारी छेल्ली प्रार्थना छे. राजकुमारे भय पामताने स्थिर करवा तरवार म्यानमां घालीने कोमळ वचने पूछयुं. रे निशाचर ! आवो तुं सत्वहीन छे त्यारे शा माटे अमारा विरुद्ध आवुं वर्तन वारंवार करे

छे ? कारणके, सुखमां सुतेलाने अजाणपणे उपाडी समुद्र तथा पहाड उपर मरवा फेंकी देवा ए अति निंदनीय अने शत्रुने पण आदरणीय नथी? त्यारे ते बोल्यो हे सत्व शालिन्! हुं भाग्यहीन छुं. मारा दुर्भाग्यनी शी वात कहुं ? कारणके, सत्वहीनता मारामां छे अने वीरत्व मात्र तारामां छे. आपणा बेनी सरखामणी केवी रीते थाय ? तारा सामे ईंद्र पण टकवाने असमर्थ छे तो तारुं अहित करवा स्वप्नमां पण कोण चाहे? छतां पण भाभीना भेरायला बाळबुद्धिना आ अधमे पोतानी विद्यानो गेरउपयोग करी तमने नाहक दुःख दीधुं छे अने तेना पापना बीजरुप आ मरणथी पण अधिक दुर्दशाने प्राप्त थयो छुं? अने भविष्यमां मारी शुं गति थशे ते तो प्रभुज जाणे छे. भयथी कंपेला अने हाकोटाथी हथीआररहित थएलाने मारवो अयोग्य जाणीने अभयदान आपीने फरीथी स्त्रीनी भेरणाए न दोरावानी शिखामण आपी छोडी दीधो. ज्यारे आ विद्याधर सिंहना पंजामांथी हरण छूटेलुं जीव लईने भागे तेम भागी गयो. त्यार पछी स्त्रीने सुतेलीज रहेवा दईने पाछली रात्र सुधी जागतोज बेसी तेनुं रक्षण कर्युं अने प्रातःकाळे ज्यारे स्त्री जागी त्यारे तेने विद्याधरनी वात कही संतोष पमाडी बंने जणां स्वदेश तरफ चालतां थयां.



# प्रकरण २८ मुं.

## दृष्टांत साधु-धर्मोपदेश, दीक्षानी इच्छा, पुरुषार्थनी मंदता.

"प्राणीने मनुष्य जन्म पूर्वना पुन्यथीज मळे छे तेमां पण धर्मोपदेश देनार गुरुवर्यनो समागम थवो अति दुर्लभ छे अने ए पण कदाच प्राप्त थाय तो पछी धर्मपर श्रद्धा थवी मुश्केल छे. ए प्रमाणे प्राप्त थनारने ते आदरवानी शक्ति अनुकूल भाग्योदये प्राप्त थाय छे, अने ए चारे प्राप्त जेओने थयां होय तेओ जो धर्म आराधवामां कदी प्रमाद करे छे तो ते मुग्धजनो महा पुण्ये मळेला चिंतामणी रत्नने व्यर्थ गुमावी देवा माफक आचरण करे छे तथा हे भव्यजनो ! जो तमने जन्म मरणथी अने अनंत रोगोथी भरेला एवी अनादिकाळना शरीर बंधनथी मुक्त थवुं होय तो तमे प्रमाद छोडीने, इंद्रियोना विषयोने त्यागीने, आत्मानुं शुद्ध स्वरूप ओळखीने तेमांज लीन थाओ पण आपातरम्य एवा अनंतकाळ दुःख देनारा स्वादिष्ट वस्तुओना भोगोपभोगथी विरक्त थाओ. वळी जेम वेपारी विदेशमां भटकीने अल्पभार अने बहु मूल्यवाळा अमूल्य रत्न शोधे छे तेम तमे पण रत्नसमान ज्ञान-दर्शन चारित्रनी वांछा राखो."

आ प्रमाणे सुधासमान मधुर वाणीए उपदेश देता शान्त मुद्रावाळा मुनिवर्यने दर्शने स्त्रीसहित आवता गुणवर्माकुमारने ते वचनो कानमां पडतां हृदयमां अति आल्हाद थतां रोमराजी विकस्वर थएलो ते कुमार त्यां जइने गुरुवर्यने पगे लागीने यथोचित स्थाने बेसी शांत चित्ते उपदेश सांभळवा लाग्यो. वळी गुरुए कह्युं, हे मुग्धजनो ! जेने तमे तमारा मानीने तेने माटे रात दिवस अनेक प्रकारनां कष्ट सहो छो अने रक्षक तरीके-सहायक तरीके मानी रह्या छो तेवा वहाला पुत्रो,

सुंदर स्त्रीओ ने इंद्रासन जेवुं राज्यासन पण तमने भयकाळे रक्षण आपी शकतां नथी, पण तमारो संबंध पूरो थतां कांतो ते तमने छोडी जशे अथवा तो तमारे तेमने मुकीने पण चालते काळने स्वाधिन थवुं पडशे. आवां हृदयभेदक परलोकनुं हित करनारां वचनोने हृदयमां रुचावीने वैराग्य तरंगमां रंजित थतो कुमार स्त्रीने धीमे रहीने कहेवा लाग्यो, हे प्रिये ! आवो अमूल्य समय फरी फरीने आवतो नथी माटे जो तारी ईच्छा होय तो हुं शिवपद प्राप्त करवाने दीक्षा ग्रहण करुं.

विषयोने वश थएलां आपणे बंनेए कंई ओछुं दुःख खम्युं नथी, अने राजवंशमां जन्म लीधा छतां के अरण्यना वासी भीलभीलडी समान आपणे दुःखज वेठयुं छे. अने ते छतां पण काळ आवीने क्यारे कोळीओ करी जशे ते पण मालुम पडतुं नथी; माटे तपश्यारुपी तलवारवडे दुःखरुपी बंधनने आपणे बंने दूर करी दईए. त्यारे पत्नीए कयुं हे नाथ ! तमे सर्व सत्य कहो छो. सुरेंद्रना सुखोने पण वीसरावे एवुं शिवपदनुं सुख कोण नथी वांच्छतुं ! पण भयंकर सर्पो जेम अमूल्य निधाननी आसपास फरी ग्रहण करनारने अंतराय करे छे. तेम इंद्रिओ उन्मत्त बनीने आपणने तेवा उत्तम पदने प्राप्त करवा विघ्न करी रही छे. वळी आपणुं तारुण्य हजु खीलतुं छे. भोगाकांक्षा पूर्ण थई नथी, तेम भोगोपभोगनुं सुख आवी आवीने दूर थई गयेलुं छे. तेथी थोडो पण काळ जो सांसारिक विषयसुखमां निर्गमन करवामां नहि आवे तो स्थिरताथी चारित्र पाळवानुं आपणाथी बनी शकवुं मुश्केल छे. तेथी हे नाथ ! जो कोई त्रिकाळज्ञानी गुरु बीजी वखत मळशे तो आपणाथी चारित्र पळशे के नहि तेनो निर्णय करी चारित्र ग्रहण करवुं; कारणके व्रत लईने जो पाळवामां प्रमाद करवामां आवे तो महान् दोष प्राप्त थाय छे. स्त्रीनां आवां हीनसत्वनां वचनो सांभळी व्रतमां दृढ आदर धरनारा गुणवर्मा कुमारे कयुं हे मुग्धे ! भविष्यमां

नुं ज्यारे आवशे तेनो भरोसो नथी तेम तेना भरोसे बेसीने व्रत लेवुं ए पण अयोग्य छे. माटे उत्तम पुरुषो तो ज्यारे वैराग्यदशा उरमां स्फुरे छे त्यारेज पोतानुं आत्महित करी ले छे अने इंद्रियोना वश समूहने रोकवामां आत्माने समर्थ जाणे छे, वळी ज्ञान तेने सहाय थाय छे, अने गुरु सेवामां बेठेला शुद्धशिष्यने मोह पण पराभव करवा शक्तिवान् नथी तो तेनी हामीओ विषय तृष्णाओ शुं करी शकवानी छे. तथी पण मारुं मन हजु अस्थिर छे माटे थोडो वखत घरी समाधि माटे हजु राह जोईश; एम कही गुरुने नमस्कार करी पछे भाण नीकळी देश तरफ चाल्या.



# प्रकरण २९ मुं.

## द्रष्टांत पूर्णाहुति-विधिनी विचित्र कृति-कनकवतीनी भ्रष्टता तथा गुणवर्मानी दीक्षा.

कर्मनी दशा केवी विचित्र छे, मोह नामना दुष्ट राक्षसे जगत्ने घेरीने भला भला समर्थ पुरुषोने कायर बनावी, निर्लज बनावी पायमाल करी दीधा छे; तेओ विचाराओए आखी जींदगी सुधी शीलव्रत तथा सदाचार पाळी आबरु मेळवी होय, पुण्य बांध्युं होय, अशुभकर्मने तोड्या होय छतां पण जो मोहनो लाग आवे अने माणस प्रमादी थाय तो कुकर्ममां दोरातां वार लागती नथी अने पूर्वनी शुभ कमाणी जती रही अशुभ कर्मनी मोटी खोट आवे छे. विश्वामित्र जेवा राजर्षिने मोहे नचावीने व्रत भंग करावी तपस्यानो भंग करावी अप्सरानो उपासक बनावी दीधो छे. इंद्र जेवाने गौतमऋषिनी अहल्या स्त्रीनो वांछक बनाव्यो छे. काळीदास जेवा कविने सुपुत्रीना शील उपर दृष्टि करतो कर्यो छे, भर्तृहरी जेवानी अति माननीय पिंगळाने कुमार्गे दोरी छे जेथी परमार्थ साधनमां जेणे जींदगी गुजारी छे तेवा वीरविक्रमने पण देशनिकाल थवुं पडयुं छे अने तेनाज पश्चातापथी भर्तृहरीने राज्य छोडवुं पडयुं छे. पृथ्वीराज चहुआण, करणघेलो, माधव विगेरे जेनां दृष्टांत जोईए, तेओ सघळा गुणवान हता, तेओने पण मोहे निर्गुणी बनावी स्वपरना हितनो नाश करनारा कर्या छे. जेओ अहंकार राखे छे के मोह मने शुं करनार छे? हुं नीतिथीज चालीश. इंद्रिओ गृहस्थावासमां पण कबज राखीश, तेवाओना अहंकारने क्षणवारमां क्षीण बनावी आ मोहे पायमाल कर्या छे तेथीज वीरप्रभुए सर्व जीवोने फरमाव्युं छे के तमे समय मात्र प्रमाद न करो? जो प्रमाद थशे तोज मोहनुं जोर चालशे अने जेओए प्रमाद कर्यो छे

ओ मोटा चौद पूर्वना पारंगामी महान विद्वान मुनिराजोने पण उंच स्थानथी भ्रष्ट करी अधमगतिए पहोंचाडया छे, तो सामान्य जीवोनुं शुं कहेवुं ? ते प्रमाणे कनकवती सति जेवी सुलक्षणा स्त्रीने पण भोगाकांक्षामां दृष्टि रही अने व्रत लेवामां प्रमाद कीधो तो आगळ चालतां केवा बुरा हाल थाय छे ते आपणे जोईए. एक धन धान्यथी भरपूर एवा नगरने रस्तामां आवेलुं देखीने विना पैसे शहेरमांथी माल तथा खान मळवानुं अशक्य होवाथी अने साथे लई टाम टाम लोकोना देखतां भटकवुं अयोग्य लागवाथी शहेर बहार नजीक जे उद्यान हतुं तेमां एक छायावाळुं झाड जोई तेने त्यां बेसाडी पोते शहेरमां गयो. जुगारवडे धन मेळवी खावाना पदार्थो मीठाइ फळ विगेरे लेइ ज्यारे पाछो आवे छे ते वखते घणा लोकोने ते शुभ शुकनना कारणरुप थतो हतो तेना देदिप्यमान चेहेराथी तथा चालवानी खूबीथी तथा हाथमां आवी रीते पदार्थ लई एकलो पगे केम चालतो हशे तेना माटे अनेक प्रश्नो करनारा तथा आदरमान आपनारा तेने घणा मळत तोपण स्त्रीने एकली मूकवी अयोग्य लागवाथी तुरत ते पोताना स्थाने आव्यो. स्त्रीने प्रथम तृप्त करी पछी पोते भोजन लीधुं पण ते वखते तेनां केटलांक चिन्होथी मालुम पडयुं हतुं के तेना चेहरा उपर एकदम फीकाश आवी हती; तेनुं कारण शुं, एम विचारतां तेना मनमां आव्युं के वखते तेने तेनां सगांवहालां सांभरी आव्यां हशे अने स्त्रीनो स्वभाव कोमळ होवाथी तेने रडवुं पण जल्दी आवी जाय छे, छतां पण तेनी खात्री करी जोउं ! एम विचारी दिशा जवानुं बानुं करी वाडना ओठे पोतानी स्त्रीने पोते न जणाय पण पोते तेने जाणी शके तथा तेनी चेष्टा बनी शके. स्त्री एकली पडवाथी जमीनमां पुरुष स्त्रीनुं जोडं चोनरी तेने निहाळी निहाळीने जोवा लागी तथा पंचम स्वरना उद्गार कोयल माफक काढवा लागी. थोडीवार पछी वियोगनां चिन्ह बतावी आळस खाती दीर्घ निःश्वासा मूकवा लागी अने चारे दिशामा धारीने जोवा लागी त्यारे गुणवर्मा

कुमारे आ सघळुं जोयुं त्यारे तेना मनमां चोकस थयुं के तेनुं प्रेम पात्र बीजुं कोइ अहीं तेने मळी गयेलुं होवुं जोइए अने तेना माटे आ उदास थइने बेठेली छे अने घडी घडीमां तेनो स्वभाव बदलाय छे. पण हजु तेनी पासे जो हुं एकदम प्रगट थाउं त्यारे तेनो चहेरो लाइ जशे तो जाणीश के ते जरुर व्यभिचारिणी छे. तेथी एकदम आव्यो त्यारे तेना धारवा मुजब स्त्रीए पोतानो प्रथमनो देखाव गोठवी दीधो हतो अने पूछतां खुलासो आपतां पण गभरायला जेवी दीसती हती, छतां पण पक्को निर्णय कर्या विना तेने कंइ पण वधारे कहेवुं के मानी लेवुं ते अयोग्य धारतो हतो तेथी ते दिवसे त्यांज आश्रय शोधी रह्यां हतां. थोडीवार पछी कुमार त्यां एकलो फरतो हतो. तेवामां कोइए तेने पूछयुं के हे बंधो ! अहीं अमारा राजकुमारने जोया के ? त्यारे गुणवर्माए पूछयुं के ते कुमार कोण छे ? त्यारे ते माणसे कह्युं के शंखपुर नामनुं आ नगर छे तेमां इशानचंद्र राजा छे, तेने गुणना सागर समान गुणचंद्र नामना कुमार छे पण ते राजानी कीर्तिने कलंक लगाडनारी चालमां फसायलो ते राजकुमार कोई अहीं नवी आवेली परदेशण स्त्री उपर तेना रुपथी मोहित थयेलो छे, अने तेनो मिलाप एकांतमां इच्छी मने कांई कार्यनुं बहानु बतावी दूर करी दीधो हतो, ते कार्य करीने अहीं आवतां तेने न जोवाथी तेने शोधुं छुं अने तेने ते स्त्री मळी के केम ते तमे जाणता हो तो कहो ? गुणवर्माए वातनो निकाल लावता कह्युं के तेनुं ईच्छित थवाथी ते तो शहेरमां गयो. आ वात सांभळी आवी मनोहर मुग्धा एकदम मळी गई तेथी आश्चर्य पामतो ते माणस शहेरमां गयो त्यारे कुमार विचारवा लाग्यो के आ संसारनुं स्वरुप कोई विचित्रज छे, तेनो पार पामवा कोई समर्थ नथी. घडी घडीमां माणसनी वृत्तिओ बदलाती जाय छे. एक वस्तुथी बीजी अधिक वस्तु ज्यां सुधी प्राप्त थई नथी त्यां सुधी तेने पोतानी मानीने तेना उपर प्रेम थाय छे अने विशेष सुंदर बीजी मळतां पाछा भाव

कर्मनी विचित्रतानो पार नथी, रंकने राजा अने राजाने रंक बनावे छे, तेम आ विचारी अबळाने कर्मे दगो दीधो हतो अने तेनुं हृदय सतित्वने छोडी असतित्वमां प्रवेश करी गयुं हतुं. तेना मनना विचारो पूर्वे शंखपुरना राजाना कुमारने अत्यंत रुपवान् जोयेलो होवाथी तेमांज दोडया करता हता अने हवे पति जे वचमां विघ्नरुप हतो ते पण नीकळी गयो हतो. तेम तेना मनमां खात्री पण थई हशे के तेणे मारुं कोई पण रीते दुष्ट चरित्र जोयुं हशे तथा तेना वैराग्य रंगमां विशेष वधारो थवाथी मारा दुर्गुणोनी उपेक्षा करीनेज नीकळी गयेलो जणाय छे तो हवे मारे पण मारा मननुं अभिलषित करवुं जोईए; छतां पण लोकलज्जाए त्रण दिवस सुधी पतिनो शोक करी वाग्वृत्तिथी अनेक प्रकारे लोकोना मन उपर पोताना सतित्वनी असर करीने लाग फावतां चोथे दिवसे मध्य रात्रे रस्तो पकडी गई हती. यार उपर प्रेम तेनो रथ बन्यो हतो, हृदयनो उत्साह तेनुं भातुं थयुं हतुं, भोगनी तृष्णा बळनी मसाल बनी हती, चाल्यानी त्वरा (वेग) तेनी सखी बनी हती, युवावस्थानो मद (उन्माद) ते शुभसूचक शुकन थयो अने कामदेव तेनो रस्तानो भोमीयो थयो हतो.

रंक विचारी अबळा पतिना स्थानथी भ्रष्ट थएली वीछने त्यागी कुरस्ते सेववा तैयार थई हती पण तेना नशीबमां सुख मात्र देखवा-रुपज हतुं. पूर्वना पुण्य विना भोगोपभोगो प्राप्त क्यांथी थाय? अने थाय तो सुखथी भोगवाय केम ? अने विषयभोगनी तृप्ति वांच्छे तो क्यांथी मळे ? ए तो इंद्रियोने उन्मत्त अश्वनी माफक ज्ञानरुपी लगाममां कबजामां राखे तो इच्छित स्थाने पहोंचाडे, अने मोक्षनुं सुख मेळवे; पण आ विचारीने तेनुं सुख अहींनुं पण लख्युं नहोतुं तेम पर लोकनुं पण लख्युं नहोतुं. शंखपुरना राजपुत्र पासे ते निर्भयपणे आवी पहोंची अने राजकुमारे तेने प्राणथी पण अधिक वहाली गणीने तेने सर्वे राणीओमां श्रेष्टपद (पटराणीनुं पद) आप्युं हतुं. पण तेथी

पूर्वनी राणीओ आवी कोई परनारी नाम ठाम वगरनी वेश्या पेरे परण्या विना घरमां पेठेलीने महालती जोईने तेओनाथी घडीभर पण सुखे वेसातुं नहोतुं, तेम राजपुत्र पण तेमने गणकारतो नहोतो. तथा ते विचारीओए बीजो कोई उपाय न जोई शक्याथी तेने छूपी रीते झेर आपीने तेनो निकाल आण्यो हतो, अने ते मरतां दुःखितवन करी दुर्गतिमां जइ. अने सात सागरोपमथी अधिक दुःख भोगववानुं, चोथी नारकीनुं स्थान तेना माटे निर्माण थयुं. तेनो पति गुणवर्मा कुमार संसारनुं तथा कर्मनुं विचित्र रुप समजीने ज्ञान ध्यानमां चित्त राखी तपस्यावडे अशुभ कर्मनो नाश करी इंद्रियोना विषयोने विष समान गणी तेनो बीलकुल भरोसो त्यागेलो होवाथी अंतकाळे पण सर्वे जीवो उपर पण मैत्रीभाव भावीने समाधि मरणे देवलोकमां उत्पन्न थयो. त्यांथी सागरोपमनुं सुख भोगवी उत्तम कुळमां अवतार लेई बीजा भवमां मोक्ष जशे. माटे हे कुमार ! तुं आ गुणवर्मा कुमारनी कथा सांभळीने इंद्रियोना विषयथी निवृत्त था ! त्यारे कुमारे कह्युं हे स्वामिन्! आप कहो छो ते सत्य छे. में पण इंद्रियोना विषयोने वश थवाथी अतिशे दुःख भोगव्युं छे. गुरुए पूछ्युं हे भद्र! तें शुं दुःख भोगव्युं छे ते यथास्थित वर्णव ? धम्मिले कह्युं के हे मुनिवर ! जेणे दुःख वेठ्युं नथी अने बीजाना दुःखे दुःखी थतो नथी अने दुःखने हणवा समर्थ नथी तेना आगळ दुःख कहेवामां शो सार छे ?

मुनिवरे कह्युं के हे वत्स! में दुःख वेठ्युं छे तेम दुःख हरवाने समर्थ छुं तेम अन्यना दुःखोने सांभळीने करुणाना लीधे मारुं हृदय पण भींजाय छे माटे निश्चिंतपणे तारुं वर्णन कहे, त्यारे धम्मिले पोतानुं पहेलेथी छेल्ले सुधी वर्णन कर्युं. ते सांभळीने करुणाना सागर एवा ते मुनिवरे तेने धीरज आपवा पोतानुं वृत्तांत केहेवा मांड्युं.

---

# प्रकरण ३० मुं.

## मुनिवर्णनुं वृत्तांत.

सघळी संपदाओना भंडाररूप अवंती देशमां उज्जयिनी नामनी नगरी प्राणीओना मनना मनोरथो धर्म, अर्थ, काम वडे निरंतर पूरे छे ते नगरमां शत्रुने सेनापतिरूप जितशत्रु नामनो राजा मध्यान्हना सूर्य माफक महाबळवान हतो. तेने अमोघरथ नामनो सारथी सर्वोओमां भूषणरूप अर्जुनने कृष्ण माफक मळ्यो हतो, तेने यशोमती नामनी अर्धांगनाथी अगडदत्त नामनो तेजस्वी पुत्र उत्पन्न थयो हतो. आ नानो बाळक पोतानी माताना खोळामां निरंतर रमतां छतां पोतानी बाळ बुद्धिथी तेना हृदयनुं दुःख जाणी शकवाने असमर्थ हतो. पण ज्यारे ते कांईक समजणो थयो ते वखते कोई पण कारणे तेनी माताना आंखमांथी चोधार आंसु पडतां जोई पूछवा लाग्यो के, हे मात! तने एवुं शुं दुःख छे के तेना लीधे तुं रात्र दिवस रडे छे, दुनियाना रंगथी तद्दन अजाण्या पोताना पुत्रने जाणीने मातानुं हैयुं विशेष भरायुं छतां पण धैर्य आणी कहेवा लागी के हे वहाला! तुं दुनियामां जन्म्या छतां पण हजु बाळ बुद्धिनोज रहेवाथी मने निरंतर रडवुं आवे छे, जो तारामां कांई पण सत्व होत तो तारा पिताना मरणथी अत्यंतभारी घा लागवा छतां पण कांईक दिलासो लेत, के मारो सुपुत्र तेना पितानुं उत्तम पद अने राज्यनुं मान पाछुं मेळवशे, पण अत्यारे तेमांनुं किंचित् पण चिन्ह देखातुं नथी. मूर्ख अबळाओ पतिना मरणथी पोताना वैभवनो नाश थयेलो जाणी रात्र दिवस रडे छे तेवुं रडवुं कोई पण रीते सारुं नथी पण घरनो बोजो साचवनार माणथी वहालो पति निराधार मूकीने चाल्यो गयो एज मने वधारे दुःख दे छे. कदाच तुं जो मोटो थाय अने विद्याओ भणीने तारा बापनुं महत्व प्राप्त करे तो मारु

दिवसे दिवसे जेवानुं स्थान छे नहि तो पछी आ किंचित् आजी-
विका आपणा घरमां छे ते पण स्वाहा जशे मारे तथा तारे केवी
दुःखद अवस्था भोगववी पडशे ? ते तो तने विचार पण क्यांथी आ-
वे ? अरेरे ! तारा पिताना मरणना पहेलां मारुं मोत थयुं होत तो वधारे
सारुं थात ! कारण के आ घरना महिमानो पराभव तो न थात ! अने
कदाच ते दुःख विसारे पडे छे के पाछो आगे मने बाळकने पाळीने
तारा पितानो प्रतिपक्षी आ दुष्टो तेने करवा जवानो नहि छतां पण
अहींथी छेक छेवाणी जेवो धनी थोडो खेलावतो पोतानी चालाकी
बतावतो वारंवार नीरखे छे अने ते तारा पितानोज साक्षी होवाथी
मने वारे वारे रडवुं आवे छे. माटे हे पुत्र ! जो तुं माताना दुःखने
पुछतो होय अने तारामां जो कंइ पण समजशक्ति होय तो तुं विद्या
भणीने तारा बापना पदने फरी प्राप्त कर. आ समये पुत्रना दिलमां
पोतानी माता माटे अतिशय लागणी आव्युं हतुं अने बाळक छतां पो-
ताना प्राण सुधां पण माताना दुःखने दूर करवा माटे अर्पण करवा
तैयार हतो तेथी कहेवा लाग्यो के हे मात ! आज्ञा आप के हुं हमणां
ने हमणांज अहीं ज्यां विद्या सुखनी पाठशाळा होय त्यां भणवा चा-
ल्यो जाउं ! पुत्रनी आवी हिंमत जोइ मातानुं हैयुं उल्लासमय थइ गयुं
अने बोली के हे वत्स ! तने अहीं भणवामां घणां विघ्न छे. प्रथम तो
तारा बापनो प्रतिपक्षी तने उमर लायक थयेलो जाणीने हणवा प्रयत्न
करशे अने तेमां नहीं फावे तो पछी भणवानुं बंध करावशे अथवा बी-
जी रीते तने पीडशे, माटे तुं अहींथी दूर थाय तेमांज हाल तो सारुं
छे. तारा पिताना परम मित्र दृढ प्रहारी नामनो कौशंबी नगरीमां
शास्त्र अने शस्त्रनी नीतिमां निपुण छे तेनो आश्रय लेतोज तारुं भवि-
ष्य सुधरे तेम छे. आ प्रमाणे पुत्र माताए त्यांज वात करीने संतोष
मान्यो हतो पण माताथी ज्यारे पुत्र जरा छुटो पडयो के पोताना
भविष्यना कल्याण माटे तेना मनमां अनेक प्रकारना तुरंगो उठवा

मांड्या हता अने ते तरंगोमां उल्लसित थयेलो बीजे दिवसेज माताने पगे लागीने तेनो आशीर्वाद लईने सिंहनी माफक बीजानो आश्रय लीधा विना पोतानुं नशीब अजमायवा परदेश नीकळी गयो हतो तेनी उमर जो के तद्दन नानी नहोती तो पण तेवा एकना एक बाळकने पतिना वियोगे निरंतर दुःख पामती तेनी माता तेने स्वप्ने पण बहार काढवा ईच्छे नहि पण अणचालते पतिना प्रतिपक्षीने सन्मुख उभो रहेवा जोवाने पुत्रने प्रवीण करवा माटेज काळजुं कठण करीने छूटो पाडयो हतो. रस्तानां अनेक दुःखोने भोगववा छतां पण शुन्य चित्ते नहि गणकारतो कौसंबी नगरीमां प्रवेश करीने परमेश्वरना नामनी माफक गुरुना नामनो जाप करतो पूछी पूछीने अध्यापक पासे हौंसथी आवी पहोंच्यो हतो. वडीलोने विनय करवामां तत्पर एवा आ बाळके ते अध्यापकने कोई पण वखत नहि जोया छतां अत्रे फक्त नामनी ओळखाण आप्याथीज सन्मुख रही मस्तके अंजली लगावी प्रणाम कर्यो हतो. अध्यापक पण आवा विदेशी नाना बाळकने विना कारणे हैयाना उल्लासथी नमस्कार करतो जोई ज्यां तेनी दिव्य कांति जोईने तेने पोताना पुत्रथी पण अधिक प्रेम तेना उपर थतो हतो जेथी खोळामां बेसाडी माथे हाथ फेरवी स्नेह दृष्टिथी दिलासो आपी पूछवा मांड्युं. हे वत्स ! तुं कोण छे ? क्यांथी आवे छे ? तारी शुं वाण छे ? आम मने अजाण्याने शा माटे आटलो बधो प्रणाम करीने बोजा तळे दबावे छे ? त्यारे ते बाळके पोतानुं तथा पोताना पितानुं नाम तथा ठेकाणुं आप्युं तथा भणवानी ईच्छा जणावी. आटलुं जाणवाथी ते अध्यापक मोटा विचारमां पडी गयो के आहा ! शुं नशीबनी बली-हारी छे के राज्यमां अति माननीय मारा मित्रनो पुत्र आवो एकाकी अनाथनी माफक पगे चालीने मारे त्यां आवे ! जेने खमाखमा कहे-नारा सेंकडो माणस होय, जेने बेसवाने माटे अनेक वाहन होय, जेने पहेरवा ओढवा माटे अनेक प्रकारनां वस्त्राभूषण होय, जेनुं लालन

पालन करवाने केटलीक भाव भाभाओ होय, ते बाळकना एक रंक बाळक जेवा हाल ! अरेरे तेनी माताए तेने आ माटे एकलो मूक्यो हशे ! तेना बापनी स्थितिमां केवो फेरफार थयो हशे ! एम विचारी फरी पाछुं पूछ्युं, हे वत्स ! तारी आवी दुर्दशा एकदम केम थई ? तुं छूपो नासी आव्यो छे, के तारा बापनी राज्य रिद्धि नष्ट थई छे, के तेना उपर राज्यनी इतराजी थई छे, के तने कांई खोटुं थयुं छे? अरेरे हुं केवो निर्भागी के मारा मित्रनी में घणा वखतथी कंई पण खबर पूछावी नथी ! त्यारे तेजस्वी बाळके माताए कहेली वार्ता पोताना पिता संबंधी सघळी ते पिताना मित्रने जणावी. कोमळ वचनेथी कहेता बाळकना एक एक वचनथी घवाता काळजाथी ते अध्यापक मित्रनी दुर्दशाथी पोतानी मोटी उमरने पण विसारी नाना बाळक माफक पोके पोके रडवा लाग्यो अने ज्यारे हैयुं भरायलुं खाली थयुं त्यारे रडतो बंध थई मित्रना पुत्रने छाती सरसो चांपी कह्युं के, हे वत्स! तारे कंई पण ओछुं लगाडवुं नहि, हुं तने मारा पुत्र तरीके भणावीश, पण कहे तारे कंई विद्या शीखवी छे? तेणे धनुर्विद्या शीखवा ईच्छा जणाव्याथी बीजी विद्याओने गौणपणे शीखवी. राजाओने अति प्रिय एवी वीरत्वदर्शक धनुर्विद्या तेने मुख्यपणे शीखववा मांडी. योग्य गुरु अने विनयी बुद्धिवान शिष्य मळी जवाथी गुरुए तेने शीखववामां जरा पण भेदभाव राख्यो नहीं तेथी ते शिष्य पण उल्लासथी भणवा मांडयाथी दिवसे दिवस उत्तम गुणोथी वधारे प्रिय थवा मांडयो हतो अने तेथी तेने धनुर्विद्यानो अनुभव मेळववा माटे गुरुना घरना पछवाडे मोटुं मेदान हतुं तेमां जवा लाग्यो. प्रातःकाळे विद्या अध्ययन वधारे श्रेष्ठ थतुं होवाथी सवारनो वखत ते त्यां गुजारतो हतो, तेवामां नजीकना घरनी बारीमांथी कोई युवान बाळिकाए तेने अभ्यास करतां जोयो. आ अभ्यास करनार जेने आपणे पूर्वे बाळक अवस्थामां जोयेलो ते हवे विद्यामां दीनप्रदीन वधारो करवा साथे उमरमां पण वधतां वधतां युवा-

कांतिथी आकर्षायेली गोखमां बेसीने निरंतर तारी राह जोया करुं छुं. क्षुधातुरने जेम दुधपाकने देखीने जमवानी ईच्छा थाय छे, वेलडी जेम वृक्षने वींटावा ईच्छा करे छे तेम हुं कामथी हणाई अनाथ बनेली तारा आश्रय नीचे रहेवा ईच्छुं छुं माटे हे दीनोना उद्धारक! कोई पण रीते तुं मारो उद्धार कर! हजु पण अगडदत्त तेना तरफ जोइए तेवुं लक्ष आपतो नहोतो तेथी नीचे उतरी एकांत जोई तेना पगमां पडी.

दूरथी पण चंद्र शीतळ सुधा वरसावे छे, दूर रहेलुं खीलेलुं कमळ सुगंधीना रजकणो आपे छे, दूरथी पण वागेलुं वाजींत्र कानमां मधुर शब्दो मोकली आपे छे. चीतरेली पद्मणी दूरथी पण माणसना नेत्रने स्थिर करे छे, स्थंभ साथे स्थिर रहेली पुतळी देवांगनानो देखाव आपी माणसोना मनने मोहित करे छे तो आ साक्षात् सघळा गुण धरावनारी सामे आवीने उभी रहीने प्रार्थना करती लीलावती कोने मोहित न करे! अने तेथी अगडदत्त पण पोतानी स्थिरताथी विमुख थइ चंचळ बनी गयो पण गुरुनो दाब माथा उपर सज्जड होवाथी ते तेणीने कहेवा लाग्यो के हे तन्वंगि! तारुं कहेवुं सत्य छे! अने हुं वीर पुत्र होवाथी तारुं रक्षण करवा योग्य छुं छतां पण गुरुना घरमां गयेलो सूर ( सूर्य ब्रहस्पतिना घरमां जाय त्यारे ) पण सारां कार्य करवाने अयोग्य थाय छे तेम हुं हजु गुरुना कबजामां होवाथी तेनुं मन दुःखावीने विद्यामां विघ्न पाडीने तने ग्रहण करवानुं हुं हाल कोई पण रीते योग्य धारतो नथी. आवां तेनां वचनोथी कंटाळेली मुग्धाए कह्युं के, हे सत्वशालिन्! आ तारुं वीरत्व केवुं के साक्षात् प्रेमदा प्रार्थना करे छे छतां पण वचमां गुरुनो भय राखे छे! जाणतो नथी के कळाना रसिक एवा चंद्र गुरुनी स्त्री अहल्या साथेज भोग भोगवता भविष्यनुं कलंक लागनारुं जाणवा छतां पण आतुर थयां हतो. (आ लौकिक कथा छे.) आम वचन चातुरीथी तेने बोलतो पण सुंदरीए बंध करवाथी ते नम्र थएलो अगडदत्त कहेवा लाग्यो, हे

अमुक थईने आव्यो होय तेम देखावाथी कंपवा लाग्यो तेथी राजाना सुभटोना पण मद गळवा लाग्या. मल्लोने पण कीडा जेवा निःसत्व बनावी दीधा. हजारो सुभटोथी पण जे हाथी कबजामां न आवे तेवा हाथीने जरावारमां गाय जेवो बनावी दीधाथी सघळा सभासदो तेने वखाणता माथुं धुणाववा लाग्या. आवी आवी अनेक कळाओ थतां छतां पण सभासदोनी साथे राजा मळतो थयो नहोतो अने राजा ज्यां सुधी पास न करे त्यां सुधी अगडदत्तनुं कार्य सिद्ध थाय तेवुं नहोतुं, तेथी लागेला श्रमने विसारी वारंवार जुदी जुदी जातनी हुन्नर कळाओ बतावी राजाने खुशी थएलो देखवा तेना तरफ जोवा लाग्यो छतां पण राजाए मौन धारण कर्याथी अगडदत्तने कंटाळेलो देखी राजाए पोताना मननो अभिप्राय तेने खुल्ला शब्दोमां संभळाव्यो के हे भद्र! तारी आवी कळाओथी मारुं मन आश्चर्य पामतुं नथी; कारणके पेट भरवाने माटे आवी आवी अनेक कळाओ शीखेला मनुष्यो दुनियामां घणा मळी आवे छे पण तेनाथी आवी कळाओवडे तेनुं के बीजा कोईनुं कंइ पण आत्महित थतुं नथी माटे तेवी कळामां हुं हमेशां उपेक्षा करुं छुं; छतां पण हुं जैनधर्म पाळतो होवाथी जैनधर्म माणे कोई पण जनने निराश न करवानुं होवाथी तारी इच्छा प्रमाणे न आपवा तैयार छुं. माटे हे वत्स बोल, तने शी वांच्छा छे? अगडदत्ते कयुं हे नरेंद्र! हुं भिक्षुक नथी के तमारी पासे धननी याचना करुं. मान्य पुरुषो धनराशीने पण तृण समान गणे छे. फक्त तमारी तरफथी साबाशी मळे तेज मने घणुं छे. वळी जेना वचनमां पण ते (मीटाश) नथी तो छाया आपवाने अशक्त एवा वृक्ष पासे फळनी शुं वांच्छा राखवी? अने कदाच अमृत दृष्टि विना इच्छित धन आपे तो पण शुं? आदर आपीने मादा अन्ननुं आपेलुं भोजन पण अमृत सदृश पुष्टि करनारुं थाय छे अने अपमान करीने के उपेक्षा करीने खवाडेलो दूधपाक पण हृदयना लोहीने बाळनारो थाय छे

राजाए तेने आ प्रमाणे दुःखी थएलो ॥

कह्युं हे वत्स ! जे कळार्थी अजाण छे तेने बीजानी कळाथी लाग छे पण जेवो ते सघळी कळानो जाण होय तेने बीजानी कळार्थी केम आश्चर्य थाय ! छतां पण

आवी अनेक कळाओ छतां पण धर्मकळा विना बाकी सघळी शुन्य छे अने ते खरा वखते कंई पण हीत करनारी

हे वत्स ! तुं मारा वृत्तांत उपरथी सारी रीते समजी शकशे दइने सांभळ.



# प्रकरण ३१ मुं.

## श्रीषेण राजानुं वृत्तांत.

कौशांबी नगरीमां हरिषेण राजाने ज्यां कृष्णनी लक्ष्मी माफक धारिणी नामनी अर्धांगना हती. तेने सुबुद्धि नामनो मंत्री मतिने रहेवाना मंदिर समान हतो. तेने सुधा पाणी वहेवडावनारी सिंहला नामनी सुभार्या हती, तेने आनंद आपनारो आनंद नामनो पुत्र थयो हतो, पण युवावस्थामां आवे ते पहेलां तेने कोढना रोगे दयाजनक स्थितिमां आणी सुवर्णवर्णनी चामडीने कोहेली केरी माफक दुर्गंध प्रसारवा जोग गंधाती अने पर लोही वहेती करी मुकी हती.

तेनी दुर्गंधी तेने अने बीजाने एटली पीडाकारक हती के तेनी पासे फक्त माखी सिवाय बीजुं कोई जवा के उभुं रहेवा इच्छा करतुं नहोतुं. राजाना मानीता मंत्रीए मोटारने कोढी माफक गणीने अनेक वैद्योने बोलावीने तेनी चिकित्सा करावी छतां पण ते मूर्ख शिष्य जेम विद्याने प्राप्त करवा अशक्त नीवडे तेम तेनाथी निरोगता दूरज रही हती. बिचारो ते युवान अवस्थामां आव्या छतां पण अपंग माफक घरनो खुणो छोडी शकवामां अशक्त थयो हतो. खाटलाथी नीचे उतरवुं तेने पहाड उपरथी नीचे कुदवा माफक मुश्केल हतुं. तेथी ते बिचारो मनुष्यपणामां पण नारकीनां दुःख अंगे अनुभवतो हतो अने तेनां मावाप उपाय विना बिचारां अशक्त बनी तेना सामे रहीनेज उभा रहेवामां संतोष मानतां हतां. एक वखत ते राजानी सभामां यवन देशथी कोई बुद्धिवान दूत कांइ कारणे आवेलो अने ज्यारे तेणे पोतानुं कार्य करीने पाछुं जवा मांडयुं त्यारे तेनी बोलचाल उपरथी मंत्रिए तेने बुद्धिवान जाणीने पोताने घेर लई जईने तेनुं एटलुं बधुं सन्मान कर्युं के ते विदेशी छतां पण सगा बंधु माफक मंत्री साथ वातचीत करवा लाग्यो.

ज्यारे मंत्री तथा विदेशी दूतनी वात चालती हती ते वखते मंत्रीनुं मोढुं उदास तथा दुःखथी तरफडता कुवाना देडका माफक आमतेम शय्यामां उछळतो अने हजारो माखीओथी वींटायेलो अने अंधारा ओरडामां दुर्गंधी मारतो तेनो पुत्र पडेलो जोईने दूते मंत्रीने पूछ्युं के, आ कोण तरफडे छे तथा तमारुं वदन निस्तेज केम छे? मंत्रीए गदगद स्वरे एकना एक पुत्रनुं युवावस्थामां पुत्रनी तथा पोतानी जींदगी बगडवानुं सघळुं वर्णन तेने कही बताव्युं, तेम अनेक वैदोना अनेक उपायो करेला ते निष्फळ थएला कही बताव्या. त्यारे आ विद्वान के जे पृथ्वीमां घणी जग्याए राज्यना कार्य माटे गयेलो अने अनेक निपुण पुरुषोथी समागम थतां अनेक औषध शीखेलो हतो; तेणे ते पुत्रनो रोग टाळवा मंत्रीने औषध बताव्युं. मंत्रीनी पण ते औषध विषे खात्री थवाथी ते दूतनो उपकार मानी तेने रजा आपीने ते उपाय कर्यो, पण ए उपाय तेना आखा कुटुंबनुं निकंदन करवारूप थयो हतो अने तेथी जो के लोहीना कुंडमां डुबेलो कुमार बोल्या चाल्या विना पडी रहेलो होवाथी बची गयो हतो. बाकी सघळुं सत्यानाश थळी जवाथी ज्यारे राज्यना माणसो सघळुं लूटीने, तोडीने, फाडीने गया त्यारे आ विचारो रोगी जोयाज करतो हतो पण ज्यारे तेनी चोकस खात्री थई के हवे अहीं कोई नथी त्यारे ते लोहीना कुंडमांथी नीकळी गयो अने अंधारी रात्रे लोहीथी खरडायलोज धीमे धीमे पाणीना स्थान आगळ आव्यो त्यां ज्यारे नाह्यो त्यारे तेनी काया तद्दन निर्मळ अने देदिप्यमान देखावा लागी. आ मंत्रिपुत्र विचारतो हतो के हुं केवो निर्भागी छुं के मावापने महेनत आपीने मोटो थयो, अने मोटो थईने रोगने पामीने तेमने रात्रदिवस पीडा उपजावी अने तेमनी सेवानो बदलो आपवाने तेमना प्राण लीधा. अरेरे ते करतां ए उपाय न कर्यो होत अने हुंज रीबायां कर्यो होत तो वधारे बेहतर हतुं. हे प्रभु ते करतां मारुं मोत थयुं होत तो हुं

मनमानुं अने तेमनी रिद्धिनुं निकंदन करवाथी शो न थाय. हे पिताजी! तमे महा बुद्धिवान छतां मारा पुत्र मंयना मोहमां मुंजाई केनुं अमूल्य कीधुं. जे राजाए पोताना घरवानो जुवान अश्व पुत्रा-दिकमां पण हुशे राखी अमूल्य शापण मापक सपने योग्य धारीने गारवा आप्यो तेनेज हण्यो. शुं दुनियामां बीजो जुवान घोडो न मळत? एक रंकडी औषधनी इच्छा करीने मने पापीने शा माटे बचाव्यो? अरे स्वार्थी के मोहमां मुंझायलो भविष्यनो विचार भूली जाय छे. मारा वर्षे करनार क्यांथी सुखी थाय? ना ना, पण मारा पिताना मनमां एवो विचार पण क्यांथी आवे के आवो हृष्टपुष्ट अश्व घोडुं घोडी नीकळवाथी मरी जशे? अने दूर आवो उत्तम अश्व लेवा जतां विलंब थतां बच्चे पुत्रनो नाश थई जशे तो हुं रखडी मरीश. अहाहा! हे पिता! तमारो मारा उपर बेटलो घणो प्यार? हुं तमारे माटे शुं करूं? राजा पण केवो दुष्ट? जे मंत्रीए रात्रदिवस राजानी सेवा खरी निष्कपटपणाथी बजावी तेवा राज्यना स्थंभ समान मंत्रीने एकाद छिद्रशोधक शत्रुना कहेवाथी क्रोधमां आवी एक जुवान घोडा माटे मंत्रीने तथा मंत्रीना आखा कुटुंबने पायमाल करी नांख्युं. अरेरे क्रोधी माणस पण आगळ पाछळ कशुं देखतो नथी! मारा पिता जा-णता हशे के पुत्रने नवडावता जेटलुं लोही नीकळशे के गमे तेम करी ते घोडानी नाडी बंध करी लोही वहेतुं अटकावी दईश अने तेने योग्य दवा करी पाछुं खवरावी पीवरावी पुष्ट करी दईश अने त्यां सुधी मारा घरनी छुपी वात बीजो कोण जाणनार छे!

जे नस कपाई ते कपाई, उपाय सघळा व्यर्थ विचारो घोडो पण लोही पथारा पंच नीसरी जवाथी निस्तेज चहेरे तरफडीने थोडा काळमां मुओ. छिद्र शोधक पाडोशीए पोतानुं वेर लीधुं, राजाने जेम तेम समजाव्युं अने राजाए पण कांईपण जोया विना घर बार लुंटावी लीधुं, आखा कुटुंबने मुवा हाडे मार्युं, छतां पण जेना माटे आ सघळुं

निकंदन थयुं ते पापी हजु दुनियामां जीवतो रह्यो छे! रे चेतन! हवे शुं करुं? क्यां जाउं? मारे कोनो आश्रय लेवो? राजा जाणशे तो प्राण लीधा विना रहेनार नथी, तेम हुं नाठेलो होवाथी रीबी रीबीने मारशे, माटे चालु हुं अहींथी बीजे शहर. कोई पण प्रभुनो लाल मळी जशे एम कही आगळ चालतां तेने कोई दयालु दीलना शेठे जोयो तेणे पण तेने पिता माफक गणी पोतानी सघळी दुर्दशानी हकीकत कही बतावी. शेठे पण वधारे धांधल न करतां छूपी रीते ते पुत्रनी माफक घरमां राखी लीधो; तो पण ते मंत्री पुत्र राजाथी डरीने बील-कुल बहार नीकळवा हिंमत करतो नहोतो. एक वखत तेना पुण्य योगे धर्मरथना धोरी बळद समान तथा दुर्गतिमां पडता जीवने अट-कायवामां वारणाना कमाड समान पापथी निर्मुक्त अने तपश्चर्यामां रक्त एवा बे मुनिराजो तेना घरमां आहार लेवा माटे आव्या. तेओए तेने उदास जोई कयुं के हे वत्स! तुं उदास केम रहे छे? त्यारे पछी तेणे पोतानुं सघळुं दुःख रोते रोते जणाव्युं, करुणाथी भींजायला मुनिराजोए पण कयुं के, आ भवारण्यमां भटकनाराने झांझवाना पाणी-ना देखाव समान जरा पण साचुं सुख नथी, माटे हे वत्स! तेवा आ-पातरम्य इंद्रियोना सुखोमां ललचावा करतां तारा किंचित् सुखना माटे आ लोकमां पण तारा कुटुंबे केटलुं दुःख वेठयुं छे? ते हृदयमां विचारीने भवोभव वैरनी संतति वधारनारुं जे विषय सुख छे तेने परिणामे दुःख आपनारुं मानीने तेनाथी निवृत थई साचुं सुख आप-नार एवा धर्मने अंगीकार कर अने ते धर्म वीतराग प्रभुए साधु अने गृहस्थने यथायोग्य सर्व वीरति अने अने देश वीरतिना भेदोथी वर्णव्यो छे, तेमां साधुने सर्वे जीवोने अभयदान आपवा माटे छकायनी हिंसानो त्याग, असत्य वचन, पर द्रव्य, स्त्री अने परि-ग्रहनो त्याग ए पंच महाव्रत पाळवानुं छे ते सर्व वीरति कहेवाय छे. तेवी शक्ति न होय तो, गृहस्थने योग्य त्रस जीवनी हिंसानो त्याग, बीजाने नुकसान थाय तेवा जुठनो त्याग, चोरीनो त्याग एटले जेथी केदमां जवुं पडे तथा लोकमां आबरु जाय तेवी चोरी न करवी, परस्त्रीनो

त्याग, स्वपरणेली स्त्रीमां संतोष अने द्रव्य विगेरेनुं परिमाण करवुं. मारुनी महावतो श्रेष्ठ छतां पण ते युवकने तेवी शक्ति न होवाथी गृहस्थनां व्रत अंगीकार कर्यां. मुनिराजो पण योग्यने योग्य व्रत आपी आनंद पामीने विहार करी गया. आ युवके सारी रीते व्रत पाळी अंनकाळे व्रतना अतिचार आलोचीने मद्रक परिणामथी मनुष्य आयु बांधेलुं होवाथी मरीने हरिषेण राजानो पुत्र थयो. हे अगडदत्त ! युवक रूपे गृहस्थनां व्रत पाळी श्रीषेणना पुत्र थयो ते हुंज हाल आ राज्य भोगवुं छुं. थोडा काळ पहेलां ज्यारे हुं गोखमां बेठलो त्यारे बे मुनिराजोने शहेरमां वीचरता जोईने मने थयुं विचार करतां करतां जाति स्मरण ज्ञान थवाथी पूर्वभव देखवा लाग्यो तेथी हुं मारा पूर्व पितानी स्थिति विचारी ते सर्वे कळामां धर्म कळानेज मुख्य गणुं छुं. वळी माणसने तो महेनत करीने कळा शीखवी पडे छे पण क्षुद्र जंतु जे करोळीयो छे तेनामां घर बांधवानी कळा छे, सुग्रीमाळो बांधवामां निपुण छे, हंस गतिमां अने पोपट मधुर बोलवामां चतुर छे, जळतरण कळा माछलीमां छे हुडलडवानी कळामां गधेडुं तथा कुकडो वखत जाणवामां अने मोरमां नाचवानी कळा छे तेम गावामां कोयल छे. आवी रीते पशु पक्षीमां पण केळवणी लीधा विना कळाओ देखाय छे तो मनुष्ये श्रम मेळवीने कळा मेळवी होय तो तेथी शुं विशेष छे ? पण ते कळाओथी परमार्थ साधन तेमणे करेलुं देखातुं नथी, तेथी माथा विनाना धड माफक धर्मकळा विना बाकीनी सघळी कळाओ शुन्यरुप छे. आ प्रमाणे राजाए पोतानो अनुभव कही देखाडवाथी तथा पोतानी कळाओ जे महा महेनते पोते शीखेलो तेनी कदर नहीं थाय तेनुं नहावाथी अगडदत्त घणी चिंता पामीने दुःखना सागरमां डुबवा लाग्यो हतो तेवामां तेना पुण्योदयथी एक आश्चर्य कारक बनाव बनी गयो के जेमां तेनी कळानी कींमत राजाने तथा प्रजाने पण जणाई आवी तेथी तेने मान तथा अपूर्व धननी प्राप्ति थई गई.

---

# प्रकरण ३२ मुं.

## अगडदत्तनुं चालु वृत्तांत.

ज्यारे श्रीमंतो अनेक कष्ट सहन करीने घरनो पैसा रोकीने घणी मेहनते द्रव्य पेदा करे छे त्यारे तेमना धनना विनाशमे मालिक थवा चोरोने पसंद पडे छे पण ते धन जाहेर रीते के दिवसे लेवुं अशक्य होवाथी केटलाक लूटाराओ के तेना साग्रीतो (मळतीआ) धोळे दिवसे बजारमां शाहुकारना वेशे फरीने श्रीमंतोनुं धन क्यां रहे छे, तेना घरमां केटला माणसो छे, राज्यनो बंदोबस्त केवो छे, अमलदार लांचीया छे के नहि इत्यादि सघळुं दिवसे जाते देखीने के सोबती पासे सांभळीने रात्रे चोरी करे छे; ते चोरटा ज्यारे चोरी करता होय त्यारे ते धनना मालिको तथा तेना राखेला के सरकारी रक्षको निद्रामां झोकां खाता होय छे तेम ते चोरटाओ जुदी जुदी जग्याए चोरी करता रहेवाथी तथा वेश बदलीने दिवसे फरनार होवाथी ज्यां विशेष बंदोबस्त होय त्यां न जतां बीजे स्थळे चोरी करे छे अथवा विलंब करी जाय छे तेथी लोको निर्भय थाय के पाछा धाड पाडे छे तेथी करीने श्रीमंतोने तेवा चोरोथी घणुं दुःख सहन करवुं पडे छे अने जो राजा तेवाओथी रक्षण करवा समर्थ होय तो ते विज्ञप्ति करे छे नहि तो बीजा राज्यमां रहेवा जाय छे.

जे वखते अगडदत्त अने राजानी वातचीत चालती हती त्यारे राजा धर्मकळाने मुख्य गणतो हतो अने अगडदत्तमां ते कळा न होवाथी नाराज थता हता, तेवामां ते शहेरना मोटा मोटा नामांकित शेठीआओ मोटुं भेटणुं लावीने राजाने बहु नम्रताथी प्रार्थना करवा लाग्या हता के, हे प्रभो ! तमारा जेवो अमारे माथे प्रबळ नाथ छतां अमने अनाथ गणीने चोरो अमारुं धन चोरी जईने विना ईच्छाए

मनुष्यो शोधवा लाग्यो. पण आ, हा मेनुं पुत्र माता पासेथी कोईनुं केवी तेना मनमां विचार करवा लाग्यो. हे धनद ! हिमत ना हारे शाने छे ? पुत्र सदा मदद नहीं करशे ? अवसरनो आ मारे उपयोग न करवो ? मदार पण अर्थानुं तपासे छे, धोरणी कला चोरना आणी. आ बरोबर प्रमाणे तेनुं दिवस तेणे विचार्युं के आजे मानवी दिवस छे, दिवस तो मान्यो गयो छे, एक रात्रिमां बधुं कार्य करवानुं छे, आ चार बे पहोर वात ! एम करी तेणे पण वेश बदल्यो हतो. संध्याकाळे चोर थवा माटे जे रस्ते लोक हतो त्यां एक आंबाना झाड नीचे पड रहेला मनमां उदास थईने पृथ्वीमां कोई धारी बेठो हतो. तेवामां जरा अगवाडुं रहेवाथी थोडे दूर एक विविध वेष धारेलो मदनो पूर धारतो परिव्राजक आवतो जोयो. आ परिव्राजकनी वेषा पोळा मनुष्यनी माळाने पवरचाने काळ धारती हती. तेनो काटो ईट जयपूरना दंडमे धीरतावे तेवो हतो. चोरविद्याने जणवा माटेज आणे दाट धारण करावनो हतो, तेना भयंकर वेषथी कायो-दोषी तो स्थान करना धारणे पाणी थाय तेम हतुं, पण आ तो तेना जेवा परजनोने पूरो पडे तेवो होवाथी तानी स्थिर करीने तेनी चेष्टा जोवा माटेज तथा धन चोरेलुं लेवा माटेज बेठो हतो. पाछो तेना स्मरण उपर-थी ते अगडदत्त तेने चोर तरीके ओळखी लईने गुपचुप बेसी रह्यो हतो.

जरा अंधारुं थवाथी आजुबाजु नजीकमां कोईने न जोवाथी दोवानी उपाधि आंबाना झाडे लटकावी, जेवो ते चोर नजीक आवे छे तेवांज तेणे वचमां आ छोकराने बेठेलो जोयो, अने तेना उपर दया लावी कहेवा लाग्यो, रे वत्स ! तुं आम उदास थई केम बेठो छे ? तारो देखाव दरिद्रताने प्रकट करे छे, ईमाने माटे कया कया देशोमां तें भ्रमण कर्युं छे ? तारुं आजे दारिद्र दूर थयेलुं समजी ले, विश्वास राखीने सत्य होय ते वदी दे. अगडदत्ते पण तेने पगे लागीने कह्युं, हे प्रभो ! हुं उज्जयिनीनो रहेवासी अने बाळपणथीज वडीलोथी अनाथ बनेलो छुं अने लक्ष्मीनो तो स्वप्ने पण समागम मने

हृदयनो पित्तो उछळी आव्यो अने एकदम उभो थई राजाने नम-स्कार करीने केहेवा लाग्यो. हे प्रभो! आ रंकोने मुकी दो हुं तेमना बदले तैयार थयो छुं अने सर्व सभासदोनी समक्ष प्रतिज्ञा करुं छुं के सात दिवसनी अंदर ते चोरोने माल सहीत पकडी आपीश. राजाए पण तेनी चातुर्यता जोवा माटे अने पोतानी प्रजानुं दुःख दूर करवा माटे उत्कंठित थयेलो होवाथी तथा पोताना सुभटोथी ते कार्य थवुं दुष्कर होवाथी तुरत तेने रजा आपी. उल्लासमां आवेलो अगडदत्त पोताना अध्यापकनो आशीर्वाद लई पोतानुं तेज प्रकाशवा माटे जेम पूर्व दिशामां प्रकट थाय तेम ते प्रकट थई ज्यां ज्यां चोरोने रहेवानां स्थानो होय ते शोधवा मांड्यां. तेवा स्थानकोमांथी पत्तो न लागवाथी साधु, संन्यासी, वैरागी, बावा, अतीत, गोसाई विगेरे वेषधारीओनी संगत करी तेमना उपासक थई तेमनां लक्षण तपासी चोर पकडवा माटे अनेक प्रकारना उपाय दिवस तथा रात्रे करवा मांड्या हता. सुखशांतिने उंचां मुक्यां हतां.

छ दिवस अने रात्र निद्राने तथा आरामने उंचां मुकी चोरने पकडवानी पेरवीमां भटक्या छतां पण चोरनो पत्तो लाग्यो नहोतो. जाणे के आकाशमांथी आवी अदृश्य रही चोरी करी लोकोने संता-पी भागी जनार न होय! आवा चोरने पकडवा कोण समर्थ थाय, अने जो ते चोर नहि पकडाय तो मारी प्रतिज्ञा भंग थशे, अने प्रतिज्ञा भंग थया पछी मारे मोढुं कोने बताववुं, मारी कळाओ शुं काम लागशे, कदाच आपघात करुं तो पछी मातापिताने कोनो आशरो! अरेरे, मोढामांथी जो मेवी प्रतिज्ञा न करी होत तो शुं बगडी जवानुं हतुं, हवे छछुंदर गळ्या जेवुं थयुं. न तो मराय न तो मोढुं देखाडाय; त्यारे हवे शुं करुं? हे प्रभो! मारी लज्जा कोण राखशे? दिवस तो आंख मी-चतां ने उघाडतां क्षणवारमां वीती जाय छे, कांई सूझतुं थतुं नथी? चोरनो पत्तो नथी, नाम नथी, ठाम नथी. कोने पूछुं, पण विचार

मनुष्यनी शोधमां रवाना थयो. पण आ, हतुं तेनुं पुण्य माडु थयुं मारुं तेथी तेना मनमां विचार थवा लाग्या. हे देव ! शिव आ मारे हाथ शुं ? पुण्य पण मदद नथी करतुं ? अहनिश आ मारे उपयोग न करवो ? अतीव पण लक्ष्मीनुं नाम पण छे, तेमनी सघळा चोरने आणे. आ प्रकार प्रमाणे केटलेक दिवसो तेणे विचार्युं के आजे सातमो दिवस छे, दिवस तो चाल्यो गयो छे, एक रात्रि मात्र बाकी रहेवानुं छे, आ हाय हे. देव हाय ! एम कहीं तेणे पण वेश बदल्यो हतो. संध्याकाळे शहेर बहार थोडे दूर ज्यां शीय हती त्यां एक आंबाना झाड नीचे एक शंकराना मंदिरमां उदास थईने पृथ्वीमां माथुं घालीने बेठो हतो. तेवामां जरा अगाडीनुं शहेरथी थोडे दूर एक विचित्र वेष धारेलो यवनो दूत करतो परिव्राजक आवतो जोयो. आ परिव्राजकनी कंथा भोळा मनुष्यनी मायामां पकडवाने जाळ सरखी हती. तेनो जाडो दंड कपटरूपना दंडने शोभावे तेवो हतो. चोरविद्याने अथवा नाटक जाणे होट पकडावतो हतो, तेना भयंकर वेषथी बाळोचोषो तो त्यांज जपना मरणो पहोंचो थाय तेम हतुं, पण आ तो तेना जेवा लुच्चाओने पुरो पडे तेवो होवाथी धार्थो स्थिर करीने तेनी चेष्टा जोवा माटेज तथा धन चोरवुं लेवा माटेज बेठो हतो. धार्थो तेना लक्षण उपरथीज ते अगडदत्त तेने चोर धारीने आळसथी एने गुपचुप बेसी रह्यो हतो.

जरा अंधारुं थवाथी आजुबाजु नजीकमां कोईने न जोवाथी पोतानी उपाधि आंबाना झाडे लटकावी, जेवो ते चोर नजीक आवे छे तेवांज तेणे वचमां आ शंकराने बेठेलो जोयो, अने तेना उपर दया लावी कहेवा लाग्यो, हे वत्स ! तुं आम उदास थई केम बेठो छे ? तारो देखाव दरिद्रताने प्रगट करे छे, पैसाने माटे कया कया देशोमां तें भ्रमण कर्युं छे ? तारुं आजे दारिद्र दूर थयेलुं समजी ले, विश्वास राखीने सत्य होय ते कही दे. अगडदत्ते पण तेने पगे लागीने कह्युं, हे प्रभो ! हुं उज्जयिनीनो रहेवासी अने बाळपणमांथीज वडीलोथी तमाम अनाथ बनेलो छुं अने लक्ष्मीनो स्वप्न पण समागम मने थयो

मरती वखते पण तेने मराववोज हतो. त्यारे अगडदत्तने तो तेनी संपदा ग्रहण करी राजानी समक्ष जेनी तेने अर्पण करी यश मेळववो हतो. तेणे सावचेत रही रस्तो जोई जोईने चालतां अंधारे पण निशानीवाळुं घर शोधी काढीने हांक मारी के चोरनी बेन चतुरा चोरटीए तुर्तज घरनो दरवाजो उघाड्यो. ज्यारे तेनुं रुप जोयुं त्यारे आ अगडदत्त युवक होवाथी मोहदशाथी पोतानी क्षणवार अवस्थाने भूली तेना रुपनी प्रशंसा करवा लाग्यो के, आ शुं कोई मानुषी छे, के पृथ्वी भेदीने मने भ्रमित करवा नागकन्या आवी छे? जेवुं तेनुं रुप तेवांज तेनां स्नेहयुक्त मधुर वचन सांभळीने अगडदत्त पाणी पाणी थईने तेनी साथे निर्भयपणे भोंयरामां गयो अने अंदर जईने भाईनी वात पुछतां तेणे यथायोग्य समाचार कहेतां ते कन्यानुं हृदय भेदाई गयुं, पण ते चतुर होवाथी तेने पोतानो शोक जणाव्या विना आवा उत्तम पतिथी मारो संबंध थयो. एम पोताने तथा पतिने मर्शसती तेने बेसवा आसन आप्युं. पछी निर्मळ पाणीथी तेना पग धोई साफ करी तेने त्यां बेसाडी घरना एक खुणामां मनोहर पलंग बीछावी कहेवा लागी हे नाथ! मारो भाई तेना दुष्ट कृत्योथी मरण पाम्यो छे तेमां तमारो जराए दोष नथी अने आजथी आ लक्ष्मी तथा हुं पोते–सघळुं तमारे स्वाधीन छे माटे यथारुचि जेम योग्य लागे तेम तेनो उपभोग करो. पण हे स्वामिन्! तमारां नेत्रो घेरायलां होवाथी तमने निद्रानी जरुर छे, आपणी वातो तो पछी पण थशे माटे रात्रिनो थाक दूर करवा जरा विश्रांति लो! तमारे माटे आ शय्या तैयार करी छे. एम कहेवाथी ते सुतो त्यारे ते स्त्री, पतिना थाकने विश्रांति आपवा माटे कांईक विलेपन लाववानुं ब्हानुं करी जरा नीचे उतरी के चोरनी चतुराईने जाणनार अगडदत्ते विचार्युं के सापनी भगिनी सापणमां निर्विषता क्यांथी होय! वळी शत्रुना घरमां सुवुं पण निर्भय क्यांथीज होय! एम विचारी शय्याने शूळी समान गणी उठी दूर जईने उभो रह्यो अने थोडीवारमां मोटो धडाको थयो. शय्या उपर ओचींती

दीला नावीने प्राण्यानो पूरेपूरो करी नाख्यो. पछी पोतानी निपुणता बतावती ते स्त्री ताली पाडती उपर आवी ने बोलवा लागी के मारा बंधुनो घात करनार क्यांथी छूटो छुटे शके? त्यारे आम बोलीने ते आम तेम नाचवा कुदवा लागी त्यारे एकदम अगडदत्ते उछळीने तेनो चोटलो पकडी धमकाववा मांडी के, रे! गापना मुखवाळी वापण! विचारती नथी के जगतनुं रक्षण करवाने हुं समर्थ छुं तो मारुं केम रक्षण नहि करी शकुं? ज्यारे स्त्रीए पोताना मस्तक उपर वीजळीना चळकारा देखाडती तलवार जोई त्यारे तेणे पोतानुं आवी बनेलुं धार्युं अने पगे लागीने काकलावाढा करती कहेवा लागी हे देव! तमेज मारे शरण करवा योग्य छो. स्त्रीने मारवी ए निंदनीक तथा ते शरणे आवेली ने मारवानुं कंई पण प्रयोजन न होवाथी पोतानी घात चिंतवनारीने पण अबळा जाणी दया आणी क्षमा धारीने मुकी दीधी. सवारमां तेणे स्त्रीसहित राज्यसभामां जई सघळो वृत्तांत कही बताव्यो. राजा पण आश्चर्य पामी पोतानी प्रजाने तेनाथी रक्षण मळेलुं जाणी वारंवार तेनी स्तुति करवा लाग्यो त्यारे पोतानी वधारे प्रशंसाथी नीचुं जोता अगडदत्ते ते स्त्रीने भगिनी गणीने मुकी दइ ते चोरनुं घर जोवा माटे राजाने लई आव्यो. राजाना भंडारथी पण अधिक रत्नोनो तथा अमुल्य वस्तुओनो हारबंध ढगलो करेलो जोई राजा कहेवा लाग्यो के, आ निर्भागी चोरे पोतानी बुद्धिनो गेरउपयोग करी लोकोने त्रास पमाडी पोते दुःख वेठीने नाहक आटलुं धन अहीं भेगुं करी मुक्युं छे. जेमांनी केटलीक वस्तुने तो स्पर्श पण कर्यो नहोतो. राजाए मालधणीओने बोलावी सौ सौनो माल ओळखीने लई जवा सुचना करवाथी हजारो माणसोनो त्यां जमाव थइ गयो. जेनो माल मळ्यो तेओए तथा राजाए वारंवार सेवेलो तथा नाणांथी पूजाएलो एक मोटा गृहस्थ परोणानी माफक राजाने त्यां उत्सवमां दिवस गुजारतो हतो, पण ते सुखना वखतमां माताने तथा श्यामदत्तानी साथे प्रेम बंधायलो हतो तेने पण वीसरी गयो हतो. पति तरीके मानती ते तरुणी पोताने सुखना दिवसो

आववानी राह पाणीनी माफक जोती हती तेवामां तेनी प्रशंसा सौने गाता जोइ तेने वधारे आनंद थयो अने पोतानुं पण नसीब उघड्युं तेवो तेने भास थयो हतो; पण ज्यारे ते पतिए उत्सवमांज दिवस गुजारीने तेणीने समुळगी विसारी मुकी त्यारे तेणे पोतानी सखीने पोताना समाचार जणाववा मोकली. ज्यारे अगडदत्त एक वखत एकांतमां बेठो हतो त्यारे ते सखीए आवीने कह्युं के, जेणे आंसु वरसाववा वडे सघळां सुखने जळांजलि आपी छे, पतिना वियोगे तथा तेनी उपेक्षाथी उपेक्षित थती श्यामदत्ता श्याम मुखवाळी नहि छतां श्याम मुखवाळी देखावा लागी छे. निरंतर वियोगथी बळेली, शोणितथी रहित थई दुकाळना झाडो माफक सुकाई गई छे. तेणे पतिना प्रेमना अभावे पान खावुं तज्युं छे. शणगार सजवा विसार्या छे, अन्नने पण अरुचिपणे खावा मांड्युं छे अने शय्या आसन विगेरे घरनो सघळो सामान तो तेने शत्रु समान थई पड्यो छे.

आ प्रमाणे वियोगदशाथी विपरीतदशाने पामेली मारी सखीने तारी अर्धांगना करी तारा स्पर्शनी शीतळतावडे तेना विरहानळने शांत कर. वळी अंतमां तेणे कह्युं छे के हे नाथ ! तमे छते राजाए अनाथ थयेला नगरने चोरना उपद्रव टाळी सनाथ बनाव्युं छे त्यारे आ एक तमारी शरणे आवेली विरहवाने आ माटे चरणनी सेवामां दासी तरीके स्वीकारवामां विलंब करो छो ? अगडदत्त सुजान अने स्त्रीओना स्वास्वादथी अजाण्यो न होवाथी सखीने कह्युं के हे सुभगे! आवुं तुं शा माटे वचन बोले छे ? तेने तो में मारा अंतःकरणथी क्यारनीए स्वीकारी लीधी छे. तेने अर्धांगना करवाने बदले मारे आखुं शरीर सोंपी दीधुं छे. तेने तेम मुक्तावळनी माफक सोमे तेम मे हृदयमां स्थापना करी राखेली छे. माटे हे शाणि ! तुं शीघ्रता, तेने कहे के तैयार थइने प्रातःकाळे रमणा बगीचाने उद्यानना दरवाजे आवी उभी रहे. हुं पण तैयार थइने सवारमां स्थान मुकी आवीश. ते सखी पण हर्षित गई. बंने जणां प्रातःकाळे भेगां थयां पछी मनहर

महि तेनां ते प्रमाणे लग्न थयां विनाज अगडदत्ते तेने अर्धांगना तरीके स्वीकारी लीधी.

एक शेठनी नाजुक पुत्री, जेनो पति हतो के नहि, के लग्न थयुं हतुं के नहि, के तेनां मातपिता आ वात जाणतां हतां के नहि, तेम आ लग्न शास्त्ररीते थयुं के नहि तेनो कशो पण विचार कर्या विना युवतीना मदमां कळाकौशल्यमां निपुण एवा अगडदत्ते हर्षी रंगित थईने जोके तेणे आगळ पाछळनो कशो विचार नहि करतां स्वीकारी लीधी हती छतां पण छूपी रीते लई जाय तो पोताना वीरत्वने खोटो पडवाथी नींदने तो मेळवेली आवरु जती रहेशे, एवा डरथीज हर्षीने तेणे प्रगट थवा तथा पोताने त्यागनी पवने दूर करवा मोटा अवाजथी सर्वे लोको सांभळे तेम दरवाजे उभा रहीने बूम पाडी के हे गर्ववंत तेजस्वी चित्तवाळा राज्य तथा राज्यनी प्रजाना रक्षको चित्त दईने सांभळो "हुं अगडदत्त सूर्य, सोम, यमकाळ, देवो विगेरेनी साक्षीथी श्यामदत्ता नामनी शेठनी पुत्रीने जबरजस्तीथी लई जाउं छुं, माटे जेनी भुजामां बळ होय ते बतावया अथवा नवो जन्म लई नवी मातानुं दूध पीवा इच्छता होय ते सामे आवी पोतानुं शौर्य प्रगट करी ते सुंधाने लई जतां अटकावो."

जेणे महान चोरने मारी पोतानुं सत्व साक्षात बनाव्युं हतुं अने जेना लीधे पोताना मोटां स्थान थता अटक्या हतां, जेणे प्रजानुं गयेलुं धन पैसे पैसो पाछुं मेळवी आप्युं हतुं अने राजा प्रजाथी एक सरखुं मान पामेलो तेवा निस्पृही अने वीरत्व धरावनार पुरुष सामे जई नाहक शा माटे मरवुं ? एम धारी सर्वेए तेनी उपेक्षा करी हती, तेम हजारो सुभटोथी पण जे न रोकायो अने राजा ज अग्रपद आपे छे तेवा वीर पुरुष साथे ते युवती गई छे एम तेना मावापे जाणवा छतां पण तेनी संभाळ न लीधी होय के बीजा कोई पण कारणे तेने

अट:

आववानी राह पाणीनी माफक जोती हती तेवामां तेनी प्रशंसा सौने गाता जोइ तेने वधारे आनंद थयो अने पोतानुं पण नशीब उघड्युं तेवो तेने भास थयो हतो; पण ज्यारे ते पतिए वत्सवमांज दिवस गुजारीने तेणीने समुळगी विसारी मुकी त्यारे तेणे पोतानी सखीने पोताना समाचार जणाववा मोकली. ज्यारे अगडदत्त एक वखत एकांतमां बेठो हतो त्यारे ते सखीए आवीने कह्युं के, जेणे आंसु वरसाववा वडे सघळां सुखने जलांजलि आपी छे, पतिना वियोगे तथा तेनी उपेक्षाथी उपेक्षित थती श्यामदत्ता श्याम मुखवाळी नहि छतां श्याम मुखवाळी देखावा लागी छे, निरंतर वियोगथी बळेली, शोणितथी रहित थई दुकाळना झाडो माफक सुकाई गई छे. जेणे पतिना प्रेमना अभावे पान खावुं तज्युं छे, शणगार सजवा विसार्या छे, अन्नने पण अरुचिपणे खावा मांड्युं छे अने शय्या आसन विगेरे घरनो सघळो सामान तो तेने शत्रु समान थई पडयो छे.

आ प्रमाणे वियोगदशाथी विपरीतपणाने पामेली मारी सखीने तारी अर्धांगना करी तारा स्पर्शनी शीतलतावडे तेना विरहानळने शांत कर. वळी अंतमां तेणे कह्युं छे के हे नाथ ! तमे छते राजाए अनाथ बनेला नगरने चोरनो उपद्रव टाळी सनाथ बनाव्युं छे त्यारे आ एक तमारी शरणे आवेली प्रियतमाने शा माटे चरणनी सेवामां दासी तरीके स्वीकारवामां विलंब करो छो ? अगडदत्त युवान अने रसीलीना रसास्वादथी अजाण्यो न होवाथी सखीने कह्युं के रे मुग्धे! आवुं तुं शा माटे वचन बोले छे ? तेने तो में मारा अंतःकरणमां क्यारनीए स्वीकारी लीधी छे, तेने अर्धांगना करवाने बदले मारुं आखुं शरीरज सोंपी दीधुं छे, कंठे जेम मुक्ताफळनी माळा शोभे तेम ते हृदयमां रमणता करी रहेली छे. माटे हे सखि ! तुं शीघ्रता, तेने कहे के तैयार थइने प्रातःकाळे रथमां बेसीने उज्जयिनीना दरवाजे आवी उभी रहे. हुं पण तैयार थएलो सवारमां त्यांज मळी अईश. ते सखी पण हर्षभेर गई. बंने जणां प्रातःकाळे भेगां थतां पति प्रेमदा

नहि हतां ते प्रमाणे लग्न कर्या विनाज अगडदत्ते तेने अर्धांगना तरीके स्वीकारी लीधी.

एक शेठनी नाजुक पुत्री, जेनो पति हतो के नहि, के लग्न थवुं थयुं के नहि, के तेनां मातपिता आ वात जाणतां हतां के नहि, तेम आ लग्न कायदाने थयुं के नहि तेनो कशो पण विचार कर्या विना युवानीना मदमां कळाकौशल्यमां निपुण एवा अगडदत्ते रूपथी रंगित थईने जोके तेणे आगळ पाछळनो कशो विचार नहि करतां स्वीकारी लीधी हती छतां पण छूपी रीते लई जाय तो पोताना वीरत्वने शोभे पछवाडेथी नींदाशे तो मेळवेली आबरु जती रहेशे, एवा दरवाज हरीने तेणे प्रगट थवा तथा पोताने लागती एबने दूर करवा मोटा अवाजथी सर्वे लोको सांभळे तेम दरवाजे उभा रहीने बूम पाडी के हे गर्ववंत तेजस्वी चित्तवाळा राज्य तथा राज्यनी प्रजाना रक्षको चित्त दईने सांभळो "हुं अगडदत्त सूर्य, सोम, यमकाळ, देवो विगेरेनी साक्षीथी श्यामदत्ता नामनी शेठनी पुत्रीने जबरजस्तीथी लई जाउं छुं. माटे जेनी भुजामां बळ होय ते बतावया अथवा नवो जन्म लई नवी मातानुं दुध पीवा इच्छता होय ते सामे आवी पोतानुं शौर्य प्रगट करी ते मुग्धाने सुख जतां अटकावो."

जेणे महान चोरने मारी पोतानुं सत्व साक्षात बताव्युं हतुं अने जेना लीधे पोतानां मोटां श्याम थतां अटक्यां हतां, जेणे प्रजानुं गयेलुं धन पेप पे पाछुं मेळवी आप्युं हतुं अने राजा प्रजाथी एक सरखुं मान पामेलो तेवा निस्पृही अने वीरत्व धरावनार पुरुष सामे जई नाहक शा माटे मरवुं? एम धारी सर्वेए तेनी उपेक्षा करी हती, तेम हजारो सुभटोथी पण जे न रोकायो अने राजा ज अग्रपद आपे छे तेवा वीर पुरुष साथे ते युवती गई छे एम तेना मावापे जाणवा छतां पण तेनी संभाळ न लीधी होय के बीजा कोई पण कारणे तेने अटकाव न थवाथी पोताना पवनवेगी घोडाने एकदम दोडावी मूक्या.

आववानी राह पाणीनी माफक जोती हती तेवामां तेनी प्रशंसा सौने गाता जोइ तेने वधारे आनंद थयो अने पोतानुं पण नसीब उघड्युं तेवो तेने भास थयो हतो; पण ज्यारे ते पतिए उत्सवमांज दिवस गुजारीने तेणीने समुळगी विसारी मुकी त्यारे तेणे पोतानी सखीने पोताना समाचार जणाववा मोकली. ज्यारे अगडदत्त एक वखत एकांतमां बेठो हतो त्यारे ते सखीए आवीने कह्युं के, जेणे आंसु वरसाववा वडे सघळां सुखने जलांजलि आपी छे, पतिना वियोगे तथा तेनी उपेक्षाथी उपेक्षित थती श्यामदृत्ता श्याम मुखवाळी नहि छतां श्याम मुखवाळी देखावा लागी छे, निरंतर वियोगथी बळेली, शोणितथी रहित थइ दुकाळना झाडो माफक सुकाई गई छे. जेणे पतिना प्रेमना अभावे पान खावुं तज्युं छे, शणगार सजवा विसार्या छे, अन्नने पण अरुचिपणे खावा मांड्युं छे अने शय्या आसन विगेरे घरनो सघळो सामान तो तेने शत्रु समान थई पड्यो छे.

आ प्रमाणे वियोगदशाथी विपरीतपणाने पामेली मारी सखीने तारी अर्धांगना करी तारा स्पर्शनी शीतळतावडे तेना विरहानळने शांत कर. वळी अंतमां तेणे कयुं छे के हे नाथ ! तमे छते राजाए अनाथ थनेला नगरने चोरनो उपद्रव टाळी सनाथ बनाव्युं छे त्यारे आ एक तमारी शरणे आवेली प्रियतमाने शा माटे चरणनी सेवामां दासी तरीके स्वीकारवामां विलंब करो छो ? अगडदत्त युवान अने रसीलीना रसास्वादथी अजाण्यो न होवाथी सखीने कह्युं के रे मुग्धे! आवुं तुं शा माटे वचन बोले छे ? तेने तो में मारा अंतःकरणमां क्यारनीए स्वीकारी लीधी छे, तेने अर्धांगना करवाने बदले मारुं आखुं शरीरज सोंपी दीधुं छे, कंठे जेम मुक्ताफळनी माळा शोभे तेम ते हृदयमां रमणता करी रहेली छे. माटे हे शाणि ! तुं शीघ्रजा, तेने कहे के तैयार थइने प्रातःकाळे रथमां बेसीने उज्जयिनीना दरवाजे आवी उभी रहे. हुं पण तैयार थएलो सवारमां त्यांज मळी जइश. ते सखी पण हर्षभेर गई. बंने जणां प्रातःकाळे भेगां थतां पति प्रेमदा

नहि हतो के गढाथी छूट कर्यां विनाज अगडदत्ते तेने आणीगना सरीखो
र्होंक्यो कीधो.

एक दिवसे नाजुक पुरी, जेनां दांत हतां के नहि, के तेम थयुं
हतुं के नहि, के जेनां मातपिता आ वात जाणतां हतां के नहि, तेम
आ एक बालकने थयुं के नहि तेनो कदी पण विचार कर्या विना
दुश्मनीना मद्यमां कलाकौशल्यमां निपुण एवा अगडदत्ते तरफथी रंगित
थईने जोईने, तेणे आगळ बालकनो कशो विचार नहि करतां रमीतारी
थोडी हती तथा पण कुरी राजा ... जाय तो पोताना वीरत्वने
शोभे ... आफत आवी रहेछे, एवा दरपीन
रहीने तेणे प्रगट थवा तथा पोताने लागती एबने दूर करवा मोटा
अवाजथी सर्वे लोकोना सांभळे तेम दरवाजे उभा रहीने बूम पाडी के
हे गर्दवरे तेजस्वी विशाळा राज्य तथा राजपनी प्रजाना रक्षको चित्त
दईने सांभळो "हुं अगडदत्त सूर्य, सोम, पवन, देवो विगेरेनी साक्षीथी
स्थापरथा माथनां तेडनी पूर्वेना अपराधोथी छूट आवुं छुं, माटे
जेनी भुजामां बळ होय ते बतावो अथवा नवो जन्म थई नवी मातानुं
दूध पीवा इच्छता होय ते सामे आवी पोतानुं शौर्य प्रगट करी ते
भुजाने छूट अजमावो."

जेणे महान चोरने मारी पोतानुं सत्त्व साक्षात् बताव्युं हतुं अने
तेना लीधे पोताना मोटा इनाम थवा अरजपा हतां, जेणे प्रजानुं गंवेलुं
धन वैर वाळी मेळवी आप्युं हतुं अने राजा प्रजाथी एक
सरखुं मान पामेलो तेवा निस्पृही अने वीरत्व धरावनार पुरुष साथे
शुं नाहक शा माटे मरवुं? एम धारी सर्वेए तेनी उपेक्षा करी हती,
तेम हजारो सुभटोथी पण जे न रोकायो अने राजा जे अप्रगट आवे
छे तेवा वीर पुरुष साथे ते युद्धनी गई छे एम तेना मामारे जाणवा
छतां पण तेनी संभाळ न लीधी होय के बीजा कोइ पण कारणे तेने
अटकाव न थवाथी पोताना पवनवेगी घोडाने एकदम दोडावी मूक्या.

जोके प्रेमनी खातर नवा पुरुषने पति तरीके श्यामदत्ताए स्वीकारी साहस कृत्य करी अगडदत्त साथे नीकळी गइ हती, छतां पण मातापि तथा भाई विगेरेनो स्नेह हृदयमांथी खस्यो नहोतो. जेमनी दृष्टि हर वखत सामे रहेती तेनाथी तद्दन जुदी पडी, एक विदेशी साथे कंइ पण कह्या विनाज नीकळी गइ तेथी आखे रस्ते उदासीमां ते गुम थइ गइ. तेनी आ सघळी चेष्टा अगडदत्तना जाणवामां आवी गइ हती पण प्रसंग विना वधारे बोलवुं काम लागे तेवुं न होवाथी अने ते बंने जणज रथमां होवाथी झपाटाबंध रथ दोडावी मुक्यो.

प्रातःकाळनी गुलाबी ठंडीमां वनमां एकांत भागमां चालता घोडाने पण एकदम उत्साह वधी गयो हतो जेथी घणो रस्तो कपायो अने पोताने, स्त्रीने तथा घोडाने योग्य खोराक आपवा विश्रांतिनी जग्या आवतां तळावना किनारे घोडा छोडी चारो नांखी पाणी पाइ थोडीवार छुटा मुक्या अने स्त्रीने वातोना विनोदमां लीन करी पूर्वनो शोक वीसरावी शांतिथी भोजन कराव्युं. वधारनो तडको गाळी पाछां स्वार थई रथने एकदम दोडाव्यो के थोडीवारमां घणे दूर आवी पहोंच्यां. ज्यां दशार्ण देशनी नजीकमां एक गामनी सीम हती, त्यां घणा माणसोनो समुदाय एकठो थएलो देखातो हतो. ते समुदायमांथी आवता बे जणाए अगडदत्तने पुछयुं के हे बंधो ! तुं कोण छे अने क्यां जाय छे ? पेहाए उज्जयिनी जवानुं नाम दीधाथी बे जणा हर्षमां आवी कहेवा लाग्या, हे वीर पुरुष ! जो तुं आज्ञा आपे तो अमारो वधो समुदाय तने नायक बनावे अने तारी पछवाडे चालीए, कारणके उज्जयिनीनो मार्ग उन्मत्त हाथी, दृष्टि विष साप, तोफानी दीपडो, अने अर्जुन चोर दुःख देनारा होवाथी बंध थइ गयो छे

